माहनामा

(हिन्दी-माहनामा)

फ़ैज़ाने मदीना

जुलाई सिने 2021 ईसवी | Trial Edition-4

FAIZAN E MADINA

- ह़क़ीक़ी कामयाबी और इस के ह़ुसूल का त़रीक़ा 04
- जज़्बाते अमीरे एहले सुन्नत 26
- फ़क़ीहे एहले सुन्नत और दावते इस्लामी 41
- औ़रत और क़ुरबानी 53

फ़क़ीहे एहले सुन्नत सरपरस्ते दावते इस्लामी (हिन्द)

मुफ़्ती अ़ब्दुल ह़लीम रज़वी अशरफ़ी

की याद में ख़ुसूसी मज़ामीन



जामेआ़ फ़ैज़ुर्रज़ा (ददरी, बिहार)

फ़रमाने अमीरे एहले सुन्नत

ऐ़ब ढूंढने के शौक़ीन "दूरबीन" के बजाए "आईने" में देखें।

माहनामा

फ़ैज़ाने मदीना

Monthly Magazine
FAIZANE MADINA (HINDI)

जुलाई सिने 2021 ईसवी | ट्रायल एडिशन-4

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

ब फ़ैज़ाने नज़र: सिराजुल उम्मह, काशिफ़ुल गुम्मह, इमामे आज़म फ़क़ीहे अफ़ख़म हज़रते सैयदना इमाम अबू हनीफ़ा नोमान बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

ब फ़ैज़ाने करम: आला हज़रत इमामे एहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

माहनामा फ़ैज़ाने मदीना धूम मचाए घर घर
या रब जा कर इश्क़े नबी के जाम पिलाए घर घर

(अज़ : अमीरे एहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ)

	कलाम / मुनाजात	3
कुरआनो हदीस	हक़ीक़ी कामयाबी और इस के हुसूल का तरीक़ा (क़िस्त :1)	4
	दीन आसान है	6
	बुज़ुर्गाने दीन और शब बेदारी (क़िस्त : 2)	8
फ़ैज़ाने अमीरे एहले सुन्नत	क्या कुरबानी भी क़ज़ा होती है ? मअ दीगर सवालात	10
दारुल इफ़्ता एहले सुन्नत	अगर जानवर के सींग निकाल दिए गए हों तो ? मअ दीगर सवालात	12
मज़ामीन	फ़रिश्ते दुआ ए मग़फ़िरत करते हैं (क़िस्त : 3)	14
	बे साया मेहबूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم	15
	बे बसी (Helplessness)	18
	नबिय्ये रेहमत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم (क़िस्त : 7)	20
बुज़ुर्गाने दीन की सीरत	हज़रते ज़हहाक बिन क़ैस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ	22
	मुफ़्ती अ़ब्दुल हलीम रज़वी अशरफ़ी की हयाते मुबारका	24
	जज़्बाते अमीरे एहले सुन्नत	26
	मुफ़्ती अ़ब्दुल हलीम रज़वी अशरफ़ी की दावते इस्लामी से महब्बत	28
मुतफ़र्रिक़	ताज़ियत व इयादत	29
	फ़क़ीहे एहले सुन्नत एक जामेए कमालात शख़्सिय्यत	30
	फ़क़ीहे एहले सुन्नत की कुछ यादें कुछ बातें	33
	फ़क़ीहे एहले सुन्नत और दावते इस्लामी	41
	मुफ़्ती अ़ब्दुल हलीम साहब के बारे में उलमा ओ मशाइख़ के तास्सुरात	43
क़ारेईन के सफ़हात	नए लिखारी	50
इस्लामी बहनों का माहनामा फ़ैज़ाने मदीना	औरत और कुरबानी	53
	हज़रते सैयदतुना हिन्द बिन्ते उत्बा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا	54
	ख़्वाजा ओ रज़ा के हिन्द की इस्लामी बहनों के नाम अ़त्तार का पैग़ाम	55



दांतों और कानों की हिफ़ाज़त का आसान अमल

मौला मुश्किल कुशा, हज़रते सैयदना अलिय्युल मुर्तज़ा, शेरे खुदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इरशाद फ़रमाते हैं : जो शख़्स छींक आने पर "اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ عَلٰی کُلِّ حَال" कहेगा उसे कभी दाढ़ और कान का दर्द न होगा। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ (مرقاۃ المفاتیح، 8/499، تحت الحدیث: 4739)

हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : जो कोई शख़्स छींक पर कहे। "اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ عَلٰی کُلِّ حَال" और अपनी ज़बान सारे दांतों पर फेर लिया करे तो اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ दांतों की बीमारियों से मेहफ़ूज़ रहेगा, मुजर्रब (यानी तजरिबा शुदा अमल) है। (مرآۃ المناجیح، 6/396 ملخصاً)



तिलावते कुरआन से मरज़ में कमी होती है

हज़रते सैयदना तल्हा बिन मुतर्रिफ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : एक मरीज़ था जब उस के पास कुरआने पाक की तिलावत की जाती तो वोह बीमारी से इफ़ाक़ा मेहसूस करता, मैं उस के ख़ैमे में गया और उस से कहा कि आज मैं तुम्हें तन्दुरुस्त देख रहा हूं ! उस ने जवाब दिया कि मेरे पास कुरआने पाक की तिलावत की गई है।

(التبیان فی آداب حملۃ القرآن للنووی، ص94)



बच्चे कीड़े मकोड़ों से मेहफ़ूज़ रहेंगे

لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ

55 बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़ के साथ) पढ़ कर ज़ैतून शरीफ़ के तेल पर दम कर के बच्चे के जिस्म पर नर्मी के साथ मल दिया जाए तो बेहद मुफ़ीद है। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ कीड़े मकोड़े और दीगर मूज़ी जानवर बच्चे से दूर रहेंगे। इस तरह का पढ़ा हुवा तेल बड़ों के जिस्मानी दर्दों में मालिश के लिए भी निहायत कार आमद है। (फ़ैज़ाने सुन्नत, 1/995)



सेहतमन्द और ज़हीन बच्चे

لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ

किसी काग़ज़ पर 55 बार लिख कर हस्बे ज़रूरत तावीज़ की तरह तेह कर के मोमजामा या प्लास्टिक कोटिंग करवा कर कपड़े या रेगज़ीन या चमड़े में सी कर हामिला औरत गले में पेहन ले या बाज़ू पर बांध ले। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ हम्ल की भी हिफ़ाज़त होगी और बच्चा भी बला ओ आफ़त से सलामत रहेगा। अगर 55 बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़ के साथ) पढ़ कर पानी पर दम कर के रख लें और पैदा होते ही बच्चे के मुंह पर लगा दें तो اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ बच्चा ज़हीन होगा और बच्चों को होने वाली बीमारियों से भी मेहफ़ूज़ रहेगा। (फ़ैज़ाने सुन्नत, 1/995)

नोट : एराब लगाने की हाजत नहीं अलबत्ता दोनों जगह "ہ" के दाइरे खुले रखिए।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط اَمَّا بَعْدُ ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : जो मुझ पर एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ता है **अल्लाह** पाक उस के लिए एक क़ीरात़ अज्र लिखता है और क़ीरात़ उहुद पहाड़ जितना है। (مصنف عبد الرزاق، 1/39، حدیث:153)





क़लाम

मुबारक हो तुम्हें एहले मदीना नाक़ए अक़्दस[1]
कि आता है नबी प्यारे का प्यारा नाक़ए अक़्दस
दो रूया दस्त बस्ता सर पए तस्लीम ख़म कर लो
अब आया, हां अब आया, लो वोह आया नाक़ए अक़्दस
रसूले पाक राकिब, सारिबां सिद्दीक़े अक्बर हैं
न हो क्यूं मर्तबा तेरा दो बाला नाक़ए अक़्दस
हर इक की येह तमन्ना थी हर इक की थी येही ख़्वाहिश
कि मेरे ही यहां हो जल्वा फ़रमा नाक़ए अक़्दस
हुवा इरशादे वाला यूं : वोही है मेज़बां अपना
कि जिस के घर पे ठेहरेगा हमारा नाक़ए अक़्दस
तबर्रुक हो अ़त़ा अय्यूब को अय्यूब अन्सारी
कि आप ही के यहां तो आ के ठेहरा नाक़ए अक़्दस

अज़ ख़लीफ़ए आला ह़ज़रत
मौलाना सैयद अय्यूब अ़ली रज़वी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه
शमाइमे बख़्शिश, स. 44

मुनाजात

ठन्डी ठन्डी हवा ह़रम की है
बारिश **अल्लाह** के करम की है
नूरी चादर तनी है काबे पर
बारिश **अल्लाह** के करम की है
पाक घर के त़वाफ़ वालों पर
बारिश **अल्लाह** के करम की है
जो नज़र आ रही है हर जानिब
सब बहार उन के दम क़दम की है
अपनी उम्मत की मग़्फ़िरत हो जाए
आरज़ू शाफ़िए उमम की है
काश हर साल ह़ज करे अ़त्तार
अ़र्ज़ बदकार पर करम की है

अज़ शैख़े त़रीक़त
अमीरे एहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه
वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 140

(1) ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! हिजरत के मौक़ेअ़ पर रेह़मते आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अपनी मुबारक ऊंटनी पर सवार हो कर मदीनए मुनव्वरा में दाख़िल होने के नूरानी मन्ज़र का तसव्वुर जमा कर येह कलाम पढ़िए, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ईमान ताज़ा हो जाएगा।

मुश्किल अल्फ़ाज़ के मआ़नी : नाक़ए अक़्दस : सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुबारक ऊंटनी जिस पर सवार हो कर हिजरत के मौक़ेअ़ पर मदीनए मुनव्वरा में आमद हुई। **दो रूया :** रास्ते के दोनों त़रफ़। **दस्त बस्ता :** हाथ बांधे हुवे। **सर पए तस्लीम ख़म कर लो :** अपने सरों को सलामी के लिए झुका लो। **राकिब :** सवार। **सारिबां :** ऊंट चलाने वाला।



(क़िस्त : 01)

हक़ीक़ी कामयाबी और इस के हुसूल का तरीक़ा

मुफ़्ती मुहम्मद क़ासिम अत्तारी

इरशादे बारी तआ़ला है :

﴿قَدْ اَفْلَحَ الْمُؤْمِنُوْنَ ۙ الَّذِیْنَ هُمْ فِیْ صَلَاتِهِمْ خٰشِعُوْنَ ۙ وَ الَّذِیْنَ هُمْ عَنِ اللَّغْوِ مُعْرِضُوْنَ ۙ وَ الَّذِیْنَ هُمْ لِلزَّكٰوةِ فٰعِلُوْنَ ۙ وَ الَّذِیْنَ هُمْ لِفُرُوْجِهِمْ حٰفِظُوْنَ ۙ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक ईमान वाले कामयाब हो गए जो अपनी नमाज़ में ख़ुशूओ़ ख़ुज़ूअ़ करने वाले हैं और वोह जो फ़ुज़ूल बात से मुंह फेरने वाले हैं और वोह जो ज़कात देने का काम करने वाले हैं और वोह जो अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करने वाले हैं । (پ18، المؤمنون: 1تا5)

तफ़्सीर : इस आयत में ईमान वालों को बिशारत दी गई है कि बेशक वोह **अल्लाह** तआ़ला के फ़ज़्ल से अपने मक़्सद में कामयाब हो गए और हमेशा के लिए जन्नत में दाख़िल हो कर हर ना पसन्दीदा चीज़ से नजात पा जाएंगे ।

(تفسیر کبیر، 11/161، روح البیان، 8/457 ملتقطاً)

सूरए मुअमिनून की इब्तेदाई दस आयात के बारे में ह़ज़रते उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : जब नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर वह्यी नाज़िल होती तो आप के चेहरए अक़्दस के पास मख़्खियों की भिनभिनाहट की त़रह़ आवाज़ सुनाई देती । एक दिन वह्यी नाज़िल हुई तो हम कुछ देर ठेहरे रहे, जब येह कैफ़ियत ख़त्म हुई तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने क़िब्ला रू हो कर हाथ उठाए दुआ़ मांगी... इस के बाद इरशाद फ़रमाया : मुझ पर दस आयात नाज़िल हुई हैं, जिस ने इन में मज़्कूर बातों को अपनाया वोह जन्नत में दाख़िल होगा, फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने "قَدْ اَفْلَحَ الْمُؤْمِنُوْنَ" से ले कर दसवीं आयत के आख़िर तक पढ़ा । (ترمذی، 3/452، رقم: 3097)

इन्ही आयात के मुतअ़ल्लिक़ यज़ीद बिन बाबनूस से मरवी है कि हम ने ह़ज़रते आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से अ़र्ज़ की : ऐ उम्मुल मोमिनीन ! हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अख़्लाक़ कैसे थे ? इरशाद फ़रमाया : रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ख़ुल्क़ कुरआन था, फिर फ़रमाया : तुम सूरए मुअमिनून पढ़ते हो तो पढ़ो । चुनान्चे, एक शख़्स ने शुरूअ़ की दस आयतें पढ़ीं तो ह़ज़रते आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने फ़रमाया : रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अख़्लाक़ ऐसे ही थे । (مستدرک، 2/426، حدیث: 3481)

कामयाबी की दो क़िस्में हैं : एक : जुज़्वी कामयाबी और दूसरी : कुल्ली कामयाबी । जुज़्वी कामयाबी वोह है जो ज़िन्दगी के किसी एक दो मुआ़मलात में हो, जैसे किसी मुसन्निफ़ के लिए उस की किताबों का छपना, बिकना, पसन्द किया जाना, कामयाबी है । यूंही बिज़्नेस मेन के लिए कारोबार बढ़ना, फैलना, दूसरे शेहरों में शाख़ें खुल जाना एक बड़ी कामयाबी है । इसी त़रह़ नौकरी पेशे के लिए अच्छी तनख़्वाह, अच्छी मुराआ़त, अच्छा ओ़हदा, ओ़हदे में तरक़्क़ी, तनख़्वाह में इज़ाफ़ा और अच्छी कारकर्दगी का एवोर्ड मिलना एक मरग़ूब कामयाबी है । इसी त़रह़ की तफ़्सील दीनी मुआ़मलात के एतेबार से भी हो सकती है ।

लेकिन कामयाबी का एक कुल्ली, जामेअ़ और बुलन्द तर माना है जो ह़क़ीक़त में हमारा मत़लूबो मक़्सूद होना चाहिए । कामयाबी का वोह मफ़्हूम ब ह़ैसियते इन्सान और बत़ौरे मुसलमान इस लिए ह़क़ीक़ी, कामिल और आला है कि उस का इ़ल्म हमें उस अ़लीमो ख़बीर हस्ती ने दिया है जो हम से ज़्यादा हमें जानने वाला है । कुरआने मजीद में है :

﴿اَلَا یَعْلَمُ مَنْ خَلَقَ ؕ وَ هُوَ اللَّطِیْفُ الْخَبِیْرُ ۧ﴾

तर्जमा : क्या जिस ने पैदा किया वोह नहीं जानता ? ह़ालांकि वोही हर बारीकी को जानने वाला, बड़ा ख़बरदार है ।

(پ29، الملک: 14)

अगर पैसा ही इन्सान की कामयाबी के लिए काफ़ी होता तो कोई मालदार दुन्या में दुख़ी न होता, जबकि हमारा मुशाहदा है कि बहुत से पैसे वाले ना फ़रमान औलाद, ज़बान दराज़ बीवी, तबाह ह़ाल सेह़त और इन्तेशारे ज़ेहनी की वज्ह से ज़िन्दगी अ़ज़ाब में गुज़ारते हैं । ह़क़ीक़त येह है कि अगर इन मसाइल में से कोई मस्अला भी न हो फिर भी ह़क़ीक़ी

कामयाबी का दावा नहीं हो सकता क्यूंकि अगर दुन्या में हर चीज़ हासिल है लेकिन इस के साथ बन्दा खुदा की लानत व ग़ज़ब का मौरिद और अ़ज़ाबे जहन्नम का मुस्तहिक़ है, तो ऐसी कामयाबी, नाकामी ही है।

कामयाबी का वसीअ़ तर इस्लामी तसव्वुर येह है कि खुदा राज़ी हो, आख़ेरत में नजात मिले, जहन्नम से छुटकारा और जन्नत में दाख़िला हासिल हो जाए। हक़ीक़त येह है कि जब इन्सान रिज़ा ए इलाही को अपना मक़्सूदे अस्ली बना कर कोशिश करता है और वोह कोशिश अहकामे खुदा, हिदायाते इस्लाम, तालीमाते शरीअ़त, इत्तेबाए़ सुन्नत के मुताबिक़ होती है तो उस के सारे काम ही सीधे हो जाते हैं। मख़्लूक़ राज़ी, बीवी खुश, बच्चे फ़रमां बरदार, ज़ेहन पुर सुकून और रिज़्क़ में क़नाअ़त नसीब हो जाती है। नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इस के मुतअ़ल्लिक़ एक बहुत ख़ूब सूरत फ़रमान है : अस्वद बिन यज़ीद ने रिवायत किया कि हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने कहा कि मैं ने तुम्हारे मोहतरम नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुवे सुना : "जिस ने अपने सारे ग़मों को आख़ेरत का ग़म बना लिया तो **अल्लाह** तआ़ला उस की दुन्या के ग़म के लिए काफ़ी है और जो दुन्यावी मुआ़मलात के ग़मों और परेशानियों में उलझा रहा, तो **अल्लाह** तआ़ला को उस की कोई परवा नहीं कि वोह किस वादी में हलाक हुवा।" (ابن ماجه، 4/425، حدیث:4106)

कामयाब लोगों के मुतअ़ल्लिक़ **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है :

﴿وَ مَنْ یُّطِعِ اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ وَ یَخْشَ اللّٰهَ وَ یَتَّقْهِ فَاُولٰٓىٕكَ هُمُ الْفَآىٕزُوْنَ۵۲﴾

तर्जमा : और जो **अल्लाह** और उस के रसूल की इताअ़त करे और **अल्लाह** से डरे और उस (की ना फ़रमानी) से डरे तो येही लोग कामयाब हैं। (پ18، النور:52) और फ़रमाता :

﴿فَمَنْ زُحْزِحَ عَنِ النَّارِ وَ اُدْخِلَ الْجَنَّةَ فَقَدْ فَازَ﴾

तर्जमा : तो जिसे आग से बचा लिया गया और जन्नत में दाख़िल कर दिया गया तो वोह कामयाब हो गया।

(پ4، ال عمران:185)

क़ुरआन बताता है कि लोग दो त़रह़ के हैं : एक वोह जो सिर्फ़ दुन्या की कामयाबी चाहते हैं और दूसरे वोह जो दुन्या ओ आख़ेरत की कामयाबी मांगते हैं। चुनान्चे, त़ालिबीने दुन्या के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाया :

﴿فَمِنَ النَّاسِ مَنْ یَّقُوْلُ رَبَّنَاۤ اٰتِنَا فِی الدُّنْیَا وَ مَا لَهٗ فِی الْاٰخِرَةِ مِنْ خَلَاقٍ۲۰۰﴾

तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और कोई आदमी यूं केहता है कि ऐ हमारे रब ! हमें दुन्या में दे दे और आख़ेरत में उस का कुछ हिस्सा नहीं। (پ2، البقرة: 200) और त़ालिबीने आख़ेरत के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाया : ﴿وَ مِنْهُمْ مَّنْ یَّقُوْلُ رَبَّنَاۤ اٰتِنَا فِی الدُّنْیَا حَسَنَةً وَّ فِی الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّ قِنَا عَذَابَ النَّارِ۲۰۱ اُولٰٓىٕكَ لَهُمْ نَصِیْبٌ مِّمَّا كَسَبُوْا ؕ وَ اللّٰهُ سَرِیْعُ الْحِسَابِ۲۰۲﴾

तर्जमा : और कोई यूं केहता है कि ऐ हमारे रब ! हमें दुन्या में भलाई अ़त़ा फ़रमा और हमें आख़ेरत में भी भलाई अ़त़ा फ़रमा और हमें दोज़ख़ के अ़ज़ाब से बचा। उन लोगों के लिए उन के कमाए हुवे माल से हिस्सा है और **अल्लाह** जल्द हिसाब करने वाला है। (پ2، البقرة: 200، 201)

दूसरी जगह पर फ़रमाया :

﴿مَنْ كَانَ یُرِیْدُ الْعَاجِلَةَ عَجَّلْنَا لَهٗ فِیْهَا مَا نَشَآءُ لِمَنْ نُّرِیْدُ ثُمَّ جَعَلْنَا لَهٗ جَهَنَّمَ ۚ یَصْلٰىهَا مَذْمُوْمًا مَّدْحُوْرًا۱۸ وَ مَنْ اَرَادَ الْاٰخِرَةَ وَ سَعٰى لَهَا سَعْیَهَا وَ هُوَ مُؤْمِنٌ فَاُولٰٓىٕكَ كَانَ سَعْیُهُمْ مَّشْكُوْرًا۱۹ كُلًّا نُّمِدُّ هٰۤؤُلَآءِ وَ هٰۤؤُلَآءِ مِنْ عَطَآءِ رَبِّكَ ؕ وَ مَا كَانَ عَطَآءُ رَبِّكَ مَحْظُوْرًا۲۰﴾

तर्जमा : जो जल्दी वाली (दुन्या) चाहता है तो हम जिसे चाहते हैं उस के लिए दुन्या में जो चाहते हैं जल्द दे देते हैं फिर हम ने उस के लिए जहन्नम बना रखी है जिस में वोह मज़मूम, मर्दूद हो कर दाख़िल होगा। और जो आख़ेरत चाहता है और उस के लिए ऐसी कोशिश करता है जैसी करनी चाहिए और वोह ईमान वाला भी हो तो येही वोह लोग हैं जिन की कोशिश की क़द्र की जाएगी। हम सब को मदद देते हैं इन को भी और उन को भी तुम्हारे रब की अ़त़ा से और तुम्हारे रब की अ़त़ा पर रोक नहीं। (پ15، بنی اسرآءیل:18، 19، 20)

क़ुरआन की नज़र में ईमान और अच्छे किरदार वाले हक़ीक़त में कामयाब हैं।

﴿اُولٰٓىٕكَ عَلٰى هُدًى مِّنْ رَّبِّهِمْ ۗ وَ اُولٰٓىٕكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ۵﴾

तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : येही लोग अपने रब की त़रफ़ से हिदायत पर हैं और येही लोग कामयाबी हासिल करने वाले हैं। (پ1، البقرة:5) आख़ेरत को भुला कर सिर्फ़ माली कामयाबी हासिल करना क़ुरआन की रू से हरगिज़ कामयाबी नहीं, चुनान्चे, फ़रमाया :

﴿یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا لَا تُلْهِكُمْ اَمْوَالُكُمْ وَ لَاۤ اَوْلَادُكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ ۚ وَ مَنْ یَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَاُولٰٓىٕكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ۹﴾

तर्जमा : ऐ ईमान वालो ! तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद तुम्हें **अल्लाह** के ज़िक्र से ग़ाफ़िल न कर दें और जो ऐसा करेगा तो वोह लोग नुक़्सान उठाने वाले हैं। (پ28، المنافقون:9)

मज़ीद तफ़्सीलात اِنْ شَآءَ اللّٰه अगली क़िस्त में .....



दीन आसान है

मौलाना मुह़म्मद नासिर जमाल अ़त़्त़ारी मदनी

हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमान है : اِنَّ الدِّيْنَ يُسْرٌ यानी दीन आसान है।[1]

शारेह़े बुख़ारी अ़ल्लामा बदरुद्दीन ऐनी ह़नफ़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने दीन आसान होने की जो वज़ाह़त की है, उस का ख़ुलासा मुलाह़ज़ा कीजिए : दीन आसान है यानी दीने इस्लाम पिछले तमाम अदयान (दीनों) से आसान है। इसी लिए उम्मते मुह़म्मदिया के लिए पिछली उम्मतों जैसी दुश्वारियां नहीं क्यूंकि पिछली उम्मतों के लोग मिट्टी से (तयम्मुम के ज़रीए) त़हारत ह़ासिल नहीं कर सकते थे, कपड़े पर जिस जगह नजासत लग जाती उसे काटना पड़ता वग़ैरा। अल्लाह पाक ने अपने लुत्फ़ो करम से इस उम्मत पर रेह़म फ़रमाते हुवे इन तमाम सख़्तियों को दूर फ़रमा दिया। अल्लाह पाक इरशाद फ़रमाता है :

﴿وَمَا جَعَلَ عَلَيْكُمْ فِي الدِّيْنِ مِنْ حَرَجٍ﴾[2]

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और तुम पर दीन में कुछ तंगी न रखी।[3]

इस्लाम दीने फ़ित़रत है जिस की वाज़ेह़ अ़लामत (खुली निशानी) येह है कि इस्लाम ने बन्दे को उन्ही अह़काम का पाबन्द किया है जो उस की त़ाक़त व कुव्वत के तह़त आते हों चुनान्चे, रब्बे करीम इरशाद फ़रमाता है :

﴿لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह किसी जान पर बोझ नहीं डालता मगर उस की त़ाक़त भर।[4]

दीन आसान होने की चन्द मिसालें :

1 अल्लाह पाक ने इस उम्मत से भूल और दिल में आने वाले गुनाहों भरे ख़यालात को मुआ़फ़ फ़रमा दिया जब तक कि वोह "अ़ज़्म"[5] की ह़द तक न पहुंचें।

2 फ़राइज़ो वाजिबात और सुन्नते फ़ज्र में क़ियाम यानी खड़े होना फ़र्ज़ है, लेकिन अगर कोई शिद्दते तक्लीफ़ में मुब्तला हो और क़ियाम की कोई सूरत न हो तो उसे बैठ कर नमाज़ पढ़ने की रुख़्सत दी गई है, जिस के लिए बैठ कर नमाज़ पढ़ना इन्तेहाई दुश्वार हो उसे लेट कर पढ़ने की इजाज़त दी गई।

3 गुस्ल व वुज़ू के लिए अगर पानी दस्तयाब न हो सके या पानी का इस्तेमाल इस के लिए नुक़्सान देह है तो तमाम शराइत़ पाए जाने की सूरत में निय्यत कर के मिट्टी पर हाथ मार कर चेहरे और कोहनियों समेत दोनों हाथों पर फेर कर तयम्मुम कर लेने को वुज़ू व गुस्ल के क़ाइम मक़ाम क़रार दे दिया गया है।

4 इसी त़रह़ सफ़र की दुश्वारियों का लेह़ाज़ कर के शरीअ़त ने मुसाफ़िर को शरई सफ़र की ह़ालत में रोज़ा न रखने और इसे बाद में क़ज़ा कर लेने की रुख़्सत दी है।

5 शरई सफ़र के लिए नमाज़ क़स्र करने यानी चार रक्अ़त फ़र्ज़ को दो रक्अ़त पढ़ने का हुक्म दिया है। लेहाज़ा दीन में बेजा सख़्ती और मुबालग़ा आराई नहीं

करनी चाहिए और जिन उमूर में शरीअ़त ने रुख़्सत व नर्मी दी है उन्हें क़बूल भी करना चाहिए, अल्लाह पाक के आख़री नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ اَنْ تُؤْتٰى رُخَصُهٗ كَمَا يُحِبُّ اَنْ تُؤْتٰى عَزَائِمُهٗ

यानी जिस त़रह़ अल्लाह करीम को येह पसन्द है कि उस के अ़त़ाकर्दा फ़राइ़ज़ पर अ़मल किया जाए इसी त़रह़ उसे येह भी पसन्द है कि उस की दी गई रुख़्सतों पर अ़मल किया जाए ।[6] याद रहे कि रुख़्सत में भी दरमियानी राह इख़्तियार करनी चाहिए यानी जिन सूरतों में शरीअ़त ने जितनी रिआ़यत दी है उस से तजावुज़ न किया जाए कि मह़ज़ अपनी सहूलत और सुस्ती की वज्ह से राहे एतेदाल छोड़ दी जाए, मसलन किसी आ़लिमे दीन से शरई राहनुमाई के लिए बग़ैर ही मामूली सी तक्लीफ़ या ख़ुद साख़्ता मजबूरी की वज्ह से नमाज़ की जमाअ़त छोड़ दी जाए या मामूली उ़ज़्र में बैठ कर नमाज़ पढ़ ली जाए, दीनी मुआ़मलात व अह़कामात पर अ़मल करने में अगर किसी मुसलमान को कोई उ़ज़्र और तक्लीफ़ हो या अ़मल की राह में कोई मजबूरी आड़े आ जाए तो उसे चाहिए कि "दीन बड़ा आसान है" केह कर अपने अन्दाज़े से इस मुश्किल का ह़ल निकालने की बजाए उ़लमा ओ मुफ़्तियाने किराम के पास ह़ाज़िर हो कर इस का ह़ल मालूम करे क्यूंकि जिस त़रह़ हम बहुत से दुन्यवी कामों में पेश आने वाली रुकावटों और उल्झनों के ह़ल के लिए जब इस काम के माहिरीन के पास जाते हैं तभी वोह मुआ़मला सह़ीह़ त़ौर पर ह़ल होता है मसलन जिस्मानी मसाइल और परेशानियों का ख़ुद से ही इ़लाज नहीं करते और न ही किसी मेमारो ठेकेदार के पास जाते हैं बल्कि डॉक्टर के पास जाते हैं और बीमारी जितनी संगीन हो उतने ही बड़े माहिर डॉक्टर के पास जाते हैं, कोई मकान बनवाना हो तो ह़जाम के पास नहीं बल्कि मेमारो ठेकेदार के पास जाते हैं और सर के बढ़े हुवे बालों की उल्झन के ह़ल के लिए डेन्टिस्ट के पास नहीं जाते, इसी त़रह़ दीनी मसाइल में भी किसी ग़ैरे आ़लिम व ग़ैरे मुफ़्ती से इस का ह़ल मालूम करने या ख़ुद ही अपने अन्दाज़े से इसे ह़ल करने के बजाए सुन्नी उ़लमा ए किराम और मुफ़्तियाने दीन के पास जाना ही लाज़मी और ज़रूरी है ताकि वोह मस्अला सह़ीह़ त़रीक़े से ह़ल हो जाए ।

रोज़ मर्रह का मुशाहदा हमें बताता है कि कम हिम्मत इन्सान को मामूली सा काम भी पहाड़ जितना वज़्नी लगता है और बुलन्द हिम्मत इन्सान पहाड़ जैसे काम को मामूली समझ कर, कर गुज़रता है । एक तादाद वोह है जो अपनी सुस्ती व काहिली और कम हिम्मती की वज्ह से इस्लामी तालीमात पर अ़मल नहीं करती लेकिन "दीन पर अ़मल बहुत मुश्किल है" केह कर अपनी बे अ़मली छुपाने की कोशिश करती है ऐसे लोगों को लम्बा सफ़र कर के कड़ी शराइत़ के साथ बिल्कुल वक़्त पर आठ आठ दस दस घन्टों के लिए दफ़्तर पहुंचना दुश्वार नहीं लगता मगर चन्द मिनटों में पढ़ी जाने वाली पांच वक़्त की नमाज़ مَعَاذَاللّٰه बोझ मेह़सूस होती है, अपनी माहाना आमदनी का अक्सर ह़िस्सा अ़य्याशियों में लुटाना आसान लगता है जबकि ज़रूरी शराइत़ के बाद फ़र्ज़ होने की सूरत में सिर्फ़ ढाई फ़ीसद ज़कात निकालना परेशान कर देता है, केरियर बनाने की ख़ात़िर मुश्किल से मुश्किल उ़लूम ह़ासिल करने के लिए कई साल तक रात दिन उठाई जाने वाली मशक़्क़त तो गवारा है मगर ज़रूरी दीनी इ़ल्म ह़ासिल करने के लिए कुछ न कुछ वक़्त निकालना बहुत भारी पड़ता है । येह मुख़्तसर सा जाइज़ा हमें येह बावर कराने के लिए काफ़ी है कि दीने इस्लाम पर अ़मल को मुश्किल बनाने में इन्सान के ज़ावियए निगाह और तरजीह़ात का दख़्ल है ।

जो ज़िन्दगी के हर मर्ह़ले में इस्लाम को तरजीह़ देते हैं उन्हें दीने इस्लाम पर अ़मल मुश्किल नहीं लगता, उन का हुस्ने अ़मल दुन्या पर गेहरे नुक़ूश छोड़ता है और उन्हें रोल मोडेल के त़ौर पर याद रखा जाता है ।

---

(1) بخاری، 1/36، حدیث:39(2) پ17، الحج:78(3) عمدۃ القاری، 1/348 ملخصاً (4) پ3، البقرۃ:286

(5) अगर गुनाह के काम का बिल्कुल पक्का इरादा कर लिया जिस को अ़ज़्म केहते हैं तो येह भी एक गुनाह है अगर्चे जिस गुनाह का अ़ज़्म किया था उसे न किया हो ।

(कुफ़्रिय्या कलेमात के बारे में सवाल जवाब, स. 305)

(6) مصنف لابن ابی شیبۃ، 6/234، حدیث:1۔



मौलाना मुहम्मद अदनान चिश्ती अत्तारी मदनी

(क़िस्त : 02)

बुज़ुर्गाने दीन और शब बेदारी

ख़ुश नसीब हैं वोह ईमान वाले कि जो रातों को जाग कर अपने मालिको मौला की इबादत करते और आंसू बहाते हैं । अल्लाह पाक ने कुरआने पाक में उन की तारीफ़ बयान फ़रमाई है । अहादीसे पाक में शब बेदारी पर अज्रो सवाब की नवीद सुनाई गई है जैसा कि अल्लाह पाक के आख़री नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : क़ियामत के दिन तमाम लोग एक ही जगह इकठ्ठे होंगे फिर एक आवाज़ सुनाई देगी : कहां हैं वोह लोग जिन के पेहलू बिस्तरों से जुदा रेहते थे ? फिर वोह लोग खड़े होंगे, उन की तादाद बहुत कम होगी, वोह बग़ैर हिसाब जन्नत में दाख़िल हो जाएंगे, फिर तमाम लोगों से हिसाब शुरूअ होगा ।[1]

हमारे प्यारे नबी और शब बेदारी : हमारे प्यारे नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शब बेदारी से कौन वाक़िफ़ नहीं, आप रातों को इस क़दर इबादत किया करते थे कि मुबारक पाउं पर सूजन आ जाया करती थी । ऐसा भी होता कि हमारे प्यारे नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक ही रात में दो रक्आत यूं अदा फ़रमाते कि उन में सूरतुल बक़रह, सूरए आले इमरान और सूरतुन्निसा तक तिलावत फ़रमा लेते ।[2]

मख़्सूस रातों में शब बेदारी : यूं तो नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सारा साल ही रातों को इबादत फ़रमाया करते थे लेकिन शाबानुल मोअ़ज़्ज़म हो या रमज़ानुल मुबारक आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शब बेदारी का क्या केहना ! हमारे प्यारे नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم शबे बराअत में मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ में इबादत फ़रमाया करते थे जैसा कि हज़रते आइशा फ़रमाती हैं : एक शबे बराअत में नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सजदे की हालत में मस्जिद में इबादत फ़रमा रहे थे ।[3] शबे बराअत का एक और अमल मुलाहज़ा फ़रमाइए : उम्मुल मोमिनीन हज़रते आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا फ़रमाती हैं : मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अपने हुजरे में पड़े हुवे कपड़े की तरह (यानी बग़ैर किसी हरकत के) सजदे की हालत में देखा कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अल्लाह पाक से मुनाजात कर रहे हैं ।[4]

मुख़्तलिफ़ अहादीसे मुबारका की रौशनी में येह भी अन्दाज़ा होता है कि प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हर साल शबे बराअत कभी घर में और कभी मस्जिद में इबादत और ज़िक्रो दुआ में मश्ग़ूल रेहते थे । बसा अवक़ात इस इबादत में सारी रात गुज़र जाती और मुबारक क़दमों पर सूजन आ जाती ।[5] कभी शबे बराअत में ऐसा होता कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم क़ब्रिस्तान जा कर मुसलमान मर्दों, औरतों और शहीदों के लिए दुआ ए मग़फ़ेरत फ़रमाते ।[6]

रमज़ानुल मुबारक की मख़्सूस रातें : जब रमज़ान शरीफ़ का आख़री अ़शरा आता तो रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم शब बेदारी फ़रमाते, अपने घर वालों को भी जगाते, इबादत में ख़ूब कोशिश करते ।[7]

हज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا से रिवायत है रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم रमज़ानुल मुबारक के आख़री अ़शरे में अपने घर वालों में (से) हर उस फ़र्द को जगाते जो क़ियाम की ताक़त रखता था ।[8]

ईदैन (दो ईदों) की रातों में शब बेदारी : ईद का दिन जहां ख़ुशी के इज़हार और मेल जोल का दिन है वहीं इन की रातें भी बड़ी अ़ज़मत वाली हैं, इन्हें इबादत में बसर करने का ख़ुद हमारे प्यारे नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है जैसा कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने

फ़रमाया : जिस ने ईदैन की रात (यानी शबे ईदुल फ़ित्र और शबे ईदुल अज़हा) सवाब के लिए क़ियाम किया, उस का दिल उस दिन नहीं मरेगा, जिस दिन (लोगों के) दिल मर जाएंगे ।(9)

रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो शख़्स पांच रातों में इबादत करे उस के लिए जन्नत वाजिब हो जाती है । वोह रातें येह हैं : आठ ज़ुल हिज्जा, नौ ज़ुल हिज्जा, दस ज़ुल हिज्जा, ईदुल फ़ित्र और पन्दरह शाबान की रात (यानी शबे बराअत) ।(10)

हज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه और मख़्सूस रातों में इबादत : अमीरुल मोमिनीन हज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم फ़रमाते हैं :

يُعْجِبُنِىْ اَنْ يُّفَرِّغَ الرَّجُلُ نَفْسَهٗ فِىْ اَرْبَعِ لَيَالٍ

यानी मुझे येह बात पसन्द है कि बन्दा इन चार रातों में ख़ुद को (इबादत के लिए) फ़ारिग़ कर ले 1 ईदुल फ़ित्र की रात 2 ईदुल अज़हा की रात 3 शाबान की पन्दरहवीं रात 4 रजब की पेहली रात ।(11)

हज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه और मख़्सूस रातों में इबादत : हज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه बड़ी रातों में इबादत की ऐसी लगन रखते थे कि अपने आ़मिल को इन रातों में इबादत के लिए बा क़ाइदा ख़त के ज़रीए पैग़ाम भेज कर इबादत करने का हुक्म सादिर फ़रमाया जैसा कि

हज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने बसरा में अपने गवर्नर अ़दी बिन अरत़ात رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को लिखा : साल की चार रातों (में इबादत) तुम पर लाज़िम है । यक़ीनन अल्लाह पाक इन रातों में ख़ूब रेहमत अ़ता फ़रमाता है । 1 रजब की पेहली रात 2 निस्फ़ शाबान की रात 3 ईदुल फ़ित्र की रात 4 ईदुल अज़हा की रात ।(12)

त़वील इबादत के मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ : अल्लाह पाक के कितने ही प्यारे ऐसे हैं कि जो अपने ख़ालिक़ो मालिक को राज़ी करने के लिए मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ में उस की इबादत बजा लाते हैं कुछ चालीस साल तक इशा के वुज़ू से फ़ज्र की नमाज़ पढ़ते (हैं) तो कुछ तिलावते क़ुरआन के ऐसे शौक़ीन (हैं) कि मुसलसल चालीस साल तक हर तीन दिन में पूरा क़ुरआन तिलावत करते कुछ रोज़ाना एक क़ुरआने पाक की तिलावत फ़रमाते ।

हज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه एक रात में एक रक्अ़त में पूरा क़ुरआने पाक पढ़ लिया करते थे ।(13) आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه सारी रात इबादत फ़रमाते और एक रक्अ़त में पूरा क़ुरआने पाक पढ़ लिया करते थे ।(14)

जलीलुल क़द्र इमाम हज़रते अबू बक्र बिन अ़याश رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का मामूल था कि 60 साल तक रोज़ाना दिन और रात में एक क़ुरआने पाक ख़त्म फ़रमाया करते थे ।(15)

हज़रते यह्या बिन अकसम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं सफ़रो हज़र में हज़रते वकीअ़ बिन जर्राह़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के साथ रहा हूं, आप हमेशा रोज़ा रखते और रोज़ाना रात को एक क़ुरआने पाक ख़त्म फ़रमाया करते थे ।(16)

सिहाह़ सित्ता के रावी जलीलुल क़द्र इमाम अह़मद बिन मुनीअ़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का चालीस साल तक येह मामूल था कि आप हर तीन दिन में एक क़ुरआने पाक ख़त्म फ़रमाया करते थे ।(17)

हज़रते इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : हज़रते अ़त़ा बिन साइब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه बेहतरीन इबादत गुज़ारों (में) से थे, आप रोज़ाना रात को एक क़ुरआन ख़त्म फ़रमाया करते थे ।(18)

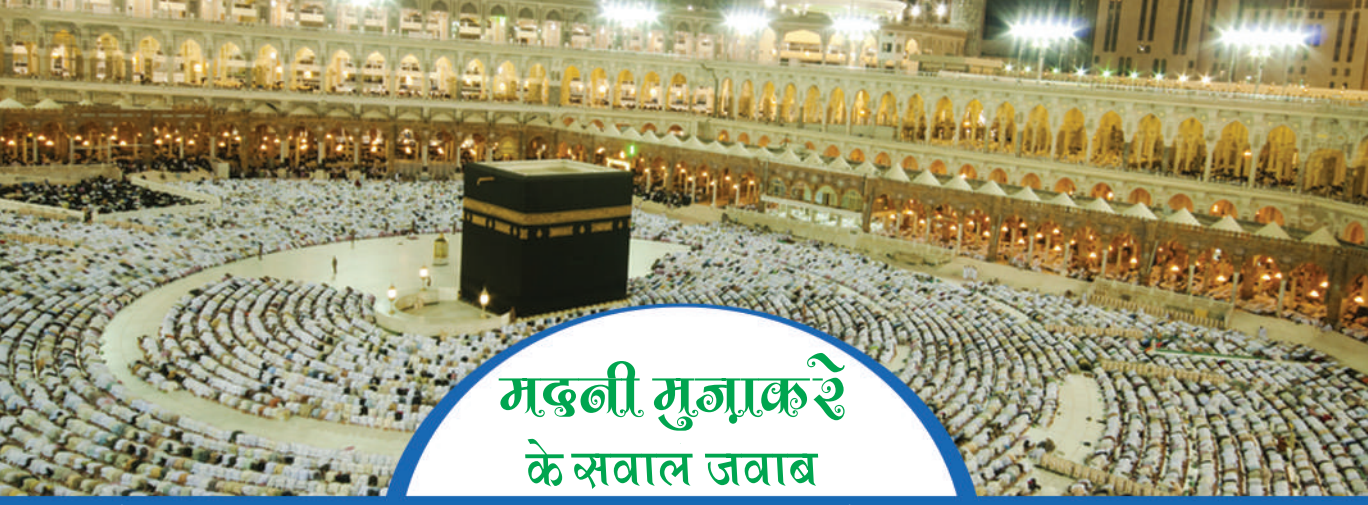
नफ़्ली इबादात की कसरत बिदअ़त नहीं बल्कि अस्लाफ़े किराम और बुज़ुर्गाने दीन का त़रीक़ए कार है, इस पर मज़ीद तफ़्सील अगले माह के शुमारे (अंक) में पेश की जाएगी । اِنْ شَآءَاللّٰه عزوجل

अल्लाह करीम हमें भी फ़राइज़ के साथ साथ शब बेदारी की नेमत से सरफ़राज़ फ़रमाए ।

اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صلَّى اللهُ عليه واٰله وسلَّم

---

(1) الترغیب والترہیب، 1/240، حدیث:9 (2) نسائی، ص289، حدیث:1661 (3) فضائل الاوقات، ص32، حدیث:36 (4) ذکر احادیث رویت عن النبی فی ذکر لیلۃ النصف من شعبان وفضلہ، ص134 ماخوذاً (5) الدعوات الکبیر، 2/145، حدیث:530 ماخوذاً (6) شعب الایمان، 3/384، حدیث:3837 ماخوذاً (7) مسلم، ص598، حدیث: 1174 (8) مختصر قیام اللیل للروزی، ص247 (9) ابن ماجہ، 2/365، حدیث:1782 (10) الترغیب والترھیب، 2/62، حدیث:2 (11) التبصرۃ لابن الجوزی، 2/20 (12) الترغیب والترھیب للاصبہانی، 2/393، حدیث:1851 (13) مصنف ابن ابی شیبہ، 5/514، حدیث:8680 (14) السنن الکبری للبیہقی، 2/396، حدیث:4230 (15) صفۃ الصفوۃ، 3/109 (16) صفۃ الصفوۃ، 3/112 (17) سیر اعلام النبلاء، 11/484 (18) تہذیب الکمال، 20/90۔



मदनी मुज़ाकरे के सवाल जवाब

शैख़े त़रीक़त अमीरे एहले सुन्नत, बानी ए दावते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ मदनी मुज़ाकरों में अ़क़ाइद, इबादात और मुआ़मलात के मुतअ़ल्लिक़ किए जाने वाले सवालात के जवाबात अ़त़ा फ़रमाते हैं, इन में से 12 सवालात व जवाबात ज़रूरी तरमीम के साथ यहां दर्ज किए जा रहे हैं :

1 जिस पर ह़ज फ़र्ज़ हो गया हो वोह ज़कात दे या ह़ज करे ?

सवाल : जिस पर ह़ज फ़र्ज़ हो गया हो वोह ज़कात दे या ह़ज करे ?

जवाब : अगर ज़कात की ह़द तक उस के पास माल है और ज़कात की तारीख़ आ गई तो ज़कात फ़र्ज़ हो गई तो ज़ाहिर है अब उसे अपने माल का चालीसवां ह़िस्सा ज़कात में देना होगा और ह़ज फ़र्ज़ हो तो ह़ज भी करना होगा।

(मदनी मुज़ाकरा, 10 जुल क़ादतिल ह़राम 1440 हिजरी)

2 फ़ौतशुदा वालिदैन के नाम की क़ुरबानी करने का ह़ुक्म

सवाल : अगर वालिदैन का इन्तेक़ाल हो चुका हो और उन्हों ने ज़िन्दगी में कभी भी क़ुरबानी न की हो तो क्या औलाद उन के नाम की क़ुरबानी कर सकती है ?

जवाब : जी हां ! ईसाले सवाब के लिए क़ुरबानी हो सकती है इस में कोई ह़रज नहीं नीज़ वालिदैन की त़रफ़ से क़ुरबानी करनी चाहिए येह अच्छी बात है। वालिदैन ज़िन्दगी में क़ुरबानी करते थे या नहीं या 100 100 बकरे ज़िन्दगी में ज़ब्ह़ करते थे तब भी ईसाले सवाब के लिए क़ुरबानी करने में ह़रज नहीं। नीज़ ज़िन्दा के ईसाले सवाब के लिए भी क़ुरबानी हो सकती है।

(मदनी मुज़ाकरा, 10 जुल क़ादतिल ह़राम 1440 हिजरी)

3 काश ! हर घर में आ़लिमे दीन हो !

सवाल : आप अपनी ख़्वाहिश का इज़हार करते हैं कि काश ! हर घर में आ़लिमे दीन हो, अगर किसी की बेटियां ही हों तो वोह आप की ख़्वाहिश को कैसे पूरा करे ?

जवाब : अगर किसी को अल्लाह पाक ने बेटियों ही से नवाज़ा है तो उन्हें आ़लिमा बना दे तब भी मेरी ख़्वाहिश पूरी हो जाएगी। एक ही बच्चे को ह़ाफ़िज़े क़ुरआन और आ़लिमे दीन बनाने के बजाए बेहतर येह है कि तमाम बच्चों को ही ह़ाफ़िज़े क़ुरआन और आ़लिमे दीन बनाने की कोशिश की जाए। वालिदैन की अपनी उ़म्र तो बीत गई अब ख़ुद ह़ाफ़िज़े क़ुरआन या आ़लिमे दीन नहीं बन सकते तो अपनी औलाद ही को ह़ाफ़िज़ या आ़लिम बना कर अज्रो सवाब कमा लें। अगर औलाद को ह़ाफ़िज़ या आ़लिम न भी बना सकें तब भी शरीअ़तो सुन्नत के मुत़ाबिक़ इन की तरबियत तो करनी ही होगी वरना इस मुआ़मले में कोताही क़ियामत के दिन फंसवा कर रुस्वाई का सबब बन सकती है।

(मदनी मुज़ाकरा, 28 जुल क़ादतिल ह़राम 1439 हिजरी)

4 क्या क़ुरबानी के जानवर को नेहलाया जा सकता है ?

सवाल : क्या क़ुरबानी के जानवर को नेहलाया जा सकता है ?

जवाब : जी हां ! क़ुरबानी के जानवर को नेहलाया जा सकता है जबकि ज़रूरत हो।

(मदनी मुज़ाकरा, 10 जुल क़ादतिल ह़राम 1440 हिजरी)

5 क्या क़ुरबानी की भी क़ज़ा होती है ?

सवाल : एक साल की क़ुरबानी रेह जाए तो क्या येह क़ुरबानी दूसरे साल कर सकते हैं ? जैसे इस मरतबा मेरे पास पैसे नहीं हैं तो क़ुरबानी मेरे लिए मुआ़फ़ है या करना होगी ?

जवाब : कुरबानी के दिन गुज़र गए और कुरबानी नहीं की न जानवर और इस की क़ीमत सदक़ा की यहां तक कि दूसरी बक़रह ईद आ गई और अब येह चाहता है कि गुज़श्ता साल की कुरबानी की क़ज़ा इस साल कर ले तो येह नहीं हो सकता बल्कि अब भी वोही हुक्म है कि एक साल का बकरा या बकरी या इस की क़ीमत सदक़ा करे। (فتاوی ھندیۃ، 5/296، 297)

(मदनी मुज़ाकरा, 10 जुल क़ादतिल ह़राम 1440 हिजरी)

6 बेटे का मां बाप से पेहले मदीने शरीफ़ जाना कैसा ?

सवाल : क्या बेटा मां बाप से पेहले मदीने शरीफ़ जा सकता है ?

जवाब : बेटा मां बाप से पेहले मदीने शरीफ़ जा सकता है इस में ह़रज नहीं है बल्कि अगर ह़ज फ़र्ज़ हो गया और मां बाप इजाज़त न भी दें तब भी जाना होगा।

(मदनी मुज़ाकरा, 10 जुल क़ादतिल ह़राम 1440 हिजरी)

7 ह़जरे अस्वद का रंग काला क्यूं ?

सवाल : ह़जरे अस्वद जब जन्नत से आया तो इस का रंग सफ़ेद था, अब इस का रंग काला क्यूं हो गया है ?

जवाब : येह ह़जरे अस्वद यानी काला पथ्थर पेहले ह़जरे अबयज़ यानी सफ़ेद पथ्थर था, लोगों के गुनाहों की वज्ह से इस का रंग काला हो गया, (ترمذی، 2/248، حدیث:878) इस लिए अब इसे ह़जरे अस्वद कहा जाता है।

(मदनी मुज़ाकरा, 23 जुमादल ऊला 1441 हिजरी)

8 झूट बोल कर उ़मरे के लिए जाना कैसा ?

सवाल : اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं उ़मरे की सआ़दत ह़ासिल करने जा रहा हूं लेकिन क़ानून के मुत़ाबिक़ 40 साल से कम उ़म्र के मर्द को उ़मरे के लिए अकेले सफ़र करने की इजाज़त नहीं है, अकेले होने की वज्ह से सिर्फ़ काग़ज़ात में मुझे किसी ना मेह़रम औ़रत का मेह़रम बनाया जा रहा है ह़ालांकि उस औ़रत का ह़क़ीक़ी मेह़रम भी उस के साथ मौजूद है, इस बारे में मेरे लिए क्या हुक्म होगा ?

जवाब : झूट चाहे ज़बान से बोलें, लिख कर बोलें या इशारे से बोलें झूट झूट ही है और गुनाह गुनाह ही है।

(मदनी मुज़ाकरा, 30 जुमादल ऊला 1441 हिजरी बि तग़य्युरिन)

9 इमामे शरीफ़ के कितने शिम्ले होने चाहिएं ?

सवाल : इमामे शरीफ़ के कितने शिम्ले होना चाहिएं ?

जवाब : प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ज़्यादा तर इमामे शरीफ़ का एक शिम्ला रखा है, (ترمذی، 3/286، حدیث:1742) लेकिन एक मरतबा आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने किसी सह़ाबी के सर पर अपने मुबारक हाथों से इमामा शरीफ़ सजाया तो उस के दो शिम्ले छोड़े। (ابو داؤد، 4/77، حدیث:4079) आला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मैं कभी कभी सुन्नत की निय्यत से इमामे शरीफ़ के दो शिम्ले भी रखता हूं। (फ़तावा रज़विया, 22/200–मदनी मुज़ाकरा, 16 जुमादल ऊला 1441 हिजरी)

10 त़वाफ़ के दौरान सेल्फ़ी लेना कैसा ?

सवाल : दौराने त़वाफ़ बहुत से लोग सेल्फ़ी या मूवी बना रहे होते हैं ताकि ज़िन्दगी का यादगार लम्ह़ा मेह़फ़ूज़ रहे, इन का ऐसा करना कैसा ?

जवाब : यादगार लम्ह़े को मेह़फ़ूज़ रखने के लिए सेल्फ़ी लेने की मुमानअ़त तो नहीं लेकिन जो यकसूई और ख़ुशूओ़ ख़ुज़ूअ़ के मवाक़ेअ़ हैं मसलन दौराने त़वाफ़ और मुवाजहा शरीफ़ की ह़ाज़री वग़ैरा तो वहां सेल्फ़ी या वीडियो बनाने से इजतेनाब करना (यानी बचना) चाहिए बल्कि मोबाइल फ़ोन की घन्टी भी बन्द कर देनी चाहिए क्यूंकि येह ख़ुशूओ़ ख़ुज़ूअ़ के मानेअ़ (यानी रुकावट) है।

(मदनी मुज़ाकरा, 28 जुल क़ादतिल ह़राम 1439 हिजरी)

11 क्या मुसाफ़िर पर कुरबानी वाजिब है ?

सवाल : क्या मुसाफ़िर पर कुरबानी वाजिब है ?

जवाब : जो शरअ़न मुसाफ़िर है उस पर कुरबानी वाजिब नहीं।

(मदनी मुज़ाकरा, 28 जुल क़ादतिल ह़राम 1439 हिजरी)

12 क्या मियां बीवी जन्नत में यकजा होंगे ?

सवाल : क्या मियां बीवी दोनों जन्नत में एक साथ रहेंगे ?

जवाब : अगर मियां बीवी का ख़ातिमा ईमान पर हुवा तो येह दोनों जन्नत में साथ रहेंगे। (التذکرۃ باحوال الموتی و امور الآخرۃ، ص462) अगर इन में से किसी का مَعَاذَاللّٰہ ईमान सलामत न रहा तो दोज़ख़ उस का ठिकाना होगा और जो जन्नत में जाएगा उस का किसी दूसरे जन्नती से निकाह़ हो जाएगा। जन्नत में जाने वाले को अपने दूसरे फ़रीक़ के बिछड़ने का कोई सदमा भी नहीं होगा क्यूंकि जन्नत रंजो ग़म का मक़ाम नहीं।

(मदनी मुज़ाकरा, 21 जुल ह़िज्जतिल ह़राम 1439 हिजरी)

दारुल इफ़्ता एहले सुन्नत

दारुल इफ़्ता एहले सुन्नत (दावते इस्लामी) मुसलमानों की शरई राहनुमाई में मसरूफ़े अ़मल है । तेहरीरी, ज़बानी, फ़ोन और दीगर ज़राएअ़ से मुल्क व बैरूने मुल्क से हज़ारहा मुसलमान शरई मसाइल दरयाफ़्त करते (पूछते रेहते) हैं, जिन में से चार मुन्तख़ब फ़तावा जैल में दर्ज किए जा रहे हैं।

1 अगर जानवर के सींग निकाल दिए गए हों तो !

सवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमा ए दीन व मुफ़्तियाने शरए़ मतीन इस मस्अले में कि एक जानवर ख़रीदने का इरादा है, मगर उस का सींग टूटा हुवा है। उस के मालिक से पूछा, तो उस ने बताया कि एक सींग टूट गया था, दूसरे को भी हम ने शुरूअ़ से ही निकाल दिया था, तो क्या ऐसे जानवर की क़ुरबानी हो सकती है, जबकि जानवर के सर पर कुछ भी मेहसूस नहीं होता और न ही सर पर अब किसी त़रह़ का कोई ज़ख़्म है । राहनुमाई फ़रमाएं ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

पूछी गई सूरत में इस जानवर की क़ुरबानी जाइज़ है, सींग का टूटना उस वक़्त ऐ़ब शुमार होता है, जबकि जड़ समेत टूट जाए और ज़ख़्म भी ठीक न हुवा हो, लेहाज़ा अगर किसी जानवर का सींग जड़ समेत टूट जाए और ज़ख़्म भर जाए, तो अब उस की क़ुरबानी हो सकती है, क्यूंकि जिस ऐ़ब की वज्ह से क़ुरबानी नहीं हो रही थी, वोह ऐ़ब अब ख़त्म हो चुका है, लेहाज़ा उस की क़ुरबानी हो जाएगी ।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَرَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

2 क्या एह़राम बांधे बग़ैर मीक़ात से गुज़र सकते हैं ?

सवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमा ए दीन व मुफ़्तियाने शरए़ मतीन इस बारे में कि हमारी कुछ दिनों बाद ह़ज के लिए रवानगी है, हम पेहले मदीन ए पाक जाएंगे, फिर वहां से ह़ज के क़रीब मक्का शरीफ़ आएंगे, तो इस के लिए ह़ज मिनिस्ट्री वालों की त़रफ़ से येह मेसेज आया है कि "आज की ह़ज परवाज़ जिद्दह जाएगी, फिर वहां से बस के ज़रीए़ मदीनए मुनव्वरा जाएंगे, मदीने में क़ियाम के बाद आप सुन्नते नबवी की रौशनी में एह़राम बांध कर मक्कए मुकर्रमा के लिए ब ज़रीअ़ए बस रवाना होंगे, लेहाज़ा जिद्दह के सफ़र के लिए आप एह़राम न बांधें", मालूम येह करना है कि जिद्दह तो मीक़ात के अन्दर है, तो क्या हम मीक़ात से एह़राम के बग़ैर गुज़र सकते हैं ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

पूछी गई सूरत में आप मीक़ात से बग़ैर एह़राम बांधे गुज़र सकते हैं, क्यूंकि अगर कोई शख़्स मक्के (ह़ुदूदे ह़रम में) जाने के इरादे से मीक़ात से गुज़रे, तो उस पर ह़ज या उ़मरे का एह़राम बांधना वाजिब होता है, ऐसे शख़्स का मीक़ात से बग़ैर एह़राम के गुज़रना, दम वाजिब होने का सबब है, लेकिन अगर मीक़ात से गुज़रते हुवे मक्के जाने का इरादा न हो, बल्कि ह़ुदूदे ह़रम से बाहर ही किसी जगह

मसलन जिद्दह जाना हो, तो उस पर मीक़ात से गुज़रते हुवे एह़राम बांधना ज़रूरी नहीं और आप का मीक़ात से गुज़रना मक्के जाने के लिए नहीं, बल्कि ह़ुदूदे ह़रम से बाहर जिद्दह, फिर वहां से मदीने शरीफ़ जाना है, लेहाज़ा मीक़ात से ह़ज या उ़मरे का एह़राम बांधे बग़ैर गुज़र सकते हैं।

इस की नज़ीर (मिसाल) येह है कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और सह़ाबा ए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان मुख़्तलिफ़ ग़रज़ों के लिए मदीने शरीफ़ से मक़ामे बद्र तशरीफ़ लाते, जो मीक़ात के अन्दर है, लेकिन मीक़ात से एह़राम नहीं बांधते थे।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

3 अगर मालदार शख़्स 12 ज़ुल ह़िज्जा को सफ़र पर हो तो क़ुरबानी का ह़ुक्म

सवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमा ए किराम इस मस्अले के बारे में कि एक मालदार मुक़ीम पर क़ुरबानी वाजिब थी फिर बारह ज़ुल ह़िज्जा की सुब्ह़ बानवे 92 किलो मीटर से ज़ाइद सफ़रे शरई पर निकल गया, क्या अब इस पर क़ुरबानी वाजिब रही या नहीं ? नीज़ अगर उस ने क़ुरबानी की निय्यत से बकरा ख़रीद लिया था, तो अब मुसाफ़िर होने पर इसे फ़रोख़्त कर सकता है या नहीं ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

सवाल में ज़िक्र कर्दा सूरत के मुत़ाबिक़ उस शख़्स पर क़ुरबानी वाजिब न रही, क्यूंकि क़ुरबानी के वुजूब (वाजिब होने) की शराइत़ में से एक शर्त़ मुक़ीम होना भी है, लेहाज़ा अगर वोह बारह ज़ुल ह़िज्जा की सुब्ह़ मुसाफ़िर हो गया और क़ुरबानी के आख़री वक़्त यानी ग़ुरूबे आफ़्ताब तक मुसाफ़िरे शरई ही रहा, तो अब उस पर क़ुरबानी वाजिब न होगी और अगर उस शख़्स ने क़ुरबानी की निय्यत से जानवर ख़रीद लिया था, तो उसे फ़रोख़्त कर सकता है, सदक़ा करना वाजिब नहीं, क्यूंकि मुसाफ़िरे शरई बनने की सूरत में उस पर क़ुरबानी वाजिब न रही थी।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

4 ग़नी शख़्स का क़ुरबानी के लिए ख़रीदा हुवा जानवर मर गया तो !

सवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमा ए दीन व मुफ़्तियाने शरए़ मतीन इस मस्अले के बारे में कि एक मालदार, ग़नी शख़्स ने क़ुरबानी का जानवर ख़रीदा और वोह क़ुरबानी से पेहले मर गया, तो क्या नया जानवर उतनी ही क़ीमत का लेना ज़रूरी है या फिर कम क़ीमत का भी ले सकता है ? राहनुमाई फ़रमाएं !

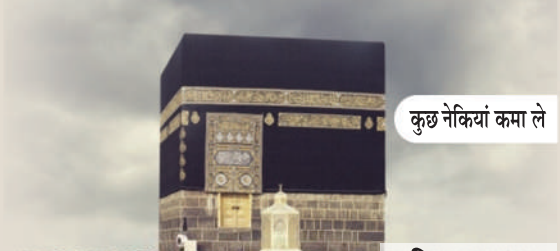
بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

पूछी गई सूरत में उस ग़नी शख़्स को इख़्तियार है कि जो भी क़ुरबानी के क़ाबिल जानवर हो, उसे क़ुरबान कर सकता है। पेहले जानवर की क़ीमत के बराबर या उस से ज़्यादा या कम क़ीमत वाला लेना, सब की इजाज़त है, क्यूंकि जानवर मर जाने की सूरत में दूसरे कम क़ीमत वाले जानवर की क़ुरबानी करने से पेहले जानवर से किसी क़िस्म के मनाफ़ेअ़ ह़ासिल नहीं किए जा रहे और जब किसी क़िस्म के मनाफ़ेअ़ ह़ासिल नहीं किए जा रहे, तो अब कम क़ीमत वाले जानवर की क़ुरबानी में भी कोई ह़रज नहीं। हां, क़ुरबानी के लिए ख़रीदने के बाद ग़नी शख़्स अगर जानवर बदलना चाहे तो ह़ुक्म येही है कि उस जानवर से आला जानवर से बदलने की इजाज़त है, पेहले जानवर की मिस्ल या उस से कम क़ीमत वाले से बदलने की इजाज़त नहीं, मगर मर जाने की सूरत में येह ह़ुक्म नहीं है, बल्कि फ़ुक़हा ए किराम मुत़लक़न फ़रमाते हैं कि दूसरा कोई जानवर क़ुरबान करे और अपना वाजिब अदा करे, अलबत्ता बेहतर येह है कि अच्छा, फ़रबा (मोटा) जानवर ज़ब्ह़ किया जाए।

याद रहे कि येह मस्अला ग़नी के पेहले जानवर के मर जाने की सूरत में है, अलबत्ता चोरी या गुम होने और अय्यामे क़ुरबानी तक उसे दोबारा मिल जाने की सूरत में मस्अला जुदा है।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم



(क़िस्त : 03)

फ़रिश्ते दुआ ए मग़फ़िरत करते हैं

मौलाना मुहम्मद अफ़्ज़ल अ़त्तारी मदनी

नमाज़ **अल्लाह** करीम की जानिब से अपने बन्दों के लिए बहुत ही अ़ज़ीम तोहफ़ा है, क़ुरआनो हदीस में इस का बार बार हुक्म आया और त़रह़ त़रह़ से इस की फ़ज़ीलत व अहमियत बयान हुई, इन सब के साथ साथ **अल्लाह** की मज़ीद रेहमत येह (है) कि नमाज़ियों के बाज़ आमाल पर **अल्लाह** के मासूम फ़रिश्ते इन के लिए दुआए मग़फ़ेरत भी करते हैं चुनान्चे,

70 हज़ार फ़रिश्ते दुआए मग़फ़ेरत करते हैं : हुज़ूर नबिय्ये रेहमत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जब कोई शख़्स अपने घर से नमाज़ के लिए निकले और येह कलेमात पढ़े :"

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْاَلُكَ بِحَقِّ السَّائِلِیْنَ عَلَیْكَ وَبِحَقِّ مَمْشَایَ هٰذَا فَاِنِّیْ لَمْ اَخْرُجْ اَشَرًا وَّلَا بَطَرًا وَّلَا رِیَآءً وَّلَا سُمْعَةً خَرَجْتُ اِتِّقَآءَ سَخَطِكَ وَابْتِغَآءَ مَرْضَاتِكَ اَسْاَلُكَ اَنْ تُنْقِذَنِیْ مِنَ النَّارِ وَاَنْ تَغْفِرَ لِیْ ذُنُوْبِیْ اِنَّهٗ لَا یَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اَنْتَ

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** ! मैं तुझ से उस ह़क़ के वसीले से दुआ करता हूं जो साइलों का तुझ पर है और उस ह़क़ के तुफ़ैल जो मेरे इस चलने का है क्यूंकि मैं फ़ख़्र और ग़ुरूर और लोगों को दिखाने और सुनाने के लिए नहीं चला बल्कि मैं तो तेरी नाराज़ी से बचने और तेरी ख़ुशनूदी ह़ासिल करने निकला हूं, मैं तेरी बारगाह में अ़र्ज़ करता हूं कि मुझे जहन्नम की आग से बचा और मेरे गुनाह मुआ़फ़ फ़रमा क्यूंकि तू ही गुनाहों को बख़्शने वाला है।

तो **अल्लाह** करीम 70 हज़ार फ़रिश्ते मुक़र्रर फ़रमाता है जो उस के लिए दुआ ए मग़फ़ेरत करते हैं और **अल्लाह** करीम अपने वज्हे करीम के साथ उस की त़रफ़ मुतवज्जेह होता है यहां तक कि वोह शख़्स अपनी नमाज़ पूरी कर ले।[1]

ज़मीनो आस्मान का हर फ़रिश्ता दुआए मग़फ़ेरत करेगा : **अल्लाह** पाक ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की त़रफ़ वही फ़रमाई : ऐ मूसा ! मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और इन की उम्मत शाम के वक़्त चार रक्अ़त (यानी नमाज़े अ़स्र) अदा करेगी तो ज़मीनो आस्मान का हर मुक़र्रब फ़रिश्ता उस उम्मत के लिए इस्तिग़फ़ार करेगा और जिस के लिए मेरे फ़रिश्ते इस्तिग़फ़ार करेंगे मैं उसे अ़ज़ाब नहीं दूंगा।[2]

70 फ़रिश्ते दुआ ए मग़फ़ेरत के लिए मुक़र्रर : सरकारे नामदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमान है : जिस ने नमाज़े फ़ज्र जमाअ़त से पढ़ी फिर उसी जगह बैठा रहा और सूरए अन्आ़म की पेहली तीन आयात तिलावत कीं तो **अल्लाह** पाक उस के साथ सत्तर फ़रिश्ते मुक़र्रर फ़रमा देगा जो क़ियामत तक **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त की तस्बीह़ बयान करेंगे और उस शख़्स के लिए मग़फ़ेरत की दुआ करते रहेंगे।[3]

नमाज़ी के लिए फ़रिश्तों की तीन दुआएं : हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो बन्दा नमाज़ पढ़ कर उस जगह जब तक बैठा रेहता है, फ़रिश्ते उस के लिए इस्तिग़फ़ार करते रेहते हैं, उस वक़्त तक कि बे वुज़ू हो जाए या उठ खड़ा हो। मलाइका का इस्तिग़फ़ार उस के लिए येह है : اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لَهٗ यानी ऐ **अल्लाह** तू इस को बख़्श दे, اَللّٰهُمَّ ارْحَمْهُ यानी ऐ **अल्लाह** तू इस पर रेह़म कर, اَللّٰهُمَّ تُبْ عَلَيْهِ यानी ऐ **अल्लाह** इस की तौबा क़बूल कर।[4]"

फ़रिश्तों से दुआ ए मग़फ़ेरत करवाने वाले कलेमात : ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने फ़रमाया : जो शख़्स यूं कहे :

سُبْحٰنَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ وَتَبَارَكَ اللّٰهُ

तो एक फ़रिश्ता इन कलेमात को अपने परों के नीचे रख लेता है और इन्हें ले कर आस्मान की त़रफ़ चढ़ जाता है, वोह फ़रिश्तों के जिस गिरोह के पास से भी गुज़रता है तो वोह फ़रिश्ते इन कलेमात के केहने वाले के लिए दुआ ए मग़फ़ेरत करते हैं ह़त्ताकि फ़रिश्ता इन कलेमात को **अल्लाह** के हुज़ूर पेश कर देता है।[5]

(बक़िया अगले माह के शुमारे में.....اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ)

(1) مسند احمد، 17/247، حدیث:11156 (2) حلیۃ الاولیاء، 6/34 (3) روح المعانی، 7/98 (4) مسند ابی داؤد طیالسی، ص317، حدیث:2415 (5) مستدرک للحاکم، 3/204، حدیث:3642۔



बातें मेरे हुज़ूर की

(क़िस्त : 01)

صلَّی اللہ علیہ والہٖ وسلَّم

बे साया मेहबूब

मौलाना काशिफ़ शेहज़ाद अत्तारी मदनी

अल्लाह पाक ने रसूले पाक, साहिबे लौलाक صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को जो बे शुमार ख़ुसूसी शानें अ़ता फ़रमाई हैं उन में से एक येह है कि सूरज, चांद और चराग़ की रौशनी में आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का साया नहीं होता था ।[1]

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! सेंकड़ों साल से मुफ़स्सिरीन, मोह़द्दिसीन, शारेह़ीन और दीगर उ़लमा ए दीन अपनी किताबों में सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इस अ़ज़ीमुश्शान ख़ुसूसियत और फ़ज़ीलत का बयान करते आ रहे हैं । **अल्लाह** पाक की रेह़मत ह़ासिल करने के लिए इन बुज़ुर्गाने दीन के कुछ फ़रामीन और क़ुरआनो ह़दीस से दीगर दलाइल मुलाह़ज़ा फ़रमाइए :

क़ुरआनो ह़दीस से अ़दमे साया का सुबूत : क़ुरआने करीम की कई आयात और कसीर अह़ादीस से येह बात साबित है कि रेह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को **अल्लाह** पाक ने बे मिसाल बशरियत के साथ साथ नूरानियत से भी नवाज़ा है और येह बात भी ज़ाहिर है कि नूर का साया नहीं होता । इन दोनों बातों को मिलाने से नतीजा येह निकला कि नूर वाले आक़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم साए से पाक हैं और आप की नूरानियत पर दलालत करने वाली तमाम क़ुरआनी आयात और अह़ादीसे मुबारका इस बात की दलील हैं । हुसूले बरकत के लिए सिर्फ़ एक क़ुरआनी आयत और उस की तफ़्सीर मुलाह़ज़ा फ़रमाइए :

नूर आ गया : **अल्लाह** पाक का फ़रमाने आ़लीशान है : ﴿قَدْ جَآءَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ نُوْرٌ وَّ كِتٰبٌ مُّبِیْنٌ ۙ﴾ **तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान :** बेशक तुम्हारे पास **अल्लाह** की त़रफ़ से एक नूर आ गया और एक रौशन किताब ।[2] इस आयते करीमा में नूर के मुरादी माना बयान करते हुवे इमाम जलालुद्दीन सुयूत़ी शाफ़ेई رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : هُوَ النَّبِیّ صَلَّی اللہ عَلَیْہِ وَسَلَّم यानी नूर से मुराद नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हैं ।[3]

नूर का साया नहीं होता : प्यारे इस्लामी भाइयो ! नूर का साया न होना एक मारूफ़ बात है और कसीर बुज़ुर्गाने दीन ने इसे बयान फ़रमाया है, यहां सिर्फ़ 4 बुज़ुर्गों के फ़रामीन पेश किए जाते हैं : 1 शिहाबुल मिल्लते वद्दीन ह़ज़रते अ़ल्लामा अह़मद बिन मुह़म्मद ख़फ़्फ़ाज़ी मिस्री ह़नफ़ी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं :

اَلْاَنْوَارُ شَفَّافَۃٌ لَطِیْفَۃٌ لَاتَحْجِبُ غَیْرَھَا مِنَ الْاَنْوَارِ فَلَا ظِلَّ لَھَا

यानी अन्वार शफ़्फ़ाफ़ और लत़ीफ़ होते हैं, अपने ग़ैर तक रौशनी के पहुंचने में रुकावट नहीं बनते इस लिए इन का साया नहीं होता ।[4] 2 अ़ल्लामा मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल बाक़ी ज़ुरक़ानी मालिकी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ तेह़रीर फ़रमाते हैं : اِنَّ النُّوْرَ لَا ظِلَّ لَہٗ यानी बेशक नूर का साया नहीं होता ।[5]

3 शैख़े मोहक़्क़िक़ शैख़ अ़ब्दुल हक़ मोहद्दिसे देहल्वी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ लिखते हैं : نُور را سَایہ نَبی باشَد यानी नूर का साया नहीं होता ।[6] 4 इमामे एहले सुन्नत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : नूर के लिए साया नहीं । मज़ीद लिखते हैं : साया उस जिस्म का पड़ेगा जो कसीफ़ हो और अन्वार को अपने मा वरा से ह़ाजिब (यानी अपने आगे मौजूद चीज़ तक रौशनी के पहुंचने में रुकावट बने), नूर का साया पड़े तो तन्वीर (यानी रौशनी) कौन करे ? इस लिए देखो आफ़्ताब (यानी सूरज) के लिए साया नहीं ।[7]

तू है साया नूर का हर उ़ज्व टुकड़ा नूर का
साए का साया न होता है न साया नूर का[8]

बुज़ुर्गाने दीन के फ़रामीन : प्यारे इस्लामी भाइयो ! सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अ़ज़ीम ख़ुसूसियत व फ़ज़ीलत "साया न होने" को नक़्ल करने वाले बुज़ुर्गाने दीन और इन के बयान कर्दा दलाइल इतने ज़्यादा हैं कि इन्हें एक मज़मून में ज़िक्र करना बहुत मुश्किल है,

ह़ुसूले बरकत के लिए कुछ दलाइल मुलाह़ज़ा फ़रमाइए :

1 एक मौक़े़अ़ पर ह़ज़रते सैयदना ज़ुन्नूरैन उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ किया : اِنَّ اللّٰہَ مَا اَوْقَعَ ظِلَّکَ عَلَی الْاَرْضِ لِئَلَّا یَضَعَ اِنْسَانٌ قَدَمَہٗ عَلٰی ذٰلِکَ الظِّلِّ यानी बेशक **अल्लाह** पाक ने आप के साए को ज़मीन पर न पड़ने दिया ताकि कोई इन्सान उस साए पर पाउं न रखे ।[9] एक रिवायत के मुत़ाबिक़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ यूं अ़र्ज़ गुज़ार हुवे : आप का साया ज़मीन पर नहीं पड़ता, ताकि कहीं ऐसा न हो कि नापाक ज़मीन पर पड़ जाए ।[10]

2 इमाम बुख़ारी व इमाम मुस्लिम के उस्ताज़ुल उस्ताज़ ह़ाफ़िज़ुल ह़दीस इमाम अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़, तबए़ ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते सैयदना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक और इमाम इब्ने जौज़ी رحمہم اللہ से मन्क़ूल है कि सह़ाबी ए रसूल ह़ज़रते सैयदना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने इरशाद फ़रमाया : لَمْ یَکُنْ لِرَسُوْلِ اللّٰہِ صلی اللہ علیہ وسلم ظِلٌّ यानी रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का साया नहीं था ।

मज़ीद फ़रमाते हैं :

وَلَمْ یَقُمْ مَعَ شَمْسٍ قَطُّ اِلَّا غَلَبَ ضَوْءُہٗ ضَوْءَ الشَّمْسِ وَلَمْ یَقُمْ مَعَ سِرَاجٍ قَطُّ اِلَّا غَلَبَ ضَوْءُہٗ ضَوْءَ السِّرَاجِ

यानी रसूले ख़ुदा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब सूरज के सामने ख़ड़े होते तो आप का मुबारक नूर सूरज की रौशनी पर ग़ालिब आ जाता और चराग़ के सामने ख़ड़े होते तो चराग़ की रौशनी पर ग़ालिब आ जाता ।[11] नूरे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सूरज और चराग़ के नूर पर ग़ालिब आने के दो माना हो सकते हैं : (1) नूरे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने सूरज और चराग़ की रौशनियां फीकी पड़ जातीं जैसे सूरज की रौशनी के सामने चराग़ की रौशनी (2) उस मुबारक नूर के सामने इन दोनों की रौशनी बिल्कुल ख़त्म हो जाती जैसे सूरज के सामने सितारों की रौशनी ।[12]

3 आ़रिफ़ बिल्लाह इमाम ह़ाफ़िज़ अबू अ़ब्दुल्लाह मुह़म्मद बिन अ़ली ह़कीम तिरमिज़ी शाफ़ेई رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते सैयदना ज़कवान رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत करते हैं :

اِنَّ رَسُوْلَ اللّٰہ صلی اللہ علیہ وسلم لَمْ یَکُنْ یُرٰی لَہٗ ظِلٌّ فِیْ شَمْسٍ وَّلَا قَمَرٍ

यानी सूरज और चांद की रौशनी में रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का साया नज़र नहीं आता था ।[13]

अ़दीमुल मिस्ल व लासानी है वोह ज़ाते मुबारक यूं
*बनाया ही नहीं **अल्लाह** ने साया मुह़म्मद का*[14]

4 शैख़ुल इस्लाम इमाम अह़मद बिन मुह़म्मद इब्ने ह़जर मक्की हैतमी शाफ़ेई رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ लिखते हैं : सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सरापा नूर होने की ताईद इस बात से भी होती है कि जब आप दिन या रात में सूरज या चांद की रौशनी में चलते तो आप का साया न पैदा होता । इस की वज्ह येह है कि साया सिर्फ़ कसीफ़ (गन्दे) जिस्म का ज़ाहिर होता है और **अल्लाह** पाक ने अपने मेह़बूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को तमाम जिस्मानी कसाफ़तों और ग़लाज़तों से पाकीज़ा फ़रमा कर आप को सरापा नूर बना दिया था इस लिए आप का साया बिल्कुल भी न था ।[15]

हक़ ने इन्हें बे मिस्ल बनाया, पड़ता ज़मीं पर क्यूंकर साया
नूरे ख़ुदा आज़ाए मुहम्मद صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم[16]

शैतान के धोके में मत आएं : प्यारे इस्लामी भाइयो ! आप ने मुलाहज़ा फ़रमाया कि साये से पाक होना रेहमते आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की एक ऐसी अज़ीम फ़ज़ीलत व ख़ुसूसियत है जो आप को **अल्लाह** पाक की अ़ता से हासिल हुई । ख़बरदार ! शैतान के बेहकावे में आ कर **अल्लाह** के हबीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के किसी मोजिज़े और ख़ुसूसियत से मुतअ़ल्लिक़ शुकूको शुब्हात का शिकार हरगिज़ न हों । हज़रते सैयदना इमाम अ़ब्दुल वह्हाब शारानी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : इस बात को जान लो कि हर वोह बात जिस से रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अ़ज़मतो शान ज़ाहिर होती हो, किसी के लिए उस में बहसो मुबाहसा करना या मख़्सूस क़िस्म की दलील का मुत़ालबा करना मुनासिब नहीं है ।[17]

अ़क़्ल के घोड़े न दौड़ाएं : ऐ आशिक़ाने रसूल ! बुज़ुर्गाने दीन की करामात और सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मोजिज़ातो ख़ुसूसियात के मुआमले में अ़क़्ल के घोड़े दौड़ाना और इन बातों को अ़क़्ल के तराज़ू पर तोलना दुन्या ओ आख़ेरत में नुक़्सान का बाइ़स बन सकता है । याद रखें ! **अल्लाह** करीम ने अपने प्यारे हबीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को बे नज़ीर, लासानी और बे मिसाल बनाया है इस लिए आप को दीगर इन्सानों पर क़ियास करना हरगिज़ दुरुस्त नहीं ।

इमामे एहले सुन्नत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : वोह बशर हैं मगर आलमे उ़लवी से लाख दर्जा अशरफ़ो अह़सन, वोह इन्सान हैं मगर अरवाहो मलाइका से हज़ार दर्जा अल्त़फ़ (यानी रूहों और फ़रिश्तों से कहीं ज़्यादा लत़ीफ़ व नूरानी), वोह ख़ुद फ़रमाते हैं : 1 لَسْتُ كَهَيْئَتِكُمْ मैं तुम जैसा नहीं ।[18] 2 لَسْتُ كَهَيْئَتِكُمْ मैं तुम्हारी हैअत पर नहीं ।[19] 3 أَيُّكُمْ مِثْلِي तुम में कौन मुझ जैसा है ।[20] फिर इस ख़याले फ़ासिद पर कि हम सब का साया होता है इन का भी होगा तो सुबूते साया का क़ाइल होना, अ़क़्ल व ईमान से किस दर्जा दूर पड़ता है ।[21]

इन्कार करने वाले का हुक्म : ग़ज़ाली ए ज़मां हज़रते अ़ल्लामा मौलाना सैयद अह़मद सईद काज़मी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : अ़क़ाइदो आमाल से मुतअ़ल्लिक़ हमारे बे शुमार ऐसे मसाइल हैं जिन्हें हम जज़्मो यक़ीन के मर्तबे में शुमार नहीं करते, बल्कि मह़ज़ फ़ज़ीलतो मन्क़बत के दर्जे में मानते हैं, ह़त्ताकि अगर कोई नेक दिल त़ालिबे हक़ मह़ज़ दलील न मिलने की वज्ह से हमारे इस मस्अले को तस्लीम न करे तो हम उसे बद अ़क़ीदा नहीं केहते, न उस के ह़क़ में बुरा भला केहना जाइज़ समझते हैं, बशर्ते कि उस का इन्कार रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अ़दावत और बुग़्ज़ो कीना की वज्ह से न हो । नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के जिस्मे अक़्दस का साया न होना भी बाबे फ़ज़ाइलो मनाक़िब से है जिस पर कुफ़्रो ईमान का मदार (यानी बुन्याद) नहीं ।[22]

अल्लाह पाक से दुआ है कि अपने बे साया मेह़बूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के तुफ़ैल हमें दोनों जहां में अपनी रेहमतों का साया अ़ता फ़रमाए ।

اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صلَّى الله عليه واٰله وسلَّم

(बक़िया अगले माह के शुमारे में.... اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ)

---

(1) خصائص کبریٰ، 1/116، مدارج النبوۃ، 1/21 (2) پ6، المائدۃ: 15 (3) تفسیر جلالین، 2/33 (4) نسیم الریاض، 4/335 (5) زرقانی علی المواہب، 5/525 (6) مدارج النبوۃ، 1/21 (7) فتاویٰ رضویہ، 30/706 (8) حدائقِ بخشش، ص244 (9) تفسیر نسفی، ص772 (10) مدارج النبوۃ، 2/161 (11) الوفا باحوال المصطفیٰ، 2/19، زرقانی علی المواہب، 5/525، الجزء المفقود من المصنف لعبد الرزاق، ص56 (12) فتاویٰ رضویہ، 30/708 مفہوماً (13) خصائص کبریٰ، 1/116، مواہب لدنیہ، 2/71 (14) قبالۂ بخشش، ص51 (15) المنح المکیۃ فی شرح الہمزیۃ، ص86 (16) قبالۂ بخشش، ص160 (17) کشف الغمۃ، 2/53 (18) مسند احمد، 9/132، حدیث: 23563 (19) بخاری، 1/633، حدیث: 1922 (20) بخاری، 4/352، حدیث: 6851 (21) فتاویٰ رضویہ، 30/725 (22) مقالاتِ کاظمی، 4/57۔



बे बसी

(Helplessness)

मौलाना अबू रजब मुहम्मद आसिफ़ अत्तारी मदनी

एक यूनानी बिज़नेस मेन अरस्तू अवनासिस बहुत बड़ी शिपिंग कंपनी का मालिक था, 1975 ईसवी में उस के मरने के बाद एक टीवी चैनल ने उस पर डॉक्यूमेन्ट्री (दस्तावेज़ी वीडियो) बनाई जिस में एक इन्केशाफ़ ने लोगों को हिला कर रख दिया, वोह उस की बे बसी पर हैरान रेह गए कि इतना अमीरो कबीर आदमी एक अ़जीब बीमारी का शिकार था कि वोह अपनी पलकों (Eyelash) को अपनी मर्ज़ी से नहीं उठा सकता था, वोह दुन्या के क़ाबिल तरीन डॉक्टर्ज़ से इलाज करवाने के बाद भी शिफ़ायाब न हो सका। दिन के वक़्त उस के पपोटों (आंखों के ऊपर वाले हिस्सों) पर सोल्यूशन टेप लगा दी जाती जिस के लगाने से दिन भर उस की आंखें देख सकती थीं, रात को वोह टेप उतार दी जाती तो पलकें उस की आंखों पर गिर जातीं और वोह सो जाता। अगले दिन दोबारा उस को टेप लगा दी जाती। अवनासिस से पूछा गया कि तुम दुन्या के अमीर तरीन शख़्स हो ! क्या तुम्हारी कोई ऐसी ख़्वाहिश है जो अभी तक न पूरी हुई हो तो अवनासिस केहने लगा : "काश ! मैं सिर्फ़ एक बार अपनी पलकों को अपनी मर्ज़ी से हरकत दे सकूं, चाहे मेरी सारी दौलत चली जाए।"

माहनामा फ़ैज़ाने मदीना के क़ारेईन ! इन्सान को अपनी ताक़त व तवानाई के साथ साथ बे बसी पर भी नज़र रखनी चाहिए। इन्सान फ़ज़ाओं में जहाज़ के ज़रीए परवाज़ करता है, आबदोज़ में बैठ कर समुन्दरों की तेह में उतर जाता है, पहाड़ों का सीना चीर कर टनल्ज़ (सुरंगें) बना लेता है, ज़ेरे ज़मीन घर बना कर उस में रेह लेता है, मसनूई (कृत्रिम) रौशनियों के ज़रीए रात को दिन बना लोता है, एसी के ज़रीए गर्म मौसम में कमरे को ठन्डा और हीटर के ज़रीए सर्द (ठन्डे) मौसम में कमरे को गर्म कर लेता है, कराटे का वार कर के पथ्थरों और बर्फ़ की सिलों को तोड़ देता है, हाथों की ताक़त से लोहे के बरतनों को तोड़ मरोड़ देता है और न जाने कैसे कैसे हैरान कुन काम कर गुज़रता है, लेकिन येही इन्सान कभी इतना बे बस और मजबूर हो जाता है कि ❁ थोड़ा सा फ़ासला भी अपने क़दमों पर चल कर तै नहीं कर सकता ❁ चाए की प्याली या पानी के ग्लास को अपने हाथों में संभाल नहीं सकता ❁ सेहत मन्द इन्सान का दिल एक दिन में एक लाख तीन हज़ार छे सौ अस्सी मरतबा धड़कता है और अगर किसी वज्ह से धड़कनों की तरतीब कम या ज़्यादा हो जाए तो जान पर बन जाती है ❁ इन्सान तरह तरह की नेमतें खाता और लुत्फ़ उठाता है अगर इस की आंतों की हरकत रुक जाए या मसाने पानी निकालने से इन्कार कर दे तो ज़िन्दगी कितनी ख़ौफ़नाक हो जाएगी इस का हम तसव्वुर भी नहीं कर सकते, एक डॉक्टर का केहना है कि मेरे पास ऐसे भी मरीज़ आते हैं जिन की आंतें काट कर मेदे के मुंह पर नाली लगा कर साईड पर प्लास्टिक बेग लटका दिया जाता है अब सारा दिन फ़ुज़ला (टोइलेट) उस बेग में जम्अ होता रेहता है और मरीज़ सारा दिन उस बेग के साथ ज़िन्दगी गुज़ारने पर मजबूर होता है ❁ जिस बेचारे की किसी हादसे में हड्डियां टूट जाएं तो उस के बाज़ूओं और टांगों पर प्लस्तर लगा

दिया जाता है, वोह इन्सान जो सोते वक़्त अपनी मर्ज़ी से करवटें लेता था, अब करवट बदलने जैसी नेमत से भी मेहरूम हो जाता है ❁ अगर किसी की ज़ाइक़ा चखने की सलाहियत जाती रहे तो उस की ज़िन्दगी बे ज़ाइक़ा हो जाती है क्यूंकि पूरी मेडीकल साइन्स ज़बान जैसा आला बनाने से क़ासिर है जो लीमूं की तुरशी (खटास) और आम (केरी) की मिठास में फ़र्क़ मेहसूस कर सके ❁ जिस की किसी वज्ह से बीनाई (Sight) जाती रहे उस की ज़िन्दगी में कैसा अन्धेरा हो जाता है वोही जानता है ❁ गाड़ी का ब्रेक फ़ेल होने, कम्प्यूटर से डाटा डीलीट होने या दौराने ड्रायविंग नींद आने पर इन्सान बे बसी की कैसी तस्वीर नज़र आता है ! ❁ बच्चा गुब्बारा फटने पर, नौजवान बाईक पंकचर होने और कार वाला इन्जन की गेस किट जलने पर कैसा बे बस होता है वोही समझ सकता है ❁ हाल ही में एक मुल्क में खुली फ़ज़ा में मज़े से सांस लेने वाले जब कोरोना का शिकार हो कर मसनूई (कृत्रिम) ऑक्सीजन के लिए फ़ुटपाथों पर तड़प रहे थे तो इन की बे बसी इ़ब्रत अंगेज़ थी ❁ तारीख़ में देखा जाए तो नमरूद जैसा कर्रोफ़र वाला बादशाह एक मामूली मच्छर के हाथों अन्जाम को पहुंचा जो उस के दिमाग़ में घुस गया था ❁ फ़िरऔन जैसा जाबिरो ज़ालिम कैसी बे बसी के आ़लम में अपने लश्कर समेत दरिया ए नील में डूब कर मरा।

देखा जाए तो इन्सान की बे बसी का सफ़र उस के बचपन से शुरूअ़ होता है जब वोह खाने पीने वग़ैरा में दूसरों का मोहताज होता है येह अलग बात है कि बच्चे को अपनी बे बसी का शुऊ़र नहीं होता और बुढ़ापे में अपनी इन्तेहा को पहुंचता है जब उस की हड्डियां कमज़ोर पड़ जाती हैं। फिर जब इन्सान को मौत आती है तो नज़्अ़ में शदीद बे बसी का आ़लम होता है मौत का एक झटका तल्वार के हज़ार वार से सख़्त है लेकिन वोह अपनी ज़बान बन्द होने की वज्ह से किसी से अपनी बे बसी शेयर भी नहीं कर सकता, मुर्दे की बे बसी उस को ग़ुस्ल देने वाले से पूछिए कि वोह अपने जिस्म को ज़रा सी भी हरकत नहीं दे सकता फिर उस का जनाज़ा बे बसी की दास्तान सुनाते हुवे लोगों के कंधों पर क़ब्रिस्तान की तरफ़ जाता है जहां उसे क़ब्र में बे बस और तन्हा छोड़ दिया जाता है, इस के बाद क़ियामत में पुल सिरात पर, मैदाने मेहशर में इन्सान की बे बसी का क्या आ़लम होगा इस के तसव्वुर से ही दिल कांप उठता है।

आख़री बात : जब इन्सान इतना बे बस व कमज़ोर है तो इसे तमाम जहानों के पैदा करने वाले रब्बे जलील की ना फ़रमानी ज़ेब नहीं देती क्यूंकि अल्लाह पाक की ना फ़रमानी का अन्जाम जहन्नम के अ़ज़ाबात हैं और जहन्नम के अ़ज़ाबात इस क़दर ख़ौफ़नाक और देहशत नाक हैं कि हम सोच भी नहीं सकते, कई अहादीस व रिवायात के मुताबिक़ दोज़ख़ियों को ज़िल्लतो रुस्वाई के आ़लम में दाख़िले जहन्नम किया जाएगा, वहां दुन्या की आग से सत्तर (70) गुना तेज़ आग होगी जो खालों को जला देगी, हड्डियों का सुरमा बना देगी, इस पर शदीद धुवां जिस से दम घुटेगा, अन्धेरा इतना कि हाथ को हाथ सुझाई (दिखाई) न दे, भूक प्यास से निढाल बेड़ियों में जकड़े जहन्नमी को जब पीने के लिए सख़्त खौलता हुवा पानी दिया जाएगा तो मुंह के क़रीब करते ही उस की तपिश से मुंह की खाल झड़ जाएगी, खाने को कांटेदार थोहड़ मिलेगा, लोहे के बड़े बड़े हथोड़ों से उसे पीटा जाएगा। ज़रा तसव्वुर कीजिए कि अगर हमें जहन्नम में डाल दिया गया तो हमारा येह नर्मो नाज़ुक बदन उस के हौलनाक अ़ज़ाबात को किस त़रह़ बरदाश्त कर पाएगा ? ह़ालांकि येह तो इतना बे बस और कमज़ोर है कि किसी तक्लीफ़ की शिद्दत जब अपनी इन्तेहा को पहुंचती है तो येह बेहोश हो जाता है या फिर बे ह़िसो ह़रकत (Numb and Motionless) हो जाता है। जबकि जहन्नम में पहुंचने वाली तकालीफ़ की शिद्दत के सबब इन्सान पर न तो बेहोशी त़ारी होगी और न ही उसे मौत आएगी। आह ! वोह वक़्त कितनी बे बसी का होगा ! क्या अब भी हमें गुनाहों से वेहशत मेहसूस नहीं होगी ? क्या अब भी हमारे दिल में नेकियों की महब्बत नहीं बढ़ेगी ? आह ! अगर रेहमते खुदावन्दी शामिले ह़ाल न हुई तो हमारा क्या बनेगा ?

हर ख़त़ा तू दर गुज़र कर बेकसो मजबूर की
हो इलाही ! मग़फ़ेरत हर बेकसो मजबूर की

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 96)

अल्लाह करीम हमें दुन्या ओ आख़ेरत में आ़फ़ियत, राह़त और आसानी नसीब फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم



नबिय्ये रेह़मत صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

(क़िस्त : 07)

मौलाना अबुन्नूर राशिद अ़ली अ़त्तारी मदनी

गुज़श्ता से पैवस्ता (पिछले अंक से जारी) . . . . . .

14 اَنَا نَبِیُّ الرَّحْمَةِ، وَنَبِیُّ التَّوْبَةِ

तर्जमा : मैं रेह़मत वाला नबी और तौबा का नबी हूं ।(1)

मेह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त के इस पुर अ़ज़मत फ़रमान में आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दो मुबारक अस्मा **''नबिय्युर्रह़मत''** और **''नबिय्युत्तौबह''** का ज़िक्र है, आप की रेह़मतो इ़नायत का मुख़्तसर ज़िक्र मई और जून 2021 ईसवी के शुमारों (अंकों) में फ़रमाने पाक "نَبِیُّ الرَّحْمَةِ" और "نَبِیُّ التَّوْبَةِ" के तह़त किया गया है, जबकि इस्मे गिरामी **''नबिय्युत्तौबह''** की मुख़्तसर तशरीह़ यहां मुलाह़ज़ा कीजिए :

तौबा बन्दे और **अल्लाह** के दरमियान नाते को जोड़ने और मज़बूत करने का पेहला मर्ह़ला या दरवाज़ा है, पिछली उम्मतों में गुनाहों की सज़ा बहुत सख़्त थी और उम्मतों में तो अगर कोई रात को गुनाह करता तो सुब्ह़ उस के दरवाज़े पर लिखा होता था ।(2)

येह भी नबिय्ये रेह़मत, माहे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अ़ज़ीमुश्शान व अ़ज़मत ही का ह़िस्सा है कि आप के सदक़े से काइनात को तौबा जैसी नेमते कुब्रा नसीब हुई । जी हां ! तौबा वाक़ेई बहुत बड़ी नेमत है, भला कौन सा बादशाह, हुक्मरान, साह़िबे इक़्तेदार, साह़िबे मन्सबो सरवत ऐसा है कि जिस की बन्दा एक से दूसरी मर्तबा कोई ना फ़रमानी कर दे और वोह उस को मुआ़फ़ कर दे, कोई बड़े से बड़ा मेहरबान भी होगा तो पेहली बात येह (है) कि **अल्लाह** व रसूल की अ़त़ा ही से होगा और दूसरी बात येह (है) कि वोह भी कितना सब्र करेगा, बिल आख़िर दूसरी, तीसरी या चौथी ना फ़रमानी पर निकाल बाहर ही करेगा, अपने दरवाज़े ना फ़रमान पर हमेशा के लिए बन्द कर देगा, लेकिन क़ुरबान जाइए **''नबिय्युत्तौबह''** जनाबे मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के करीम रब की अ़त़ा पर कि अगर कोई दिन में सत्तर (70) बार भी गुनाह कर बैठे और सत्तर (70) बार तौबा करे तो भी **अल्लाह** करीम ''करम'' फ़रमाता है । मगर याद रखिए ! इस इरादे से गुनाह करना कि बाद में तौबा कर लूंगा येह अशद्द कबीरा यानी सख़्त तरीन कबीरा गुनाह है बल्कि तौबा के इरादे से गुनाह करना कुफ़्र है ।(3)

तौबा सिर्फ़ गुनाह से ही नहीं की जाती, बल्कि येह तो बारगाहे इलाही में ह़ाज़िर होने का सवाल है, **अल्लाह** के नेक बन्दे दिन में कई कई बार तौबा करते, ख़ुद जनाबे सरवरे काइनात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم भी दिन में सौ-सौ बार इस्तिग़फ़ार फ़रमाते थे ।(4)

इमाम ग़ज़ाली رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ नक़्ल फ़रमाते हैं कि **अल्लाह** करीम के हुक़ूक़ बन्दों पर इस क़दर हैं कि इन का अदा करना मुमकिन नहीं है लेहाज़ा चाहिए कि हर बन्दा जब उठे तो तौबा करे और रात को तौबा कर के सोए ।(5)

तौबा की जिस क़दर तरग़ीब रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाई, कहीं नहीं मिलती, क़ुरआने करीम और अह़ादीसे मुबारका में जगह जगह तौबा की तरग़ीब है चुनान्चे चन्द आयातो रिवायात का मा ह़स्ल मुलाह़ज़ा कीजिए :

तौबा फ़लाह़ो कामयाबी पाने का नुस्ख़ा है ।(6) तौबा करने वाला **अल्लाह** का मेह़बूब है ।(7) तौबा करने वाला रेह़मते इलाही का मुस्तह़िक़ है ।(8) तौबा करने वाले की बुराइयां नेकियों में तब्दील हो जाती हैं ।(9) तौबा करने वाले के गुनाह मिट जाते हैं ।(10) तौबा करने वाले दाख़िले जन्नत होंगे ।(11) तौबा करना बेहतरीन इन्सान की अ़लामत है ।(12) तौबा मुश्किलात की आसानी, ग़म से आज़ादी और बे ह़िसाब रिज़्क़ की अ़त़ा का ज़रीआ़ है ।(13) तौबा दिल का ज़ंग दूर करती है ।(14)

नबिय्युत्तौबह जनाबे मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में बड़े बड़े गुनाहगार आए, बड़े बड़े ज़ालिम आए, वोह भी आए जिन्हों ने अपनी

बेटियों तक को ज़िन्दा दफ़्न कर दिया था, वोह भी आए जिन्हों ने मक्कए मुकर्रमा के 13 सालह दौरे नबुव्वत में ज़ुल्मो जब्र की हर ह़द पार कर दी थी, वोह भी आए जिन्हों ने सह़ाबा ए किराम और अक़्रिबा ए उ़ज़्ज़ाम पर ज़ुल्मो सितम के पहाड़ तोड़े थे, लेकिन क़ुरबान जाइए आप की शाने करीमी व अ़फ़्व पर कि आप ने उन को मुआ़फ़ कर दिया और तौबा क़बूल फ़रमाई ।

ह़ज़रते इ़करिमा जो कि अबू जहल के बेटे हैं । क़बूले इस्लाम से पेहले जब मक्कए मुकर्रमा फ़त्ह़ हुवा तो येह भाग कर यमन चले गए लेकिन इन की बीवी ''उम्मे ह़कीम'' ने इस्लाम क़बूल कर लिया और अपने शौहर इ़करिमा के लिए बारगाहे रिसालत में मुआ़फ़ी की दरख़्वास्त पेश की तो रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इन की दरख़्वास्त को क़बूल फ़रमाते हुवे ह़ज़रते इ़करिमा को मुआ़फ़ फ़रमा दिया और फिर जब बारगाहे रिसालत में आ कर इन्हों ने तौबा की तो सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इन की तौबा क़बूल फ़रमाई, सिर्फ़ येही नहीं बल्कि जब ह़ज़रते इ़करिमा सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुवे तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इन के लिए जल्दी से खड़े हो गए और ह़ज़रते इ़करिमा की तौबा का इस क़दर इकराम फ़रमाया कि सह़ाबा ए किराम से पेहले ही फ़रमा दिया : तुम्हारे पास इ़करिमा मोमिन हो कर आ रहे हैं उन के सामने उन के बाप अबू जहल को बुरा भला न केहना ।[15]

''कअ़ब बिन ज़ुहैर'' बड़े पाए के शाइ़र थे, इन के बारे में क़त्ल का ऑर्डर जारी हो चुका था, फ़रमाया गया था कि जो भी इन्हें देखे क़त्ल कर दे, इन के भाई ह़ज़रते बुजैर बिन ज़ुहैर जो कि इस्लाम ला चुके थे इन्हों ने आप को ख़त़ लिखा और बताया कि अगर तुम इस्लाम ले आओ तो रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुआ़फ़ कर देंगे, चुनान्चे येह रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुवे तो रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इन की तौबा को भी क़बूल फ़रमाया, बारगाहे रिसालत से अमान पा कर इन्हों ने एक क़सीदा शाने सरवरे काइनात صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में पेश किया, जिसे क़सीदा ''बिन्ते सआ़द'' कहा जाता है, इसे ''क़सीदए बुर्दा'' भी केहते हैं क्यूंकि रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने क़सीदा सुन कर इन्हें अपनी मुबारक चादर अ़त़ा फ़रमाई ।[16]

इस क़सीदे के दो अश्आ़र मुलाह़ज़ा कीजिए :

اُنْبِئْتُ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ اَوْعَدَنِيْ وَالْعَفْوُ عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ مَاْمُوْلُ

اِنِّيْ اَتَيْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ مُعْتَذِرًا وَالْعُذْرُ عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ مَقْبُوْلُ

मुझे ख़बर पहुंची कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मेरे लिए सज़ा का ह़ुक्म फ़रमाया है और रसूल के यहां मुआ़फ़ी की उम्मीद की जाती है और मैं रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ह़ुज़ूर माज़ेरत करता ह़ाज़िर हुवा और रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में उ़ज़्र क़बूल किया जाता है ।[17]

''वह़शी'' जिन्हों ने जंगे उ़ह़ुद में सैयदुश्शोहदा ह़ज़रते ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को शहीद किया था । येह भी फ़त्ह़े मक्का के दिन भाग कर त़ाइफ़ चले गए थे मगर फिर त़ाइफ़ के एक वफ़्द के हमराह बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हो कर मुसलमान हो गए । ह़ुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इन की भी तौबा क़बूल फ़रमाई, ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के ज़मानए ख़िलाफ़त में जब झूटे मुद्द ए नबुव्वत मुसैलमा कज़्ज़ाब से एहले इस्लाम की जंग हुई तो ह़ज़रते वह़शी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه भी अपना नेज़ा ले कर जेहाद में शामिल हुवे और मुसैलमा कज़्ज़ाब को क़त्ल किया ।[18]

अल्लाह करीम हमें भी हमेशा तौबा करते रेहने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए और हमारी तौबा को दरजए क़बूलियत अ़त़ा फ़रमाए, आमीन ।

ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इस्मे गिरामी **''नबिय्युत्तौबह''** के दिलचस्प और ईमानो महब्बत को गरमा देने वाले कुछ इ़ल्मी निकात अगले माह के शुमारे में पेश किए जाएंगे.....اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

---

(1)شمائل ترمذی،ص214،حدیث:361(2)نور الانوار، ص175 (3)پردے کے بارے میں سوال جواب،ص302 (4)مسلم،ص1111، حدیث:6858 (5)کیمیائے سعادت، 2/763 (6)پ18،النور:31 (7)پ2، البقرۃ:222 (8)پ4،النسآء:17،پ6،المآئدہ:39(9)پ19،الفرقان:70(10)پ28، التحریم:8(11)پ16،مریم:60(12)ابن ماجہ،4/491،حدیث:4251 (13)ابو داؤد،2/122، حدیث:1518 (14)مجمع البحرین، 4/272، حدیث: 4739 (15)امتاع الاسماع، 1/398،دلائل النبوۃ للبیہقی، 5/98 (16)امتاع الاسماع،2/88 (17)المجموعۃ النبہانیۃ فی المدائح النبویۃ،3/6 (18)سبل الہدیٰ والرشاد،4/217۔



दिमश्क़ शेहर का एक मन्ज़र

रौशन सितारे

ह़ज़रते ज़ह़्ह़ाक बिन क़ैस رضی اللہ عنہ

मौलाना अ़दनान अह़मद अ़त़्तारी मदनी

मश्हूर सह़ाबी ए रसूल ह़ज़रते अबू उनैस ज़ह़्ह़ाक बिन क़ैस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की पैदाइश नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ाहिरी वफ़ात से तक़रीबन सात साल पेहले हुई ।[1] आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का शुमार कम उ़म्र और फ़ुक़हा सह़ाबा में होता है ।[2] **परेशान को मज़ीद परेशान न करो :** आप अपना एक वाक़िआ़ ख़ुद बयान फ़रमाते हैं कि एक मरतबा दौराने सफ़र मुझे ऊंघ आ गई तो मैं किसी और रास्ते पर निकल गया और वोह ऊंट भी खो गया जिस पर पानी रखा हुवा था, मुझे सख़्त प्यास लगी तो मैं ने अपने साथी को पानी तलाश करने भेजा और ख़ुद रास्ते के बीच में खड़ा रहा, अचानक मुझे एक आदमी दिखाई दिया, मैं ने उस से पानी मांगा तो उस ने (मेरी ह़ालत और बेचैनी को देखते हुवे) कहा : क़ीमत मिले बग़ैर पानी नहीं दूंगा । मैं ने कहा : क्या क़ीमत है ? उस ने (मेरी परेशानी और मुसीबत से फ़ाइदा उठाते हुवे) कहा : 100 दीनार ! मैं ने कहा : मेहमान को पानी पिलाना, खाना खिलाना और उस की इ़ज़्ज़त करना क्या तुम पर लाज़िम नहीं है ? उस ने जवाब दिया : हम कभी येह काम करते हैं और कभी नहीं करते, मैं ने कहा : मुझे तो लग रहा है कि तुम ने येह काम कभी भी नहीं किया, फिर मैं ने 100 दीनार की ज़मानत दी और अपनी कमान उस के पास गिरवी रखवा दी, वोह पानी की त़रफ़ मुड़ा और दौड़ लगा दी ताकि मेरे लिए पानी लाए, मैं ने (दिल में) कहा : मुझे अब इस की ज़रूरत नहीं, मैं उस जगह के क़रीब गया तो वहां लोग पानी के पास जम्अ़ थे, मैं ने उन से पानी मांगा तो एक बूढ़े आदमी ने अपनी बेटी से कहा : इसे पानी पिला दो, वोह मेरे पास पानी और दूध ले आई जिसे पी कर मैं ने अपनी प्यास बुझाई । इतने में वोह पेहला शख़्स आ गया और मुझ से केहने लगा : मैं ने तुम्हारी प्यास बुझाई है और तुम मेरे ह़क़ को ले जा रहे हो मैं तुम्हें उस वक़्त तक नहीं छोड़ूंगा जब तक 100 दीनार पूरे वुसूल न कर लूं, (शोर सुन कर) सब लोग मेरे इर्द गिर्द जम्अ़ हो गए, मैं ने कहा : येह बड़ा घटिया आदमी है इस ने मेरे साथ ऐसा बुरा सुलूक किया है और इस बूढ़े आदमी ने मेरे साथ बहुत अच्छा सुलूक किया है, सब लोगों ने उस पेहले आदमी को बुरा केहना शुरूअ़ कर दिया, इस दौरान मेरे साथी मेरे पास आ गए और मेरे मक़ाम और रुतबे के मुत़ाबिक़ मेरी ख़िदमत में आदाब बजा लाए, येह देख कर वोह शख़्स वहां से भागने की कोशिश करने लगा, मैं ने कहा : **अल्लाह** की क़सम ! मैं तुम्हें उस वक़्त तक नहीं छोड़ूंगा जब तक तुम को 100 न दे दूं, फिर मैं ने अपने साथियों को हुक्म दिया कि इस नाहंजार आदमी को 100 ताज़ियाने लगाओ और इस बूढ़े और इस की बेटी को 100 दीनार और कपड़े दे दो ।[3] **तअ़ल्लुक़ात :** किसी ने ह़ज़रते इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से पूछा : आप के ह़ज़रते ज़ह़्ह़ाक से कैसे तअ़ल्लुक़ात हैं ? ह़ज़रते इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया : जब हम मिलते हैं तो इन से पूछते हैं : आप क्या पसन्द करते हैं ? जब जुदा होते हैं तो पूछते हैं : कुछ और चाहिए ?[4] **चादर तोह़फ़े में दे दी :** आप की त़बीअ़त में सख़ावत भी शामिल थी एक मरतबा आप ने 3 सौ दीनार की एक चादर पेहनी हुई थी, एक शख़्स ने उसे ख़रीदना चाहा तो आप ने वोही चादर उस को तोह़फ़े में दे दी और इरशाद फ़रमाया : येह आदमी की लालच है कि वोह अपनी चादर को बेचे ।[5]

ना पसन्दीदगी : एक मोअज़्ज़िन ने आप से कहा : मैं **अल्लाह** के लिए आप से महब्बत करता हूं, आप ने फ़रमाया : लेकिन मैं **अल्लाह** पाक के लिए तुझे ना पसन्द रखता हूं, उस ने पूछा : ऐसा क्यूं ? आप ने जवाब दिया : तू अज़ान देने में हद से बढ़ जाता है ।[6] **इस्लाह़ :** ह़ज़रते ज़ह़्ह़ाक बिन क़ैस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बे मिसाल ख़त़ीब भी थे और दौराने ख़ित़ाबत इस्लाह़ के पेहलू को भी मद्दे नज़र रखते थे, कूफ़ा में गवर्नरी के दौरान एक मरतबा आप ने मिम्बर पर **अल्लाह** (पाक) की ह़म्दो सना करने के बाद लोगों से फ़रमाया : तुम में कुछ लोग वोह हैं जो हमारे नेक परहेज़गार अस्लाफ़ को गालियां देते हैं, क़सम उस ज़ात की जिस का कोई शरीक व मिस्ल नहीं ! जो बातें मुझ तक पहुंची हैं अगर तुम इन से बाज़ न आए तो नंगी तल्वार निकाल लूंगा फिर तुम मुझ से न तो कोई कमज़ोर दीवार पाओगे और न ही बे धार की कुन्द (बुठी) तल्वार ।[7] **ज़िक्रे इलाही :** एक मौक़ेअ़ पर फ़रमाया : तुम **अल्लाह** का ज़िक्र ख़ुशह़ाली में किया करो, वोह तुम्हारी तंगदस्ती में तुम्हारी मदद करेगा ।[8] **तरबियत :** आप बच्चों और एहले ख़ाना की तरबियत का ख़ूब ज़ेहन देते थे, चुनान्चे फ़रमाया करते : ऐ लोगो ! अपनी औलाद और घर वालों को क़ुरआन सिखाओ ।[9] **नमाज़ का ह़क़ :** एक बार यूं फ़रमाया : जब तुम में से कोई नमाज़ पढ़े तो नमाज़ का ह़क़ अदा करे, जो शख़्स नमाज़ में खड़ा होता है और इस की त़रफ़ तवज्जोह नहीं करता उस की मिसाल उस घोड़े की त़रह़ है जिस के गले में तौबरा (दाने खिलाने का थैला) लटका हुवा है मगर चारे से ख़ाली है, जो उस को देखेगा वोह ख़याल करेगा कि घोड़ा उस में से खा लेगा मगर वोह तो ख़ाली है ![10] **ज़ख़ीरा अन्दोज़ :** ज़ख़ीरा अन्दोज़ी करने वालों पर आप सख़्त गिरफ़्त करते और फ़रमाते : रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ज़ख़ीरा अन्दोज़ी करने वालों पर लानत फ़रमाई है । येह भी फ़रमाया करते थे : **अल्लाह** करीम पर भरोसा रखो और अपने ह़ीले बहानों पर एतेमाद न करो, कई मरतबा ह़ीले बहाने बन्दे को हलाकत की त़रफ़ ले जाते हैं ।[11] **रियाकारी से बचो :** एक मक़ाम पर फ़रमाया : ऐ लोगो ! अपने आमाल को ख़ालिसतन **अल्लाह** के लिए कर लो क्यूंकि **अल्लाह** वोही अ़मल क़बूल फ़रमाता है जो ख़ालिस हो, जब तुम में से कोई किसी को तोह़फ़ा दे या किसी की ग़लती मुआ़फ़ करे या सिलए रेह़मी करे तो अपनी ज़बान से हरगिज़ यूं न कहे : येह **अल्लाह** के लिए है, क्यूंकि **अल्लाह** पाक उस की दिली ह़ालत को जानता है ।[12] **वसीला :** एक मरतबा शेहरे दिमश्क़ में क़ह़त़ साली हो गई उस वक़्त आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ दिमश्क़ के गवर्नर थे, आप ने ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते यज़ीद बिन अस्वद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को बुलवाया और कहा : आप खड़े हो जाइए और **अल्लाह** की बारगाह में हमारे सिफ़ारिशी बन जाइए, ह़ज़रते यज़ीद बिन अस्वद ने बारगाहे इलाही में दुआ़ की : ऐ **अल्लाह** ! तेरे बन्दे मेरे ज़रीए़ तेरा क़ुर्ब पाना चाहते हैं तू इन को सेराब कर दे, कुछ देर न गुज़री कि इतनी बारिश बरसी कि लोग डूबने के क़रीब हो गए ।[13] **मुजाहदाना व सियासी ज़िन्दगी :** आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का शुमार बहादुर सरदारों में होता है[14] आप दिमश्क़ की फ़त्ह़ में शामिल मुजाहिदीन में से हैं[15] जंगे सिफ़्फ़ीन में आप ह़ज़रते सैयदना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ थे[16] 53 हिजरी में कूफ़ा के गवर्नर नामज़द हुवे, 57 हिजरी में दिमश्क़ तशरीफ़ ला कर गवर्नरी का ओ़हदा संभाला और अ़र्स ए दराज़ उसी ओ़हदे पर फ़ाइज़ रहे[17] आप ने ह़ज़रते अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का जनाज़ा पढ़ाया था[18] 64 हिजरी में ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपनी ख़िलाफ़त का एलान किया तो आप ने अक्सर एहले शाम से ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर की बैअ़त ले ली ।[19] **शहादत :** मगर येह बात मरवान बिन ह़कम को एक आंख न भाई लेहाज़ा मुक़ाबले पर उतर आया, आप के पास शेहसवारों की बड़ी तादाद थी, मरवान किसी त़रह़ जंग जीत न सकता था उस ने आप को सुल्ह़ का धोका दिया तो आप उस के केहने में आ गए और सुल्ह़ क़बूल कर ली, यूं आप की फ़ौज ने अस्लह़ा रख दिया और जंग रुक गई, मरवान ने इस मौक़ेअ़ को ग़नीमत जाना और धावा बोल दिया ।[20] 15 ज़ुल ह़िज्जा 64 हिजरी में ''मर्जे राहित़'' नामी मक़ाम पर इसी जंग में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जामे शहादत नोश फ़रमाया ।[21]

---

(1)الاستیعاب، 2/297، زرقانی علی الموطأ، 1/352، تحت الحدیث:243 (2)سیر اعلام النبلاء، 4/374، تاریخ ابن عساکر، 24/288 (3)انساب الاشراف، 11/52ملخصًا (4)معجم کبیر، 12/308 (5)سیر اعلام النبلاء، 4/375 (6)انساب الاشراف، 11/46 ملخصًا (7)ایضاً، 11/51 (8)ایضاً، 11/47 (9)ایضاً، 11/47 (10)ایضاً، 11/48 (11)ایضاً، 11/55 (12)تاریخ ابن عساکر، 24/282 (13)الاحاد و المثانی، 2/136، تاریخ ابن عساکر، 65/113 (14)اعلام للزرکلی، 3/214 (15)سیر اعلام النبلاء، 4/374 (16)اعلام للزرکلی، 3/214 (17)الاستیعاب، 2/297 (18)سیر اعلام النبلاء، 4/375 (19)الاستیعاب، 2/297، فتح الباری، 14/60 (20)الاستیعاب، 2/298 ملخصًا (21)طبقات ابن سعد، 7/288۔



फ़क़ीहे एहले सुन्नत मुफ़्ती अ़ब्दुल ह़लीम रज़वी अशरफ़ी رحمۃ اللہ علیہ के रुख़े ह़यात की मुख़्तसर झलकियां

मौलाना मुह़म्मद अ़ताउन्नबी हुसैनी मिस्बाही

एक इन्सान की ज़िन्दगी के दो मर्ह़ले बड़े अहम होते हैं : 1 आना 2 जाना। जब इन्सान इस दुन्या में आता है तो अइज़्ज़ा ओ अक़रिबा में ख़ुशियों और मुस्कुराहटों को बिखेर देता है और जब जाता है तो आहों और सिस्कियों में माह़ोल को सोगवार कर जाता है। आने या जाने की ख़बर तो रिश्तेदारों और आस पड़ोस वालों में ख़ुशी या ग़म की लहर दौड़ा देती है मगर कुछ हस्तियां ऐसी भी होती हैं कि जब इस दुन्या ए फ़ानी में अपनी ह़याते मुस्तआ़र के अय्याम गुज़ार कर अपने ख़ालिक़े ह़क़ीक़ी से जा मिलती हैं तो अपने पीछे हज़ारों बल्कि लाखों अफ़राद को रोता छोड़ जाती हैं, इन हस्तियों के गुज़र जाने पर एक ऐसा ख़ला दिखाई देता है जिस का पुर होना ब ज़ाहिर ना मुमकिन नज़र आता है इन मुक़्तदर और मोअ़ज़्ज़ज़ हस्तियों में फ़क़ीहे एहले सुन्नत, सरपरस्ते दावते इस्लामी (हिन्द), ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती अ़ब्दुल ह़लीम साह़ब रज़वी अशरफ़ी رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का शुमार भी होता है। 12 रमज़ानुल मुबारक 1442 हिजरी की शब को दुन्या ए एहले सुन्नत के फ़क़ीह, शुमाली बिहार की अ़ज़ीम दीनी, इल्मी व इन्क़िलाबी शख़्सियत ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती अ़ब्दुल ह़लीम साह़ब रज़वी अशरफ़ी रात तक़रीबन नौ बज कर पैंतालीस मिनट पर दारे फ़ानी से दारे बक़ा की त़रफ़ कूच फ़रमा गए। क़िब्ला मुफ़्ती साह़ब की वफ़ात की ख़बर दुन्या ए सुन्नियत के लिए रंजो अलम, क़ल्बी इज़्त़िराब और आंखों के बरसने का सबब बन गई। इम्तियाज़ी शान के ह़ामिल, तक़्वा ओ परहेज़गारी में कामिल फ़क़ीहे एहले सुन्नत मुफ़्ती अ़ब्दुल ह़लीम رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अब हमारे दरमियान नहीं हैं लेकिन हमारे लिए मश्अ़ले राह बनने वाली ह़ज़रत की यादें, ह़ज़रत की बातें, ह़ज़रत की इल्मी ओ अ़मली काविशें ज़रूर मौजूद हैं, क़िब्ला मुफ़्ती साह़ब से मह़ब्बतो अ़क़ीदत का तक़ाज़ा है कि अब इन याद दाश्तों को मेह़फ़ूज़ किया जाए और इन के नुक़ूशे क़दम को अपनाया जाए। इसी जज़्बे के तह़त फ़क़ीहे एहले सुन्नत رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के मुख़्तसर ह़ालात पेश किए जा रहे हैं : . . . . . .

विलादत और नामो नसब : ह़ज़रत फ़क़ीहे एहले सुन्नत की विलादत ज़िल्अ़ सीतामढ़ी के एक गाऊं ददरी में मौजूद एक ऐसे ख़ानदान में हुई जिन का उ़लमा नवाज़ी और गुरबा परवरी मेह़बूब तरीन मश्ग़ला था। आप का नामो नसब इस त़रह़ है : फ़क़ीहे एहले सुन्नत अलह़ाज मुफ़्ती अ़ब्दुल ह़लीम अशरफ़ी रज़वी बिन मुह़म्मद मुनीरुद्दीन बिन शेर अ़ली बिन (ह़ौबत) हुब अ़ली बिन रमज़ान अ़ली बिन अमानत अ़ली सिद्दीक़ी।

तालीमो तरबियत : इब्तेदाई तालीम अपने गाऊं के एक आ़लिमे दीन से ह़ासिल की। फिर नासिरुल इस्लाम, ह़ामियुस्सुनन, ममदूह़े आला ह़ज़रत, आ़रिफ़ बिल्लाह मौलाना शाह अ़ब्दुर्रह़मान मुह़ब्बा رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के क़ाइम कर्दा मद्रसे नूरुल हुदा में दाख़िला लिया। इस के बाद 1953 ईसवी में मुफ़्ती अ़ज़ीज़ुर्रह़मान सिद्दीक़ी रज़वी फ़ैज़पुरी के ईमा (बुलावे) पर मन्ज़रे इस्लाम बरैली शरीफ़ तशरीफ़ लाए और पूरे इन्हेमाक के साथ बक़िया तालीम

हासिल की । आप की ज़ेहानतो फ़तानत को देख कर असातेज़ा, आप की तरफ़ ख़ातिर ख़्वाह तवज्जोह फ़रमाते । आप ने यहां हज़रते मौलाना अहमद अन्सारी मदनीपुरी और मुफ़्ती अज़ीज़ुर्रहमान सिद्दीक़ी रज़वी फ़ैज़पुरी से मीज़ान व मन्शअब, नहवे मीर और दीगर किताबें पढ़ीं ।

हज़रते अल्लामा रैहान रज़ा ख़ान रहमानी मियां رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने आप को शर्हे मिअति आमिल और नफ़्हतिल यमन पढ़ाई । शैखुल उलमा हज़रते अल्लामा गुलाम जीलानी आज़मी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने मिअति आमिल फ़ारसी के अश्आर पढ़ाए । उम्दतुल मुदर्रिसीन हज़रते अल्लामा मौलाना नईमुद्दीन अहमद सिद्दीक़ी रज़वी गोरखपुरी ने आप को मिश्कात, जलालैन वग़ैरा कुतुब पढ़ाईं । उस्ताज़ुल असातेज़ा हज़रते अल्लामा मौलाना हाफ़िज़ो क़ारी अलहाज मुफ़्ती मुहम्मद अहमद उर्फ़ जहांगीर ख़ां फ़त्हपुरी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से उलूमे अक़्लिया और अरबी अदब की किताबें पढ़ीं । बहरुल उलूम हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती सैयद अफ़्ज़ल हुसैन मूंगेरी, सदरुल मुदर्रिसीन मद्रसए मन्ज़रे इस्लाम رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से फ़िक़्ह में महारत हासिल की । जामेए उलूमे अक़्लिया ओ नक़्लिया हज़रते अल्लामा अलहाज मोहद्दिस एहसान मुज़फ़्फ़रपुरी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से कुतुबे अहादीस पढ़ीं और तक्मीले दर्से निज़ामी की सआदत पाई ।

बैअतो इरादत और इजाज़तो ख़िलाफ़त : हज़रते मुफ़्ती अब्दुल हलीम साहब رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه अपने उस्ताज़ हज़रते अल्लामा एहसान अली क़ादरी रज़वी मोहद्दिसे बिहार رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के हुक्म पर दौराने तालीम ही मख़्दूमे मिल्लत, नूर दीदए सरकारे सिमनां, तिलमीज़े आला हज़रत अल्लामा मौलाना मुफ़्ती अश्शाह सैयद मुहम्मद अशरफ़ी जीलानी अल मारूफ़ मोहद्दिसे आज़मे हिन्द किछौछवी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के दस्ते हक़ परस्त पर बरैली शरीफ़ में सिलसिलए आलिया क़ादरिया चिश्तिया अशरफ़िया में बैअत हुवे । पीरो मुर्शिद के विसाल के बाद शेहज़ादए आला हज़रत आरिफ़ बिल्लाह हुज़ूर मुफ़्ती ए आज़म हिन्द رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के मुबारक हाथों पर तालिब हुवे । इजाज़तो ख़िलाफ़त की दौलत हुज़ूर मुफ़्ती ए आज़मे हिन्द, कुतुबे मदीना हज़रते ज़ियाउद्दीन अहमद रज़वी, सरकारे मुजाहिदे मिल्लत हज़रते हबीबुर्रहमान क़ादरी और मोहद्दिसे बिहार हज़रते अल्लामा एहसान अली क़ादरी रज़वी رحمۃ اللہ علیہم से मिली ।

दर्सो तदरीस : हज़रते मुफ़्ती अब्दुल हलीम رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه सनदे फ़राग़त पाने के बाद बारगाहे मुर्शिद में हाज़िर बाशी की ख़्वाहिश रखते थे जिस की इजाज़त भी मिल गई थी लेकिन बहरुल उलूम हज़रते मुफ़्ती अफ़्ज़ल हुसैन साहब क़िब्ला رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने आप को सख़्ती के साथ दर्सो तदरीस का हुक्म देते हुवे फ़रमाया : तुम ने दर्से निज़ामी में मेहनतो मशक़्क़त के ज़रीए जो कुछ भी कमाल हासिल किया, दर्सो तदरीस से दूरी के सबब वोह ज़ाएअ हो जाएगा । इस लिए तुम दर्सो तदरीस में मश्ग़ूल हो जाओ । अगर्चे इब्तेदाई जमाअतें पढ़ानी पड़ें लेकिन दर्सगाह ही इख़्तियार करो । इस तरह आप ने मन्ज़रे इस्लाम बरैली शरीफ़ में पढ़ाना शुरूअ किया । फिर 3 अप्रील 1966 ईसवी में हज़रते अल्लामा मुश्ताक़ अहमद निज़ामी के तवस्सुत से तस्हीलुल मसादिर के मुसन्निफ़ फ़क़ीहे अस्र हज़रते मुफ़्ती अब्दुर्रशीद अशरफ़ी नईमी फ़त्हेपुरी साहब رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के जामेआ अरबिया नागपुर तशरीफ़ लाए और दर्सो तदरीस के जौहर लुटाते रहे ।

तस्नीफ़ो तालीफ़ : हज़रते मुफ़्ती अब्दुल हलीम साहब رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की ज़िन्दगी का एक बड़ा हिस्सा दर्सो तदरीस और तलबा की शख़्सियत साज़ी में गुज़रा । इस के बाद दावतो तब्लीग़ में मसरूफ़ हो गए । फिर सफ़र की मसरूफ़ियात के सबब तस्नीफ़ो तालीफ़ का ख़ास मौक़अ मयस्सर न आया । ताहम वक़्तन फ़ वक़्तन आप ने चन्द रिसाले तेहरीर फ़रमाए जो अवामो ख़वास में मक़्बूल हुवे : 1 फ़िल्म "ख़ानए ख़ुदा" का शरई हुक्म 2 इस्लाम में दाढ़ी का मक़ाम 3 फ़तावा हलीमिया (आप के तेहरीर कर्दा फ़तावा का मजमूआ)

यादगारे फ़क़ीहे एहले सुन्नत : यूं तो फ़क़ीहे एहले सुन्नत मुफ़्ती अब्दुल हलीम साहब رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का हर कारनामा आबे ज़र से सफ़हात में मेहफ़ूज़ किए जाने के क़ाबिल है लेकिन इन कारनामों में दारुल उलूम ज़ियाइया फ़ैज़ुर्रज़ा का क़ियाम और इस की तामीर व तालीमी इस्तेहकाम व मज़बूती के लिए आप की ख़िदमात और क़ुरबानियां हमेशा लोगों के क़ल्बो नज़र में आप की याद ताज़ा करती रहेंगी ।

फ़क़ीहे एहले सुन्नत का ज़ोहदो तक़्वा : फ़क़ीहे एहले सुन्नत हज़रते मुफ़्ती अब्दुल हलीम साहब رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه एक पाबन्दे शर्अ, मुत्तक़ी ओ परहेज़गार और एक अल्लाह वाली शख़्सियत का नाम है । आप की

फ़िक्रे आख़ेरत और ख़शियते इलाही, ज़ोहदो तक़्वा, इख़्लासो लिल्लाहियत ही का नतीजा था कि जब जामेआ़ अ़रबिया नागपुर का दारुल इफ़्ता आप के सिपुर्द किया गया तो आप ने मुफ़्ती अ़ब्दुर्रशीद साहब رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से अ़र्ज़ किया : हुज़ूर येह आप की करम नवाज़ी और हौसला अफ़्ज़ाई है कि आप ने मुझे येह ज़िम्मेदारी सोंप दी । लेकिन मैं येह ज़िम्मेदारी इस शर्त पर क़बूल करूंगा कि इस से क़ब्ल दारुल इफ़्ता का जो मुआ़वज़ा ह़ज़रते मौलाना ज़ैनुल आ़बेदीन (आप से पेहले येही इफ़्ता की ज़िम्मेदारी संभाल रहे थे) को मिला करता था मैं उसे हरगिज़ न लूंगा । रिज़ा ए इलाही की ख़ातिर मुफ़्त ख़िदमत अन्जाम दूंगा । ग़ालिबन उस वक़्त आप की तनख़्वाह 150 रुपिये थी । ह़ज़रते मुफ़्ती अ़ब्दुर्रशीद साह़ब رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने आप का येह इख़्लास देख कर शफ़्क़त भरे अन्दाज़ में फ़रमाया : आप इ़यालदार हैं, मेहंगाई सर चढ़ कर बोल रही है आप की मुख़्तसर सी तनख़्वाह जो आप को मिल रही है इस से आप के अपने और इ़याली अख़राजात कैसे पूरे होंगे ? लेहाज़ा आप को इस का मुआ़वज़ा लेना पड़ेगा । ह़ज़रत मुफ़्ती अ़ब्दुल ह़लीम साह़ब رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه मुफ़्ती अ़ब्दुर्रशीद साह़ब की इस अदा ए करम नवाज़ी से मुतास्सिर तो हुवे लेकिन आप की भी ग़ैरते ईमानी बहुत आला दर्जे की थी । आप ने फिर बारगाहे दिल नवाज़ में अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! आप ने जो कुछ फ़रमाया बजा फ़रमाया लेकिन मेरा ज़मीर हरगिज़ येह क़बूल नहीं करता कि मैं इस का भी मुआ़वज़ा लूं । दर्सगाह पढ़ाता हूं तो येह त़रफ़ैन की रिज़ामन्दी पर है मैं इस की तनख़्वाह ले लेता हूं । मस्जिद में इमामत करता हूं तो इस की भी तनख़्वाह मुझे मिल जाती है । तो मैं किस मुंह से कहूं कि मैं दीन का काम कर रहा हूं ? सारी ख़िदमतों पर तो मुआ़वज़ा मिल ही रहा है । कम अज़ कम येह फ़तवा नवेसी अगर बिला मुआ़वज़ा हो तो दिल मुत़मइन रहेगा कि दीन का कोई काम बिला मुआ़वज़ा भी अन्जाम दे रहा हूं ।

आ़जिज़ी और ख़ौफ़े ख़ुदा : दावते इस्लामी की मर्कज़ी मजलिसे शूरा के रुक्न का बयान है कि एक बार मैं मदीने शरीफ़ में इन से मिलने गया, ह़ज़रत अकेले में रो रहे थे । मैं ने अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! येह अश्क बारी किस वज्ह से है ? फ़रमाया : अभी अभी मुआ़फ़ न करने पर वईद से मुतअ़ल्लिक़ एक ह़दीसे पाक मेरी नज़र से गुज़री, मुझे याद आ गया कि मदीने शरीफ़ आने से पेहले मेरे मद्रसे में एक त़ालिबे इ़ल्म ने कोई ग़लती की थी मैं ने उस को सज़ा के तौर पर दर्जे से बाहर निकाल दिया । वोह मुझ से मुआ़फ़ी मांगता रहा लेकिन मैं ने बत़ौरे तरबियत उसे मुआ़फ़ न किया था अब ह़दीसे पाक पढ़ कर रो रहा हूं, या **अल्लाह** मैं ने उस को मुआ़फ़ कर दिया तू भी उस को मुआ़फ़ कर दे ।

जज़्बाते अमीरे एहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ

फ़क़ीहे एहले सुन्नत, पीरे त़रीक़त ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती अ़ब्दुल ह़लीम साह़ब رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه और अमीरे एहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه बाहम (आपस में) बहुत मह़ब्बत और शफ़्क़त का मुआ़मला रखते थे । 12 रमज़ानुल मुबारक 1442 हिजरी की शब को मुफ़्ती अ़ब्दुल ह़लीम साह़ब के इन्तेक़ाले पुर मलाल पर अमीरे एहले सुन्नत के जज़्बात कुछ इस त़रह़ के थे :

ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती अ़ब्दुल ह़लीम साह़ब رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه दावते इस्लामी के बहुत बड़े मोह़सिन हैं, इन्हों ने हिन्द में हमारी बहुत मदद फ़रमाई है, एक ऐसा दौर हम पर गुज़रा है कि हिन्द में दावते इस्लामी के मुतअ़ल्लिक़ हमारे बारे में काफ़ी उल्टी सीधी बातें हो रही थीं, वहां की गवर्नमेन्ट की त़रफ़ से तो कोई मसाइल नहीं थे, बस बाज़ अफ़राद ने वहां के लोगों में कुछ ग़लत़ फ़ेहमियां फैला दी थीं, ماشاءالله मुफ़्ती अ़ब्दुल ह़लीम साह़ब ने बड़ी शफ़्क़त फ़रमाई, हिन्द के उ़लमा ए किराम के पास जा जा उन को समझाया और उन की ग़लत़ फ़ेहमियां दूर कीं और भी कई ऐसे अह़बाब होंगे कि जिन्हों ने हमारे साथ तआ़वुन किया होगा लेकिन मैं मुफ़्ती साह़ब को इन सब में फ़र्स्ट नम्बर दूंगा । मुफ़्ती साह़ब رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाया करते थे कि "अफ़्सोस ! मुझे दावते इस्लामी बुढ़ापे में मिली, काश ! जवानी में मिल जाती तो इस के लिए काम करता ।" मगर बुज़ुर्गी के बा वुजूद भागदौड़ इतनी करते थे कि जवान को

थका दें, मुबालग़तन यूं केह सकते हैं कि सारे हिन्द में सफ़र करते रेहते थे। दावते इस्लामी के लिए मुफ़्ती साहब की बहुत ख़िदमात हैं, **अल्लाह** पाक क़बूल फ़रमाए। मैं उन दिनों में कहा करता था कि दावते इस्लामी के तअ़ल्लुक़ से जैसे हिन्द में हज़रते मुफ़्ती अ़ब्दुल हलीम साहब हैं, पाकिस्तान में हमारे पास कोई ऐसा आ़लिमे दीन नहीं है। मुझ से बहुत महब्बत व शफ़्क़त फ़रमाया करते थे, एक बार अ़रब अमारात में मुझ से मिलने के लिए तशरीफ़ ले आए थे, बहुत महब्बत फ़रमाया करते थे।

(ताज़ियती पैग़ाम से माख़ूज़)

हज़रते मुफ़्ती अ़ब्दुल हलीम साहब से पेहली मुलाक़ात : मस्जिदुल हराम शरीफ़ में उन दिनों तेहख़ाने में ज़मज़म शरीफ़ की सबील थी, मैं हज़रत को जानता नहीं था, कभी देखा भी नहीं था, किसी ने मुझ से मुफ़्ती अ़ब्दुल हलीम साहब का तआ़रुफ़ करवाया, यूं दुआ़ सलाम हुई तो मुफ़्ती साहब ने मुझ से फ़रमाया : कब तशरीफ़ लाए ? मैं ने बर जस्ता कहा कि "मैं आज तक तशरीफ़ नहीं लाया, जब भी हुक्म हुवा है हाज़िर हुवा हूं।" मुफ़्ती साहब को येह बात बड़ी पसन्द आई कि हरमैन तय्यबैन में तशरीफ़ नहीं लाते बल्कि हाज़िर होते हैं। फिर मुफ़्ती साहब इस वाक़ेए़ को बयान भी करते थे कि "इल्यास" ने मुझे येह जवाब दिया था। पेहली मुलाक़ात ऐसी हुई कि اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मुफ़्ती साहब से आख़री सांस तक हमारी महब्बतें क़ाइम रहीं और मुफ़्ती साहब के साथ बड़ी निशस्तो बरख़ास्त हुई, घन्टों हम साथ बैठा करते थे, बड़े शफ़ीक़ थे और बड़ा आ़जिज़ी ओ इन्केसारी भरा अन्दाज़ था, दीगर मज़हबी लोगों के मुक़ाबले में मुफ़्ती साहब का अन्दाज़ मुख़्तलिफ़ था, इस्लामी भाइयों के साथ भी बहुत शफ़्क़त फ़रमाते थे। **अल्लाह** पाक प्यारे हबीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सदक़े हज़रते मुफ़्ती अ़ब्दुल हलीम साहब رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه पर अपनी रेहमतें नाज़िल फ़रमाए, इन को बे हिसाब जन्नत से मुशर्रफ़ फ़रमाए और इन के फ़ुयूज़ो बरकात से हमें मालामाल फ़रमाए।

(मदनी मुज़ाकरा, 14 रमज़ानुल मुबारक 1442 हिजरी, बाद नमाज़े तरावीह)

ईसाले सवाब और दुआ़ : इन दिनों दावते इस्लामी के जामेआ़तुल मदीना, मदारिसुल मदीना और दीगर तालीमी इदारों में तात़ीलात का सिलसिला है लेकिन फिर भी ماشاء الله एक कसीर तादाद ने मुफ़्ती अ़ब्दुल हलीम साहब رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के सोयम के मौक़ेअ़ पर ईसाले सवाब का एहतेमाम किया। **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त मुफ़्ती साहब को ग़रीक़े रेहमत फ़रमाए और इन की तमाम ख़िदमाते दीनिया को शरफ़े क़बूलियत अ़ता फ़रमाए। आमीन

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى خَاتَمِ النَّبِيِّيْن

या रब्बल मुस्त़फ़ा ! جَلَّ جَلَالُه وَصَلَّى اللّٰه عَلَيْه وَاٰلِه وَسَلَّم अपने फ़ज़्लो करम से जो कुछ पढ़ा गया इस का सवाब अपने करम के शायाने शान अ़ता फ़रमा कर येह तमाम सवाब अपने प्यारे हबीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इ़नायत फ़रमा, ब वसीलए ख़ातमुन्नबिय्यीन तमाम अम्बिया ओ मुर्सलीन, ख़ुलफ़ा ए राशिदीन, उम्महातुल मोमिनीन, तमाम सह़ाबा ओ ताबेईन व तबए़ ताबेईन, अइम्मए मुज्तहिदीन, उ़लमा ए कामिलीन, मुफ़स्सिरीन, मोह़द्दिसीन, बुज़ुर्गाने दीन, तमाम मोमिनातो मोमिनीन, मुस्लिमातो मुस्लिमीन, ख़ुसूसन वालिदैने मुस्त़फ़ा, ह़सनैने करीमैन, शहीदानो असीराने करबला, जमीअ़ एहले बैते अत़हार, इमामे आज़म, ग़ौसुल आज़म, ग़रीब नवाज़, आला ह़ज़रत, इमाम ग़ज़ाली, क़ुत़बे मदीना, सदरुल अफ़ाज़िल, ह़ुज़ूर मुफ़्ती ए आज़मे हिन्द, ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान, मुफ़्ती ए दावते इस्लामी ह़ाजी फ़ारूक़, ह़ाजी मुश्ताक़, ह़ाजी ज़मज़म रज़ा, तमाम मर्ह़ूमीन मुबल्लिग़ीन व मुबल्लिग़ात बिल ख़ुसूस मोह़सिन व सर परस्ते दावते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती अ़ब्दुल ह़लीम साहब رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه को अ़ता फ़रमा। या **अल्लाह** पाक ! मुफ़्ती साहब के दरजात बुलन्द फ़रमा, जन्नतुल फ़िरदौस में अपने प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोस नसीब फ़रमा, इलाहल आ़लमीन ! इन के तमाम सोगवारों को सब्रे जमील और सब्रे जमील पर अज्रे जज़ील मर्ह़मत फ़रमा, या **अल्लाह** पाक ! ह़ज़रत के फ़ुयूज़ो बरकात से हमें मालामाल फ़रमा, ह़ज़रत के सदक़े हम सब की बे ह़िसाब मग़फ़िरत फ़रमा, ह़ज़रत के सदक़े हम को दावते इस्लामी का मुख़्लिस मुबल्लिग़ बना, ह़ज़रत के तमाम मुतवस्सिलीन मुरीदीन सब को दावते इस्लामी का बढ़ चढ़ कर काम करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा।

(मदनी मुज़ाकरा, 14 रमज़ानुल मुबारक 1442 हिजरी, बाद नमाज़े तरावीह)



मुफ़्ती अ़ब्दुल ह़लीम रज़वी अशरफ़ी रहमतुल्लाहि अलैह की दावते इस्लामी से महब्बत

इस वक़्त दावते इस्लामी एक आ़लमगीर तेह़रीक है लेकिन इब्तेदाई दौर में दावते इस्लामी की मुख़ालफ़त और बाईकाट किया जा रहा था। उस नाज़ुक दौर में फ़क़ीहे एहले सुन्नत, ख़लीफ़ए मुफ़्ती ए आज़मे हिन्द, मोह़सिन व सरपरस्ते दावते इस्लामी मुफ़्ती अ़ब्दुल ह़लीम साह़ब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने मुख़ालफ़तों की आंधी और तूफ़ान में तने तन्हा खड़े हो कर एलान किया : **"दावते इस्लामी एहले सुन्नत की पासबान, मस्लके आला ह़ज़रत की तर्जुमान और सवादे आज़म के अ़क़ाइदो नज़रियात की निगेहबान है। एहले सुन्नत के अ़वामो ख़वास को चाहिए कि वोह जानो दिल से दावते इस्लामी की इमदाद और इआ़नत करें ! इस के ख़िलाफ़ जितने फ़तावा हैं वोह ह़सद या ग़लत फ़ेहमी का नतीजा है। इन फ़तावा की कोई ह़क़ीक़त नहीं। इन फ़तावा की परवाह न करें। बे तअम्मुल दावते इस्लामी को अपनाएं और इसे घर घर पहुंचाएं। कल क़ियामत में दावते इस्लामी की ह़िमायत और इस में आप की शुमूलियत से मुतअ़ल्लिक़ अगर पुरसिश हुई तो रब की बारगाह में अ़ब्दुल ह़लीम इस का जवाब देह और ज़िम्मेदार होगा।"** ख़ुसूसन हिन्दुस्तान में तो दावते इस्लामी की जिस क़दर क़िब्ला मुफ़्ती साह़ब ने ह़िमायत की है और इस दीनी तेह़रीक के लिए आप ने जितनी क़ुरबानियां दी हैं शायद वोह शुमार से बाहर हैं।

(फ़तावा ह़लीमिया से माख़ूज़)

दावते इस्लामी के लिए आप की क़ुरबानियों और दावते इस्लामी के नज़दीक आप की क़द्रो क़ीमत और अहमियत का अन्दाज़ा अमीरे एहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के इस जुम्ले से ब ख़ूबी हो जाता है जो आप ने हुज़ूर फ़क़ीहे एहले सुन्नत की ताज़ियत के मौक़ेअ़ पर फ़रमाया : "अगर उस वक़्त मुफ़्ती अ़ब्दुल ह़लीम साह़ब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه साथ न देते, तो हो सकता था कि दावते इस्लामी हिन्द से ख़त्म हो जाती।" (ताज़ियती पैग़ाम)

मुफ़्ती साह़ब के सोइम के मौक़ेअ़ पर दावते इस्लामी की त़रफ़ से ईसाले सवाब

क़ुरआने पाक	15 हज़ार 855
मुतफ़र्रिक़ पारे	1 लाख 40 हज़ार 680
सूरए यासीन शरीफ़	1 लाख 96 हज़ार 982
सूरए मुल्क	7 लाख 15 हज़ार 430
सूरए रह़मान	86 हज़ार 849
सूरए वाक़िआ़	95 हज़ार 359
सूरए मुज़्ज़म्मिल	26 हज़ार 441
चारों क़ुल शरीफ़	11 लाख 57 हज़ार 93
सूरए फ़ातिह़ा	20 लाख 22 हज़ार 724
सूरए इख़्लास	1 करोड़ 35 लाख 91 हज़ार 113
मुख़्तलिफ़ सूरतें	11 लाख 86 हज़ार 17
आयते करीमा	2 करोड़ 49 लाख 63 हज़ार 318
बिस्मिल्लाह शरीफ़	1 करोड़ 29 लाख 67 हज़ार 617
आयतुल कुर्सी	10 लाख 92 हज़ार 162
कलिमए त़य्यबा	10 करोड़ 89 लाख 45 हज़ार 557
मुख़्तलिफ़ ज़िक्रो अज़्कार	2 करोड़ 62 लाख 35 हज़ार 283
दुरूदे पाक	70 करोड़ 63 लाख 94 हज़ार 171
दुरूदे ताज	41 हज़ार 677
दुरूदे तुनज्जीना	48 हज़ार 711
उ़म्र भर की नेकियां ईसाले सवाब करने वाले	1 लाख 29 हज़ार 843
तस्बीहे फ़ातिमा	1 लाख 39 हज़ार 638
नवाफ़िल का सवाब	64 लाख 22 हज़ार 722
नफ़्ल रोज़ों का सवाब	2 हज़ार 844
मुतफ़र्रिक़ अवराद	3 लाख 17 हज़ार 195
इस्तिग़फ़ार	82 करोड़ 28 लाख 30 हज़ार 407
या सलामु	21 हज़ार 601



ताज़ियत व इ़यादत

शैख़े त़रीक़त, अमीरे एहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने अप्रील 2021 ईस्वी में ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा नूरी साह़ब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के इन्तेक़ाल पर उन के लवाह़िक़ीन से ताज़ियत की, ताज़ियती पैग़ाम पर ह़ज़रत के साह़िब ज़ादे मुफ़्ती अबुल ह़स्सान मुह़म्मद इश्तियाकुल क़ादरी साह़ब (जामेआ़ मदीनतुल इ़ल्म, कबीर नगर, देहली) ने जवाबी पैग़ाम इरसाल किया :

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهٗ

अमीरे एहले सुन्नत, बानी ए दावते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه वोह मिसाली व बैनल अक़वामी शख़्सियत हैं जिन के अमसाल (मिसालें) इस दौर में नादिरो मफ़क़ूद हैं।

अन्दाज़ा तो लगाइए कि दुन्या की अ़ज़ीम तेह़रीक के बानी ओ सरपरस्त और बे शुमार इ़ल्मी ओ दावती मसरूफ़ियात के बावुजूद मुझ जैसे नाकारा पर इतना करम व एह़सान और ऐसी नादिर शफ़क़त व इ़नायत कि अपने बे पनाह क़ीमती अवक़ात से वक़्त निकाल कर ताज़ियत व तसल्लिया के कलेमात इरशाद फ़रमाना और ब कमाले करम व इ़नायत सब्रो तह़म्मुल की तलक़ीन फ़रमाना यक़ीनन क़त़्अ़न एक अ़ज़ीम मोह़सिन व मुश्फ़िक़ और इन्तेहाई ख़लीक़ व ग़म गुसार का ही काम हो सकता है। येह उस बात का भी इशारा है कि अमीरे एहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه नमूनए अस्लाफ़ हैं और अपने ख़ुद्दाम पर शफ़क़त व करम फ़रमाने में बे मिसाल हैं।

फ़क़ीरे क़ादरी को अब से कोई बारह तेरह साल पेहले आप के दरे दौलत पर ह़ाज़िर हो कर चन्द दिन फ़ुयूज़ो बरकात ह़ासिल करने का मौक़अ़ मयस्सर आया, मैं ने अपनी पूरी ज़िन्दगी में इ़ल्मो अ़मल और नेकी ओ भलाई का ऐसा मुजस्सम मजमूआ़ कभी नहीं देखा, किताबों में औलिया ओ सालेह़ीन के जो अवसाफ़ व अह़वाल पढ़ रखे थे उन की अ़मली तसवीर पेहली मरतबा "इल्यास क़ादरी" की शक्ल में क़रीब से देख कर आंखों को नूर और दिल को सुरूर की जो कैफ़ियात ह़ासिल हुईं उन के अनवारो बरकात को अलफ़ाज़ में बयान करना मुझ नातुवां के लिए तक़रीबन नामुमकिन है।

कसरते कार व हुजूमे अफ़कार के इस आ़लम में मेरे लिए येह अम्र भी किसी अ़जूबे से कम नहीं कि ह़ज़रते अमीरे एहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه मुझ नाकारा व गुम नाम से मुतअ़द्दद बार फ़ोन के ज़रीए गुफ़्तगू फ़रमा चुके हैं और मेरे ह़ालात दरयाफ़्त फ़रमा कर मुझे दुआ़ओं से नवाज़ चुके हैं, बल्कि इसे अ़जूबा न केह कर फ़क़ीर इसे आप की करामत समझता है कि इतनी बड़ी तन्ज़ीम के बानी की याद दाश्त का येह आ़लम कि मुझ जैसा शख़्स जो राबेत़ा रखने में भी अज़ ह़द गया गुज़रा है और किसी क़ाबिले ज़िक्र काम के लाइक़ भी नहीं है, उसे याद रखना यक़ीनन मेरे नज़दीक एक ख़ारिक़े आ़दते अम्र है, जब कि हम लोगों का ह़ाल येह है कि हम अपने सौ दो सौ मुतअ़ल्लिक़ीन से भी राबेत़ा रखने में ना काम नज़र आते हैं और सह्व व निस्यान का शिकार रेहते हैं।

रब्बे करीम ह़ज़रते अमीरे एहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का सायए इ़ल्मो फ़ज़्ल व करम सलामत रखे और आप के फ़ुयूज़ो बरकात से आ़लमे इस्लाम को ता क़ियामत मुस्तफ़ीज़ व मुस्तफ़ीद व मुस्तनीर फ़रमाए।



फ़क़ीहे एहले सुन्नत एक जामेए कमालात शख़्सय्यत

मुहम्मद शफ़ीकुर्रहमान मिस्बाही

फ़क़ीहे इस्लाम, मुनाज़िरे एहले सुन्नत हज़रते मुफ़्ती अ़ब्दुल ह़लीम रज़वी अशरफ़ी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की ज़ियारते बा सआ़दत का आग़ाज़ उस वक़्त हुवा जब नागपुर जामेअ़तुल मदीना में तदरीसी ख़िदमत मेरे सिपुर्द हुई। यूं तो मुफ़्ती साह़ब के पास मेरा जाना बहुत कम होता था, लेकिन जब मौलाना वसीम अकरम रज़वी मिस्बाह़ी उस्ताज़ जामेअ़तुल मदीना नेपाल, नागपुर आते तो उन के साथ अक्सर जाना होता।

मुफ़्ती साह़ब की ज़िन्दगी शरीअ़तो त़रीक़त का संगम थी जो रिया ओ नुमूद से दूर, आ़म, सादा मगर इ़ल्मो अ़मल से आरास्ता थी, जिस में जामेइ़य्यत भी थी और एतेदाल भी, जमाल भी था और कमाल भी, आप की सोह़बत अकाबिरीन की फ़ैज़ बख़्श मजालिस की याद ताज़ा कर देती थी, मुलाक़ात के लिए आने वाला दोबारा मिलने की तड़प ले कर वापस होता, इत़मीनाने क़ल्ब, इ़बादत में ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ़ और दिल जमई की लज़्ज़त बत़ौरे तोशा साथ ले जाता था।

मुफ़्ती साह़ब की ज़ात में जो औसाफ़ नुमायां त़ौर पर मैं ने मेह़सूस किए उन में से कुछ अ़र्ज़ करने की कोशिश करता हूं, मुलाह़ज़ा कीजिए :

आ़जिज़ी ओ इन्केसारी :

मुफ़्ती साह़ब की ज़ात, गुफ़्तगू, त़ौर व अत़्वार, लिबास व रेहाइश हर एक से सादगी और आ़जिज़ी झलकती थी, जिस कमरे में आप की रेहाइश थी, कभी अ़क़ीदत मन्दों की तादाद बढ़ने की वज्ह से जगह कम पड़ जाती, तो बिला तकल्लुफ़ कमरे में मौजूद आ़म अफ़राद को बिस्तर पर अपने साथ बैठा लेते जिस के एक या कई तजरिबे ख़ुद मुझे भी हैं।

इजलास व इजतेमाआ़त, इफ़्तेताह़ व इख़्तेतामे बुख़ारी, दस्तार बन्दी या आ़म ह़ालत में मुलाक़ात के लिए आने वाले उ़लमा, असातेज़ा की अज़ ख़ुद दस्त बोसी फ़रमा लेते। जो आप की कमाले आ़जिज़ी का वाज़ेह़ सुबूत है लेकिन इस के बा वुजूद अपने तेह़रीर कर्दा वसिय्यत नामे में, वसिय्यत नम्बर 9 और 10 आप की कमाले

आ़जिज़ी और ख़ुदा तरसी की बेहतरीन मिसाल है, मुलाह़ज़ा फ़रमाएं :

वसिय्यत नम्बर 9 :

मेरे नाम से मुरव्वजा उ़र्स न किया जाए अलबत्ता फ़ातेह़ा, ईसाले सवाब और दुआ ए मग़्फ़ेरत का एहतेमाम ज़रूर किया जाए।

वसिय्यत नम्बर 10 :

मुझे उन अल्क़ाबात से याद न किया जाए जिन का मैं अहल नहीं हूं। (तेह़रीरी वसिय्यत नामा)

दीनो मिल्लत का दर्द और तब्लीग़ी अस्फ़ार (सफ़र) :

एक सच्चा आ़लिमे दीन, अपने मज़्हब का मुत्तबेअ़, सुन्नत का पैरूकार, दीनी ह़मिय्यत व ग़ैरत का ह़ामिल होता है। वोह न अपने मज़्हब की तन्क़ीसो तौहीन बरदाश्त करता है। न अकाबिरीने उम्मत और उ़लमा पर इलज़ाम तराशी के वक़्त ख़ामोश बैठता है।

निजी मजालिस हों कि दीनी जल्से, सुन्नतों भरे इजतेमाआ़त हों कि मदारिस व जामेआ़त की दर्सगाहें, मुफ़्ती साह़ब हर जगह उ़लमा, त़लबा और मुबल्लिग़ीन को मस्लके ह़क़ की तरवीजो इशाअ़त, सुन्नतों को आ़म करने और अफ़्कारे बात़िला की तरदीद व इस्तेसाल की नसीह़त फ़रमाते, अपनी ज़ोफ़ साली को बयान करते हुवे इरशाद फ़रमाते : अब येह ज़िम्मेदारी तुम्हारी है आगे बढ़ो और दीने मतीन की ख़िदमत अन्जाम दो।

सर ज़मीने हिन्द के वोह सूबे, शेहर, क़स्बे और गाऊं जो मज़्हबी, इ़ल्मी और अ़मली लेह़ाज़ से आज भी पसमांदगी का शिकार हैं, जहां नूरे ईमान, बद मज़्हबी और कुफ़्रो इल्ह़ाद की ज़ेहरीली हवाओं की ज़द में रेहता है। छत्तीसगढ़, ओडीशा, तेलंगाना ख़ुसूसन एम पी के बाज़ ऐसे अ़लाक़े जहां पहुंचने के लिए सवारी का भी इन्तेज़ाम न होता, ऐसे ग़ैर मारूफ़ अ़लाक़ों में पहुंच कर रुश्दो हिदायत का काम अन्जाम देना भी इसी नज़्म की एक बेहतरीन और ह़सीन कड़ी है। ग़ालिबन उन अ़लाक़ों की तादाद सेंकड़ों से ज़ाइद होगी जहां दावते दीन के लिए आप तशरीफ़ ले गए।

ह़ज़रत की ज़िन्दगी के आख़री सालों में जिन में तक़रीबन सात साल मैं ने ख़ुद ह़ज़रत को देखा हर जानने वाला आप की सेह़त के ह़ाल से शायद वाक़िफ़ था। वुज़ू में ख़ुद से पैर धोना भी आप के लिए आसान न था, आप की एहलिया (बच्चों की अम्मी) या घर के दीगर अफ़राद येह काम अन्जाम देते, कहीं जाने के लिए सहारे की ज़रूरत पड़ती। इस के बा वुजूद ट्रेनों, गाड़ियों का आज़माइश भरा सफ़र करना, लोगों के सहारे जल्सागाह तक जाना, फिर स्टेज की सीढ़ियां चढ़ने उतरने के तक्लीफ़ देह मनाज़िर, हर ज़ी शुऊ़र मुह़िब को बे चैन कर देते थे, लेकिन दीने मुस्त़फ़ा की तब्लीग़, इस्लाम और एहले इस्लाम की इस्लाह़ व ख़ैरख़्वाही के जज़्बे से सरशार इस कोहे इस्तेक़ामत के सामने ख़ुद मसाइबो आलाम आ़जिज़ी का इज़्हार करते हुवे सरे तस्लीम ख़म कर देते थे।

असाग़िर नवाज़ी (छोटों पर शफ़्क़त) :

तश्कीले शख़्सिय्यत, किरदार साज़ी, ह़ौसला अफ़्ज़ाई भी आप का एक नुमायां वस्फ़ था। जिस की एक मिसाल नौजवान उ़लमा, त़लबा, शागिर्दों बल्कि शागिर्दों के शागिर्दों की दस्तबोसी कर लेना है। गोया येह मन्सबे इ़ल्म और इस से वाबस्ता ज़िम्मेदारियों की ख़ामोश तरबियत थी और ह़ुसूले फ़ज़्लो कमाल के लिए ह़ौसला अफ़्ज़ाई और तरग़ीब भी। अफ़राद साज़ी, असाग़िर नवाज़ी (छोटों पर शफ़्क़त) ह़ौसला अफ़्ज़ाई और तरबियते मुरीद की एक मिसाल मुलाह़ज़ा फ़रमाएं :

मुफ़्ती साह़ब के मुरीद ह़ज़रते मौलाना ह़बीबुल्लाह बेग मिस्बाही अज़्हरी उस्ताज़ जामेआ़ अशरफ़िया मुबारक पुर लिखते हैं : पीरे त़रीक़त, रेहबरे शरीअ़त, ख़लीफ़ए हुज़ूर क़ुत़्बे मदीना, ह़ज़रते मुफ़्ती अ़ब्दुल ह़लीम साह़ब क़िब्ला अशरफ़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه मेरे

बड़े मोहसिन और ख़ैरख़्वाह थे, मैं ने 1995 ई. में हज़रत के दस्ते हक़ परस्त पर बैअ़त की, इन्ही की सर परस्ती में दीनी तालीम का आग़ाज़ किया, इन्ही के क़ाइम कर्दा इदारे जामेअ़ा ज़ियाइया फ़ैज़ुर्रज़ा में हिफ़्ज़े कुरआन की तक्मील की, बादे अज़ां मदारिसे इस्लामिया की जानिब इन्हों ने ही मेरी राहनुमाई फ़रमाई, अमजदिया, अशरफ़िया जैसी अ़ज़ीमुश्शान दर्सगाहों में तालीम के लिए आमादा किया, बल्कि अज़हर शरीफ़ के लिए राह हमवार करने वाले भी आप ही हैं।"

मेहमान नवाज़ी :

मुझे कोई ऐसी मुलाक़ात याद नहीं जिस में बग़ैर ज़ियाफ़त के आप के यहां से वापसी हुई हो। येह कोई ख़ुसूसी बरताव नहीं था। बल्कि हर आने वाले पर ऐसी ही करम नवाज़ियां थीं। ब इसरार चाए, नाश्ता और खाना बाज़ दफ़अ़ा मुफ़्ती साहब ख़ुद अपने हाथों से पेश फ़रमाते थे।

हज़रत से आख़री मुलाक़ात रजबुल मुरज्जब 1442 हि. में हुई थी। मुफ़्ती साहब को जब मालूम हुवा कि कुछ लोग रोज़े से हैं तो फ़ौरन इफ़्तारी तैयार करने का हुक्म दिया। हम मन्अ़ करते रहे क्यूंकि आप के बड़े शेहज़ादे की तबीअ़त ख़राब होने की वज्ह से घर के अक्सर अफ़राद अस्पताल में थे। लेकिन इफ़्तार इसी दर (घर) का मुक़द्दर था जो ज़रूर नसीब हुवा।

मजलिसे इल्मो इरफ़ान :

मुफ़्ती साहब की मजलिसों में इल्मो तसव्वुफ़, ख़ौफ़े इलाही, इश्क़े मुस्तफ़ा, तज़केरए अकाबिरीन, अदबो एहतेराम, मज़हबो मिल्लत का दर्द सब बटता था। ज़रूरत थी देखने वाली आंखों की, सुनने वाले कानों की और ऐसे कुलूबो अज़हान (दिलों और ज़ेहनों) की जो हिक्मत व मआ़नी के इन मोतियों को समेट सकें। बहर हाल इन की मजलिस में बैठने वाला हर फ़र्द अपने अपने ज़र्फ़ के मुताबिक़ कुछ न कुछ ले कर ही उठता।

मन्ज़रे इस्लाम की तदरीस :

अपनी तदरीस के इब्तेदाई अय्याम (पेहले के दिनों) में बाज़ तदरीसी मसाइल और मुश्किलात का ज़िक्र मुफ़्ती साहब से किया था। आप ने ख़ूब मुतालआ़ करने की नसीहत फ़रमाई और इरशाद फ़रमाया : जब तक कोई बात ख़ुद न समझ लो, उसे दर्सगाह में बयान न करो। फिर इरशाद फ़रमाया : मन्ज़रे इस्लाम में जब तदरीसी ख़िदमत मेरे सिपुर्द की गई तो हुज़ूर मुफ़्ती ए आज़मे हिन्द رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने सब से पेहली बात येही इरशाद फ़रमाई : जब तक कोई बात अच्छी त़रह़ समझ न ली जाए उसे दर्सगाह में बयान न किया जाए।

प्यारे इस्लामी भाइयो ! फ़क़ीहे एहले सुन्नत मुफ़्ती अ़ब्दुल ह़लीम अशरफ़ी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की ज़ाते मुबारका कई औसाफ़े कमालात की जामेअ़ थी। ख़शिय्यते बारी तआ़ला, हुब्बे रसूले अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, ईसारो इख़्लास, वअ़्ओ एह़तियात़, ज़बान की ह़िफ़ाज़त, इस्तिग़ना व तवक्कुल, ईफ़ा ए अ़हद, अवरादो वज़ाइफ़, ख़ुसूसन दलाइलुल ख़ैरात शरीफ़ की पाबन्दी, लायानी (बेकार-फ़ालतू) अब्हास व इख़्तेलाफ़ात से दूर व नुफ़ूर, यक़ीने मोह़कम, अ़मले पैहम इन की ज़िन्दगी के दरख़्शां औसाफ़ थे। जो मुस्तक़िल तफ़्सील के मुतक़ाज़ी हैं।

रब्बे करीम इन की तुर्बत (मज़ार शरीफ़) पर अपनी रेह़मत का मींह (बारिश) बरसाए और हमें इन के नक़्शे क़दम पर चलने की तौफ़ीक़ बख़्शे। آمین ثم آمین،

یارَبَّ العالمین! بجاہِ سید المرسلین صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

अल्लाह देख रहा है !



फ़क़ीहे एहले सुन्नत की कुछ यादें कुछ बातें

मुहम्मद वसीम अकरम रज़वी मिस्बाही

बक़ियतुस्सलफ़, फ़क़ीहे एहले सुन्नत हज़रते मुफ़्ती अ़ब्दुल ह़लीम रज़वी अशरफ़ी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की ज़ाते गिरामी सलफ़ सालेह़ीन की ज़िन्दगी की आईनादार थी। आप को देख कर क़दीम बुज़ुर्गाने दीन की याद ताज़ा हो जाया करती थी। ब फ़ज़्लेही तआ़ला मुझे एक त़वील अ़र्से तक ह़ज़रत की ख़िदमत व सोह़बत से मुस्तफ़ीज़ होने का मौक़अ़ मयस्सर आया है। इस दरमियान जो कुछ भी देखा सुना, हमारे क़ल्बो जिगर पर इस के दूर रस असरात मुरत्तब हुवे। आप का तक़्वा, परहेज़गारी, आ़लिमाना जाहो जलाल, तालीमो तअ़ल्लुम में इन्हेमाक, त़ालिबीने उ़लूमे इस्लामिया से मह़ब्बत, अ़वाम इस्लामी भाइयों के साथ मुश्फ़िक़ाना बरताव और दाइ़याना उस्लूब सभी औसाफ़ दीदनी थे। आप से जुड़े चन्द वाक़ेआ़त जो फ़िल वक़्त सफ़ह़ए ज़ेह्न पर उभर रहे हैं, पेश करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं।

1 ह़ज़रत सब से ज़्यादा मुझ से मह़ब्बत करते हैं

मुफ़्ती साह़ब رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने ख़ुद से वाबस्ता लोगों को बहुत ज़्यादा मह़ब्बत दी, इसी वज्ह से मुतअ़ल्लिक़ीन की एक कसीर तादाद येही समझती रही कि ह़ज़रत सब से ज़्यादा मुझ से मह़ब्बत करते हैं।

ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के जनाज़े में शिर्कत की सआ़दत मिली, उस दौरान हम कहीं बैठते और ह़ज़रत से मुतअ़ल्लिक़ गुफ़्तगू शुरूअ़ होती तो कई ज़बानों से येह सुनने को मिलता :

ह़ज़रत मुझे बहुत मानते थे, ह़ज़रत मुझ से बहुत मह़ब्बत करते थे, ह़ज़रत मेरे बेटे को बहुत याद करते थे वग़ैरा वग़ैरा।

जब मैं दर्जए सालिसा में था तो एक मरतबा ह़ज़रत फ़रमाने लगे : एक उस्ताद का कमाल येह है कि उस का हर शागिर्द येह समझे कि मेरे उस्ताद मुझ से सब से ज़्यादा मह़ब्बत करते हैं, एक पीर का कमाल येह है कि उस का हर मुरीद येह समझे कि मेरा पीर मुझ से सब से ज़्यादा मह़ब्बत करता है।

2 अन्जाने में ना बालिग़ त़लबा की मिठाई खा लेने पर माज़ेरत

येह कोई 2006 ई. की बात है, जब मैं ह़ज़रत के क़ाइम कर्दा इदारे जामेआ़ ज़ियाइया फ़ैज़ुर्रज़ा, ददरी सीतामढ़ी बिहार में दर्जए सालेसा का त़ालिबे इ़ल्म था, मुफ़्ती साह़ब ददरी में तशरीफ़ फ़रमा थे, ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की छटी शरीफ़ की मुनासबत से त़लबा ने अपने अपने कमरे के एतेबार से फ़ातिह़ा के लिए शीरीनी (मिठाई) का इन्तेज़ाम किया था, हमारे कमरे वालों ने ह़ल्वा बनाया था, जबकि दरजए ह़िफ़्ज़ के कुछ त़लबा ने बालूशाही मिठाई का इन्तेज़ाम कर रखा था, तमाम की शीरीनी यक्जा की गई, असातेज़ा व त़लबा जम्अ़ हुवे, मुख़्तसर मेह़फ़िल हुई फिर ह़ज़रत ने दुआ़ फ़रमाई, इख़्तेतामे मेह़फ़िल पर असातेज़ा ने मुफ़्ती साह़ब से अ़र्ज़ किया कि कुछ शीरीनी आप भी तनावुल फ़रमाएं, मुफ़्ती

साहब ने एक बालूशाही ले ली, हज़रत अपने कमरे में चले गए, फिर अचानक मुझे बुलवाया और फ़रमाया : बेटे ! जो शीरीनी मैं ने खाई है इस में किसी ना बालिग़ का पैसा तो शामिल नहीं था ? मैं ने अ़र्ज़ की, कि मैं ने अपने कमरे में इस बात की एह़तियात़ की थी कि किसी ना बालिग़ की रक़म शामिल न करूं, अलबत्ता आप ने जो तनावुल फ़रमाया है उस का मुझे इ़ल्म नहीं । हज़रत परेशान हो गए और फ़रमाया : बेटे ! पता करो, जब मालूमात लीं तो पता चला कि तक़रीबन 15 त़लबा इस में ना बालिग़ हैं, मुफ़्ती साहब ने तमाम को बुलवाया और सिर्फ़ एक मिठाई जिस की क़ीमत दो रुपिये होगी इस के इ़वज़ एक एक त़ालिब को दस दस रुपिये दिए और माज़ेरत भी चाही ।

3 हुक़ूक़ुल इ़बाद का पास व लेह़ाज़

शरीअ़त का पास व लेह़ाज़, लोगों की कहीं दिल आज़ारी न हो जाए और किसी का कोई ह़क़ न मारा जाए, हज़रत इन बातों का ख़ास ख़याल फ़रमाते, ददरी में जब मस्जिद नहीं बनी थी तो तमाम नमाज़ें जामेअ़ा के कमरों के बाहर अदा की जाती थीं, इमाम का मेह़राब "रज़ा हॉल" का दरवाज़ा बन जाता और मुक़्तदियों की एक लम्बी सफ़ बन जाती, एक मरतबा आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ददरी ही में तशरीफ़ फ़रमा थे, अ़स्र की अज़ान हो चुकी थी, जमाअ़त खड़ी होनी थी, मुफ़्ती साहब का इन्तेज़ार था, आप वुज़ू फ़रमा कर अपने कमरे से बाहर तशरीफ़ लाए और सीधे "रज़ा हॉल" के दरवाज़े के सामने उस जगह खड़े हो गए जहां तक्बीर कही जाती थी और तक्बीर शुरूअ़ कर दी, इमाम साहब आगे बढ़े और नमाज़ शुरूअ़ कर दी, जब नमाज़ मुकम्मल हो चुकी तो मुफ़्ती साहब رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने पूछा कि अज़ान किस ने दी थी ? बताया गया कि फ़ुलां त़ालिबे इ़ल्म ने, आप ने उस त़ालिबे इ़ल्म से माज़ेरत चाही कि तक्बीर केहने का ह़क़ आप ही का था, लेहाज़ा मुझे मुआ़फ़ फ़रमाएं ।

4 रंगे ज़राफ़त (फ़ेहमो फ़िरासत)

मौलाना शहाबुद्दीन सेहसरामी भी ददरी में ज़ेरे तालीम थे और मुफ़्ती साहब رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के ख़ास ख़ुद्दाम में इन का शुमार हुवा करता था, एक मरतबा आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने मौलाना से फ़रमाया कि आदमी का भेजा खाते हो ??

मौलाना मुस्कुराते हुवे केहने लगे : नहीं ह़ज़रत । आप ने फिर फ़रमाया : आदमी का भेजा नहीं खाते ??

अब ज़रा संभल कर केहने लगे : नहीं ।

मुफ़्ती साहब ने फिर फ़रमाया : ख़ुदा की क़सम ! मैं तो खाता हूं, आप नहीं खाते ??

अब मौलाना ज़रा परेशान हो गए ।

ह़ज़रत ने उन की परेशानी देखते हुवे मुस्कुरा कर फ़रमाया : आदमी का भेजा यानी किसी इन्सान का **भेजा हुवा** खाना (अ़त़िया-तोह़फ़ा) क्या येह नहीं खाते ??

5 इस्लाह़ व तरबियत का मुनफ़रिद अन्दाज़

मुफ़्ती साहब رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बड़ी नफ़ीस त़बीअ़त के मालिक थे । इस मुआ़मले में आप तरबियत इस अन्दाज़ से फ़रमाते कि सामने वाले को बुरा भी नहीं लगता और वोह नसीह़त भी पूरी ज़िन्दगी याद रेहने के लिए काफ़ी हो जाया करती ।

ग़ालिबन येह 2019 ई. की बात होगी । मैं और मेरे रफ़ीक़ मौलाना सरफ़राज़ मिस्बाही मुरादाबादी, मुफ़्ती साहब رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ज़ियारत की ख़ातिर नेपाल गंज से ददरी गए हुवे थे, उन दिनों ह़ज़रत वहीं तशरीफ़ फ़रमा थे, दोपहर के खाने का वक़्त था, ह़ज़रत के लिए दस्तर ख़्वान लगाया गया, दस्तर ख़्वान लगाने वाले नाज़िमे जामेअ़ा ह़ज़रत मौलाना शहाबुद्दीन साहब دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के शेहज़ादे जलालुद्दीन नूरी थे, उन्हों ने दस्तर ख़्वान तो लगाया लेकिन शायद उन की तवज्जोह नहीं गई कि दस्तर ख़्वान पर दाल के धब्बे लगे हैं, अब जब ह़ज़रत की नज़र पड़ी तो आप ने फ़ौरन फ़रमाया : दोस्त ! (ह़ज़रत महब्बत में "नूरी" को दोस्त कहा करते थे) येह किस की निशानी है ???

फिर मुस्कुराते हुवे फ़रमाया : तुम्हें एक वाक़ेआ़ सुनाता हूं, एक शख़्स अपने एक पुराने दोस्त से मिलने गया । जब वहां पहुंचा तो देखा कि उस का दोस्त हुक़्क़ा पी रहा है, जैसे ही उस की निगाह उस पर पड़ी इस्तेक़बाल के लिए ह़ाज़िर हुवा, ख़ैर ख़ैरियत दरयाफ़्त की, बड़ी ताज़ीम से उसे बिठाया और उस की त़रफ़ हुक़्क़ा बढ़ाते हुवे कहा

कि येह लें, मैं जब तक मज़ीद अंगारे लाता हूं, और अंगारे लेने चला गया। अब जब उस ने हुक़्क़े को मुंह से लगा कर एक कश लिया तो मेहसूस हुवा कि पानी काफ़ी बदबूदार है, लेहाज़ा उस ने सारा बदबूदार पानी फेंक कर साफ़ पानी भर लिया और फिर से कश लेने लगा, इतने में उस का दोस्त अंगारे ले कर वापस आ गया, अब जैसे ही उस की निगाह पानी पर पड़ी तो पूछा : येह पानी कैसा है ? उस ने जवाब दिया कि मैं ने हुक़्क़े का पानी बदल दिया है। बस येह सुनना था कि वोह ज़मीन पर लोट पोट होने लग गया और धाड़ें मार कर रोने लगा। अब उस का दोस्त बड़ा परेशान हुवा कि ख़ुदा जाने क्या हो गया है ? बड़ी मुश्किल से उस को संभाला और पूछा भाई ! आख़िर हो क्या गया है तुम्हें ? तुम इतना रो क्यूं रहे हो ? उस ने जवाब दिया : तुम ने येह क्या कर दिया, सारा पानी फेंक दिया, तुम को पता है येह पानी हम ने दादा के ज़माने से संभाल रखा था, येह उन की निशानी थी।

अब मुफ़्ती साहब फ़रमाने लगे : बेटे ! येह धब्बे किस की निशानी हैं ?

6 ख़ुदा का शुक्र है कि अ़ब्दुल ह़लीम का हाथ बढ़ा भी तो अपने ही माल की त़रफ़

येह कोई 2008 ई. की बात है, जब मैं शायद दरजए ख़ामेसा में था, मेरे उस्ताज़े मोह़तरम मुफ़्ती राह़त एह़सान बरकाती دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने मुझे मीरास का एक मस्अला तलाश करने को कहा था, इ़शा के बाद मैं लाइब्रेरी में फ़तावा आ़लमगीरी खोले मस्अला तलाश कर रहा था कि एक त़ालिबे इ़ल्म आ कर केहने लगे : मुफ़्ती साहब याद फ़रमा रहे हैं। मैं फ़ौरन ह़ाज़िरे ख़िदमत हुवा, ह़ज़रत ने मुझे देख कर प्लेट में रखी नमकीन की त़रफ़ इशारा करते हुवे फ़रमाया : बेटे येह आप की है ? मैं ने कहा : नहीं। आप परेशान हो कर केहने लगे : तो फिर किस की है ? पता लगाओ, मैं समझा तुम्हारा है इस लिए मैं ने इस से आए मेहमान को भी कुछ खिलाया है और साथ ख़ुद भी कुछ खा लिया है।

अब मैं त़लबा में पता लगाने लगा कि किस ने रखा है, पता चला कि रिज़्वान भाई (फ़िल वक़्त मुदर्रिस मद्रसतुल मदीना आकोला) ने रखा है, मैं ने रिज़्वान भाई से पूछा : येह किस की है ? उन्हों ने कहा : आप ही ने तो सुब्ह़ मेहमान को नाश्ता कराने के लिए पैसे दिए थे, उसी के हैं।

दर अस्ल हुवा कुछ यूं था कि सुब्ह़ मुझे ख़ुद मुफ़्ती साहब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने कुछ पैसे दे कर कहा था कि इस से आए हुवे मेहमान को नाश्ता करवा देना, मैं ने येह ज़िम्मेदारी रिज़्वान भाई को सिपुर्द कर दी थी।

अब मैं मुस्कुराता हुवा ह़ज़रत की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा और सारा माजरा केह सुनाया। ह़ज़रत की आंखें डबडबा गईं और फ़रमाया जिस का मफ़्हूम था : **ख़ुदा का शुक्र है कि अ़ब्दुल ह़लीम का हाथ बढ़ा भी तो अपने ही माल की त़रफ़**। फिर मुझे अपने क़रीब बिठाया और ग़ौसे आज़म رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का वोह वाक़ेआ़ सुनाया जो कुछ यूं था कि ज़मानए त़ालिबे इ़ल्मी में एक मरतबा ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को बहुत तेज़ भूक लगी, कई दिनों से आप ने कुछ खाया नहीं था, हाथ भी दिरहमो दीनार से ख़ाली, आप किसरा के महल की त़रफ़ चले, किसरा के महल फ़त्ह़ हुवे बरसों गुज़र चुके थे लेकिन फिर भी वहां जा कर कुछ तलाश किया जाता तो कुछ न कुछ हाथ लग जाता, आप जब वहां पहुंचे तो देखा कि तक़रीबन चालीस फ़ुक़रा पेहले ही से वहां तलाश में लगे हुवे हैं, उन फ़क़ीरों को देख कर वापस पलट आए कि कहीं मैं ने तलाश किया और मेरे हाथ कुछ लग गया तो कहीं उन फ़ुक़रा को तक्लीफ़ न हो जाए। वहां से लौट कर आप एक मस्जिद में बैठ गए। देखा कि एक मुसाफ़िर अपने सामने कुछ रोटियां और भुना हुवा गोश्त रख कर खाने की तैयारी में है। जैसे ही आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की निगाह पड़ी, कई दिनों की फ़ाक़ा कशी थी तो दिल ने चाहा कि उस मुसाफ़िर ही से कुछ मांग लूं। फ़ौरन ग़ैरत आई कि सवाल नहीं करना, अब ख़ुद को मलामत भी करने लगे कि सवाल करने का ख़याल ही क्यूं आया ? इतने में मुसाफ़िर की निगाह आप पर पड़ी, उस ने कहा : शेहज़ादे ! आओ मेरे साथ खाना खा लो। अब जब ख़ुद मुसाफ़िर ने दावत दी तो आप ने क़बूल फ़रमाई, साथ जा बैठे। मुसाफ़िर ने एक

लुक़्मा उठाते हुवे पूछा : शेहज़ादे ! आप का क्या नाम है ? आप ने फ़रमाया अ़ब्दुल क़ादिर, मुसाफ़िर रुक गया, फिर पूछा : घर कहां है ? आप ने फ़रमाया : जीलान । बस इतना सुनना था कि मुसाफ़िर कांप उठा, उस के हाथ से लुक़्मा गिर गया और सारा खाना ग़ौसे पाक के सामने करते हुवे माज़ेरत करने लगा कि येह सब आप ही का है । हुवा यूं कि जब मैं जीलान से चला था तो आप की वालिदए माजेदा ने कुछ रक़म मुझे येह केह कर दी थी कि आप तक पहुंचा दूं । मैं कई दिनों से आप को तलाश कर रहा था । लेकिन आप न मिले यहां तक कि मेरी बची हुई रक़म भी ख़र्च हो गई, अब मेरे पास बस येही अमानत रेह गई थी, आख़िरे कार भूक से निढाल हो कर आप की अमानत से येह रोटियां और गोश्त ख़रीद लिया ।

ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने जब येह सुना तो ख़ुदा का शुक्र अदा किया कि उस का शुक्र है कि मेरा दिल भी अगर कुछ मांगने की त़रफ़ माइल हुवा तो वोह मेरा ही माल था ।

मुफ़्ती साहब ने इस वाक़िए़ को इस अन्दाज़ से बयान किया कि ख़ुद भी आंसू बहाते जाते और मुझे भी रुलाते जाते । अल्लाहु अक्बर ! वोह कैसी रिक़्क़त अंगेज़ घड़ी थी ।

7 काली च्यूंटी को ज़रर न पहुंच जाए, इस के लिए वुज़ू करते करते रुक गए

ददरी में अक्सर मुफ़्ती साहब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को वुज़ू करवाने की सआ़दत नसीब होती । ग़ालिबन अ़स्र का वक़्त था मैं वुज़ू करवा रहा था कि अचानक मुफ़्ती साहब पानी बहाने से रुक गए और अपने क़दमों की जानिब देखने लगे । मैं ने सोचा कि अचानक क्यूं रुक गए ? जब मैं ने ग़ौर से देखा तो छोटी सी एक काली च्यूंटी गुज़र रही थी । मुफ़्ती साहब ने मुझ से फ़रमाया कि बेटे ! अल्लाह तआ़ला की क़ुदरत के आगे हम इस च्यूंटी से भी ज़्यादा कमज़ोर हैं । जब वोह गुज़र गई तो फिर मुफ़्ती साहब ने वुज़ू फ़रमाया ।

8 सैयद ज़ादों का एह़तेराम

2013 ई. में जब मेरा अल जामेअ़तुल अशरफ़िया का आख़िरी साल था, मुफ़्ती साहब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की ज़ियारत के लिए ददरी आया हुवा था, रात का वक़्त था, मुफ़्ती साहब ददरी मद्रसे के सेहन में तख़्त पर लेटे हुवे थे, मैं सिरहाने बैठ कर बरकतें लूट रहा था, चन्द त़लबा ह़ज़रत के दोनों जानिब बैठ कर पैर दबा रहे थे, अचानक मेरी तवज्जोह गई कि पैर दबाने वालों में एक सैयद ज़ादे भी हैं । ह़ज़रत सादाते किराम की बहुत ज़्यादा इ़ज़्ज़त किया करते, उन से ख़िदमात लेने में ह़द दरजा एह़तियात़ फ़रमाते । अब मुझे बेचैनी होने लगी कि सैयद ज़ादे पैर दबा रहे हैं ह़ालांकि ह़ज़रत को बिल्कुल पसन्द नहीं, लेकिन इस से ह़ज़रत को मुत्त़लअ़ कैसे करूं ? इसी कश्मकश में था कि मुझे एक तरकीब सूझी, मैं ने क़रीब बैठे त़ालिबे इ़ल्म से पूछा : आप किस दरजे में पढ़ते हैं ? उन्हों ने कहा : फ़ुलां, फिर उन के बाज़ू में मौजूद ख़िदमत करते सैयद ज़ादे से क़स्दन "सैयद" केह कर पूछा कि सैयद साहब ! आप किस दरजे में पढ़ते हैं ? मुफ़्ती साहब को जैसे ही पता चला कि कोई सैयद ज़ादे भी पैर दबा रहे हैं तो फ़ौरन अपने दोनों पैर समेट लिए और फ़रमाया : कौन सैयद है ? फिर उन्हें अपने क़रीब बुलाया और मुआ़फ़ी मांगी, फिर मुझ पर नाराज़गी का इज़हार फ़रमाने लगे कि तुम ने मुझे पेहले बताया क्यूं नहीं ?

9 फ़िरासते ईमानी और अन्दाज़े इस्लाह़ो तरबियत

येह कोई 2003 ई. की बात है, जब मैं ददरी में एदादिया या ऊला दरजे का त़ालिबे इ़ल्म था । वहां येह माह़ोल था कि उ़मूमन दीगर मदारिस की त़रह़ त़लबा को कुरआन ख़्वानी में बाहर नहीं भेजा करते, अगर किसी को कुरआन ख़्वानी करवानी होती तो फ़ज्र के बाद त़लबा तक़रीबन बीस मिनट तिलावते कुरआन करते ही थे, उसी में फ़ातिह़ा ख़्वानी हो जाती । इसी अन्दाज़ की बादे फ़ज्र कुरआन ख़्वानी थी, मुझे किसी ने येह ग़लत़ मस्अला बता दिया था कि अगर मुकम्मल पारह पढ़ने में दिल न लगे तो पारे के सफ़ह़ए अव्वल व सफ़ह़ए आख़िर को पढ़ कर रख देना, फिर जब दिल करे तो पढ़ लेना, मैं ने ऐसा ही किया

और पारह रख दिया, अब येह सिर्फ़ मैं जानता था कि मैं ने क्या किया है, ब ज़ाहिर किसी और को इस बात की ख़बर नहीं थी।

अ़स्र के बाद मुफ़्ती साहब رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه मद्रसे के सेह़न में कुरसी पर बैठे थे, मैं ह़ज़रत के पीछे खड़े हो कर गर्दन दबा रहा था, ह़ज़रत ने फ़रमाया : बेटे वसीम !

मैं ने अ़र्ज़ किया : जी ह़ज़रत !

आप ने फ़रमाया : मैं मर जाऊंगा तो ईसाले सवाब के लिए कुरआन शरीफ़ पढ़ोगे ?? मैं ने कहा : जी ह़ज़रत। आप ने फ़रमाया : कितना पढ़ोगे ? मैं ने कहा : एक ख़त्मे कुरआन। आप ने फ़रमाया : पेहला सफ़ह़ा, आख़री सफ़ह़ा पढ़ कर तो नहीं रख दोगे ?

10 क़श्फ़े कुलूब और दिली ख़यालात से आगाही

एक बार मुफ़्ती साहब رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه हमारे शेहर टटलागढ़ (ओडीशा) आए हुवे थे। ह़ज़रत पलंग पर तशरीफ़ फ़रमा थे, सामने ज़मीन पर दावते इस्लामी के एक दोस्त बैठे हुवे थे, मैं भी आप के सामने ज़मीन पर बैठ गया और चेहरे की ज़ियारत करने लगा। इतने में मेरे दिल में ख़याल आया कि क्यूं न ह़ज़रत से तबर्रुकन ह़ज़रत का इमामा मांग लूं। चूंकि मुफ़्ती साहब رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का मेरे दिल के ख़याल पर मुत्तलअ़ होना मेरे लिए कोई नई बात नहीं थी, इस लिए मैं ने दिल ही दिल में ह़ज़रत से अ़र्ज़ किया कि हुज़ूर इमामा शरीफ़ तबर्रुकन इनायत फ़रमा दें। आप ने मेरी त़रफ़ देखा, मुस्कुराए और मेरे बाजू में बैठे शख़्स से फ़रमाने लगे : कुछ लोग इमामा तबर्रुक के त़ौर पर मांगते हैं, यूं तो मेरे पास इमामे बहुत हैं, लेकिन हरे रंग में अभी एक ही है। उसी कमरे में साह़िबे ख़ाना सब के लिए चाए ले कर आए, मुफ़्ती साहब को सब से पेहले पेश की गई और फिर दीगर ह़ाज़िरीन की त़रफ़ बढ़ाने लगे, जब उन्हों ने मेरी त़रफ़ चाए बढ़ाई तो मैं ने लेने से इन्कार किया और फिर दिल ही दिल में ह़ज़रत की त़रफ़ देखते हुवे कहा कि आप देंगे तो लूंगा, बस इतना केहना था कि मुफ़्ती साहब ने मुझे अपनी चाए इनायत फ़रमा दी।

11 नमक से खाने की इब्तेदा और खाने को ऐब लगाने से बचने का मुन्फ़रिद अन्दाज़

येह शायद 2008 ई. की बात होगी, मुफ़्ती साहब رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ददरी जामेआ़ में क़ियाम तो करते थे, लेकिन आप का खाना आप के छोटे भाई मर्ह़ूम ह़ाजी तस्लीम रज़वी (साबिक़ा नाज़िमे जामेआ़, अल्लाह तआ़ला इन की क़ब्र पर अपनी रेह़मत का नुज़ूल फ़रमाए) के घर ही से आता। आप जामेआ़ के मत़बख़ (कीचन) का नमक भी इस्तेमाल न फ़रमाते, आप खाने से पेहले और खाने के बाद नमक ज़रूर चखते, कभी अगर इत्तेफ़ाक़ से ऐसा होता कि नमक नहीं आ पाया तो घर से नमक मंगवाते अगर्चे इस के लिए इन्तेज़ार करना पड़े। एक दिन ह़स्बे मामूल इ़शा के बाद मुफ़्ती साहब رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का खाना आ गया और मैं दस्तर ख़्वान पर लगाने की तैयारी करने लगा। आज खाने में खीरा भी आया हुवा था लेकिन कटा हुवा नहीं था। मैं ने खीरा काटा तो दिल में ख़याल आया कि एक टुकड़ा खा कर देख लूं कि कहीं कड़वा तो नहीं, फिर ज़ेहन में आया कि पता नहीं शरअ़न इस की मुझे इजाज़त भी है कि नहीं। इसी कश्मकश में चखे बग़ैर खीरा काट कर दस्तरख़्वान पर रख दिया। उन दिनों मेरे भाई ह़ाजी शब्बीर और अशरफ़ भाई (कटक) भी ददरी आए हुवे थे, मुफ़्ती साहब رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने उन्हें भी साथ खाने की दावत दे दी। खाना शुरूअ़ हुवा, मुफ़्ती साहब के साथ मेहमान भी खाने लगे। अब जब भाई ने खीरा मुंह में लिया तो काफ़ी कड़वा था, फ़ौरन शिकायत वाले अन्दाज़ में मेरी त़रफ़ मुतवज्जेह हुवे कि तुम ने मुफ़्ती साहब को कड़वा खीरा खिला दिया ! ह़ालांकि मुफ़्ती साहब उस से पेहले ही खा चुके थे लेकिन कुछ भी इज़हार नहीं फ़रमाया था। मुझे बहुत शर्मिन्दगी हुई, ह़ज़रत ने फ़रमाया : इन हाथों से मीठा मीठा तो खाते ही हैं, आज कड़वा भी खा लिया है।

12 दुरुस्त जवाब पर त़ालिबे इल्म की ह़ौसला अफ़ज़ाई

मुफ़्ती साहब की सोह़बत में कुछ न कुछ सीखने को ज़रूर मिलता, आप त़लबा को हुसूले इल्म पर अक्सर उभारा करते। 2004 ई. की बात है जब मैं दर्जए ऊला का

त़ालिबे इ़ल्म था, रात के वक़्त मुफ़्ती साहब رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه अपने कमरे में ज़मीन पर दोनों पैर फैलाए तशरीफ़ फ़रमा थे, उस वक़्त हम तीन त़लबा आप की ख़िदमत में ह़ाज़िर थे, दो दर्जए राबेआ़ के और एक मैं, हम में से एक त़ालिबे इ़ल्म मुफ़्ती साहब के पीछे घुटनों के बल खड़े हो कर सर पर तेल लगा रहे थे जब कि हम दोनों एक एक पैर दबा रहे थे। मुफ़्ती साहब ने पूछा कि अगर कपड़े में कहीं नजासत लग कर सूख जाए और पता न चले कि कहां लगी है तो उस को पाक करने का क्या त़रीक़ा है ??

मैं चूंकि दर्जए ऊला का त़ालिबे इ़ल्म था लेहाज़ा ख़ामोश रहा, मेरे साथ जो दरजए राबेआ़ के त़ालिबे इ़ल्म थे उन्हों ने कहा कि पूरा कपड़ा धोया जाएगा। आप ने फ़रमाया : मैं येह नहीं पूछ रहा कि मुस्तह़ब क्या है बल्कि येह पूछ रहा हूं कि किस जगह को धोना ज़रूरी है ? अब मैं ने झिझकते हुवे अ़र्ज़ किया कि गुमान करेगा कि कहां नजासत लगी है, जहां दिल जम जाए उसी जगह को धो लेगा। मुफ़्ती साहब ने पूछा : तुम्हें किस ने बताया ? मैं ने अ़र्ज़ की : भाई से सुना था। अब मुफ़्ती साहब मेरी त़रफ़ झुके, मेरी पीठ पर थपकी दी और फ़रमाया : देखो ! कैसे मस्अला याद रखा है, फिर फ़रमाया : बेटे ! इसे "गुमान करना" नहीं केहते बल्कि "तह़र्री"(सोचना) केहते हैं।

13 बेटा ! हम ने जो पढ़ा है उस पर अ़मल करने की कोशिश की है

दर्जए राबेआ़ की बात है, हम उस्ताद साह़ब के पास कोई किताब पढ़ रहे थे, सबक़ पढ़ लेने के बाद हमारे उस्ताद साह़ब ने तमाम दर्जे वालों से वुज़ू में सर के मस्ह़ का त़रीक़ा पूछा और फ़रमाया कि कर के दिखाओ। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मुझे सह़ीह़ त़रीक़ा बताने की सआ़दत मिली लेकिन मैं ने जब कानों का मस्ह़ किया तो पेहले शहादत की उंगली से मस्ह़ किया, फिर छुंगलिया (सब से छोटी उंगली) को कानों के सूराख़ में दाख़िल किया, उस्ताद साह़ब ने फ़रमाया कि बक़िया तो ठीक है, येह छोटी उंगली को क्यूं दाख़िल किया ? क्यूंकि सर के मस्ह़ के वक़्त इस उंगली का इस्तेमाल हो चुका था।

मैं ने अ़र्ज़ किया कि मुफ़्ती अ़ब्दुल ह़लीम साह़ब क़िब्ला को मैं ने ऐसे ही करते देखा है। उस्ताद साह़ब फ़रमाने लगे कि तुम को देखने में ग़लती हुई होगी। दर्जे का वक़्त ख़त्म हुवा, हम अपने अपने कमरे में आ गए। अब मुझे बेचैनी होने लगी कि मैं ने सह़ीह़ देखा और अच्छी त़रह़ देखा है, मुफ़्ती साह़ब वुज़ू इसी त़रह़ फ़रमाया करते हैं, फिर मैं ने सोचा कि जब मुफ़्ती साह़ब ऐसा करते हैं तो इस का तज़केरा किताब में ज़रूर होगा, अब मैं किताबों में तलाश करने लगा। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मुझे इस की सराह़त मिल गई कि कानों के सूराख़ में छोटी उंगली दाख़िल करना मुस्तह़ब है, मैं किताब ले कर अपने उस्तादे मोह़तरम की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा और मस्अला दिखा दिया। फिर जब मुफ़्ती साह़ब رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ददरी तशरीफ़ लाए तो मैं ने दर्जे का पूरा वाक़िआ़ आप को सुनाया, जब ह़ज़रत सुन चुके तो फ़रमाया : बेटे ! اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ हम ने जो कुछ पढ़ा है उस पर अ़मल की कोशिश की है।

14 सफ़र में भी नमाज़ों का एहतेमाम

मुफ़्ती साह़ब क़िब्ला कहीं दूर के स्टेशन से सफ़र पर थे, ह़ज़रत का टिकट ए सी में था और इत्तेफ़ाक़ से मुझे भी रात में उसी ट्रेन से सफ़र करना था। मुझे येह इ़ल्म था कि मुझे जो ट्रेन पकड़नी है उस में ह़ज़रत पेहले ही से तशरीफ़ फ़रमा हैं, अलबत्ता मेरा सफ़र ग़ालिबन जनरल डब्बे में था। अब ख़्वाहिश थी कि ह़ज़रत की जितनी जल्दी हो सके ज़ियारत नसीब हो जाए, लेकिन रात के वक़्त ह़ज़रत आराम फ़रमा होंगे इस ख़याल से अन्दर नहीं गया और दूसरी बात येह भी थी कि मेरा टिकट ए सी कोच का नहीं है। फ़ज्र के वक़्त ट्रेन एक स्टेशन पर रुकी, मैं अपने डब्बे से उतर कर जिस डब्बे में ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه थे उस के दरवाज़े के सामने टेहलने लगा कि मुझे पता था कि ह़ज़रत नमाज़ के लिए ज़रूर दरवाज़े पर आएंगे। बस हुवा भी येही कि मैं दरवाज़े के बाहर खड़ा था कि ह़ज़रत ने दरवाज़ा खोला और इस ह़ाल में बाहर आए कि आप के हाथ में टूंटी वाला वोही सुर्ख़ (लाल) लोटा था जिसे आप सफ़र में साथ रखा करते थे।

15 ग़रीबों की दिलजूई

मई-जून का महीना था, मुफ़्ती साहब क़िब्ला "ओडीशा" के एक शेहर "कनटाबांजी" आए हुवे थे, आप का क़ियाम हाजी अय्यूब के घर पर था। हज़रत की ख़िदमत में, मैं भी हाज़िर था, एक ग़रीब ने येह ख़बर पहुंचाई कि नया घर बनाया है आप क़दम रंजा फ़रमाएं और दुआ फ़रमा दें। हज़रत ने क़बूल फ़रमाया, मुफ़्ती साहब رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को हाजी अय्यूब के घर से टटलागढ़ आना था। आप ने कहा कि यहां से जाते वक़्त उन के घर होते चलेंगे, जिस कमरे में हज़रत तशरीफ़ फ़रमा थे एरकन्डीशन्ड था, फिर जिस गाड़ी पर आप सवार हुवे वोह भी एरकन्डीशन्ड थी, आप उस ग़रीब के घर तक़रीबन दोपहर 12 बजे तशरीफ़ लाए, मिट्टी का छोटा सा घर जिस पर टीनशेड डाला हुवा है, ऊंचाई इतनी कि झुक कर अन्दर जाना पड़ा, मुफ़्ती साहब अन्दर तशरीफ़ लाए, एक कुरसी पर बैठे, मैं हज़रत के पीछे खड़े हो कर हाथ वाले पंखे से हवा देने की कोशिश कर रहा था, जब तक हज़रत पसीने से शराबोर हो चुके थे, एहले ख़ाना ने हल्वा बनाया था, उस पर इत्मीनान से फ़ातेहा पढ़ा, दुआ की, फिर वहां से रवाना हुवे।

16 निगाहे विलायत की दूरबीनी

मेरे भाई हाजी शब्बीर साहब का बयान है कि एक मरतबा मुफ़्ती साहब رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه "ओडीशा" के शेहर "राऊरकेला" तशरीफ़ लाए हुवे थे, बयान के बाद लोग मुलाक़ात के लिए हाज़िर हुवे। उन्हीं मुलाक़ातियों में से किसी ने हज़रत से आगे के सफ़र से मुतअ़ल्लिक़ पूछ लिया। आप ने बड़े इत्मीनान से अपना कई दिनों का जदवल बताया कि फुलां तारीख़ को ददरी जाना है, वहां से फुलां तारीख़ को वापसी है और फुलां तारीख़ को *jnaneswari Exp* से लौटना है, येह ट्रेन रांची हो कर जाएगी। भाई केहते हैं कि मैं भी सारी बातें सुन रहा था, जैसे ही मैं ने सुना कि आप फ़रमा रहे हैं, येह ट्रेन रांची हो कर जाएगी तो फ़ौरन मेरे मुंह से निकला : येह गाड़ी टाटा हो कर जाएगी। मुफ़्ती साहब ने फ़रमाया : रांची हो कर जाएगी। भाई ने फिर कहा : येह ट्रेन टाटा हो कर जाती है। इस पर मुफ़्ती साहब ख़ामोश हो गए। भाई ने सोचा कि मुफ़्ती साहब को ट्रेनों से मुतअ़ल्लिक़ बहुत मालूमात हैं लेकिन शायद अभी तवज्जोह नहीं हो पाई।

जिस तारीख़ को मुफ़्ती साहब को लौटना था, उस दिन टाटा के आसिफ़ भाई ने शब्बीर भाई को कॉल लगाई और पूछा कि मुफ़्ती साहब किस कोच में हैं, ट्रेन अभी रांची पहुंचने वाली है, इस्लामी भाई नाश्ता ले कर गए हैं। भाई ने हैरत से पूछा : येह ट्रेन तो टाटा हो कर जाती है, रांची तो इस का रूट ही नहीं। तब आसिफ़ भाई ने बताया कि आज चकधरपुर में कुछ रेल पटरी का मस्अला हो गया है इस लिए इस रूट की ट्रेनें रांची हो कर गुज़र रही हैं।

17 एक ह़ासिद के दिल ख़राश जुमले पर सब्र

हर ज़माने में औलिया ए किराम के जहां मोतक़िदीन रहे हैं, वहीं ख़ुद इन्ही की क़ौम ने इन्हें अपने ह़सद व नादानी के बाइस परेशान भी किया है, एक वाक़िआ शब्बीर भाई ने बताया कि :

मुफ़्ती साहब رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه टाटा रेलवे स्टेशन पर उतरे। तेज़ धूप थी, स्टेशन से बाहर आने के लिए काफ़ी लम्बा चलना पड़ गया था, इतने में किसी की कॉल आई। आप ने कॉल रीसीव की और फ़रमाया : मैं अभी टाटा प्लेटफ़ॉर्म पर उतरा हूं, थोड़ी देर बाद बात होती है। सामने से कॉल करने वाला ह़ासिद केहता है : टाटा प्लेटफ़ॉर्म पर तो उतर गए हो, एहले सुन्नत के प्लेटफ़ॉर्म पर कब उतरोगे ? सुन कर आप ने ख़ामोशी इख़्तियार की, पलट कर कुछ न फ़रमाया।

18 गालियां सुन कर सब्रो तह़म्मुल

इसी त़रह़ एक मरतबा मुफ़्ती साहब رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه रात भर किसी प्रोग्राम में रहे, सुब्ह़ बड़ी ख़राब सड़क से सफ़र कर के वापस पहुंचे, अपना सुब्ह़ का वज़ीफ़ा (तक़रीबन डेढ़ से दो घंटे का) मुकम्मल किया। अब किसी की कॉल आई, कॉल करने वाले ने पेहले येह कन्फ़र्म किया कि येह मुफ़्ती साहब ही का नम्बर है, फिर معاذالله गालियां बकता चला गया। हज़रत ने कॉल रख दी और अपने काम में मश्ग़ूल हो गए, येह तक न कहा कि कैसे लोग हैं ?

19 हाए ! अपने रज़्ज़ाक़ को भी नहीं जानता

येह वाक़िआ भी अपने भाई ही से सुना कि ओडीशा ही के एक देहात में आप तशरीफ़ फ़रमा थे, एक शख़्स आया और कहा कि मालो दौलत के लिए दुआ फ़रमा दें। मुफ़्ती साहब رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने शायद उसे नमाज़ के बाद का कोई वज़ीफ़ा बताना था, आप ने फ़रमाया : नमाज़ तो पढ़ते हैं। अभी इतना ही कहा था कि सामने से एक शख़्स ने कहा : येह तो ईद बक़र ईद भी नहीं पढ़ता। इतना सुनना था कि मुफ़्ती साहब ने उसे समझाने के लिए इरशाद फ़रमाया कि हम उस की ना फ़रमानियों में लगे रहें, हम को कौन रिज़्क़ देता ? वोही ना ?

इस पर उस शख़्स ने कहा : मैं कमाता हूं तो मिलता है। फिर आप ने समझाने के लिए कहा कि अल्लाह तआ़ला ही हमें रिज़्क़ देता है। इस पर उस ने फिर वोही कहा कि मैं कमाता हूं तो खाता हूं। अब इस पर मुफ़्ती साहब फूट फूट कर रोने लगे, कि हाए ! अपने रज़्ज़ाक़ को भी नहीं जानता।

20 अपने त़लबा पर मेहनत करो येही तुम्हारा वज़ीफ़ा है

ह़ज़रत के पास लोग आते और तावीज़ ले जाते, कोई वज़ीफ़ा पूछता तो आप बता देते कि येह पढ़ लिया करो। मैं ने भी चाहा कि मुझे कोई तावीज़ मिल जाए, जब भी मांगा तो आप ने कभी न दिया। अब इस में क्या ह़िक्मत थी अल्लाह जाने। दौराने त़ालिबे इल्मी एक मरतबा मैं ने वज़ीफ़ा मांगा तो आप ने फ़रमाया कि किताबों पर मेहनत करो। फिर अपना वाक़िआ बताया कि जब मैं बरेली शरीफ़ में ज़ेरे तालीम था, ह़ज़रते मोह़द्दिसे आज़मे हिन्द رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से मुरीद हुवा तो आप से अ़र्ज़ किया कि कोई वज़ीफ़ा अ़त़ा फ़रमा दें। आप ने फ़रमाया : मीज़ान व मन्शअ़ब (दर्से निज़ामी में पढ़ाई जाने वाली किताबों) की गर्दान (Revision) पढ़ा करो।

अब जब मैं (राक़िमुल हुरूफ़) ने दर्से निज़ामी मुकम्मल कर लिया और तदरीसी ख़िदमात अन्जाम देने लगा तो फिर मुफ़्ती साहब رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की, कि अब कोई वज़ीफ़ा अ़त़ा फ़रमा दें। आप ने फ़रमाया : अपने त़लबा पर मेहनत, करो, येही तुम्हारा वज़ीफ़ा है, जब बूढ़े हो जाओगे और कोई त़ाक़त न रहेगी तो ख़ूब वज़ीफ़े करना।

21 अपने ज़मानए त़ालिबे इल्मी को भी ऐसा बनाओ

जब मैं ददरी में ज़ेरे तालीम था तो एक मरतबा आप फ़रमाने लगे : बेटे ! अपने ज़मानए त़ालिबे इल्मी को भी ऐसा बनाओ कि कोई सवानेह़ निगार अगर सवानेह़ लिखे तो येह अय्याम (दिन) भी लिखने के क़ाबिल हों।

22 नमाज़ में ह़ुज़ूरे क़ल्बी

ह़ज़रत नमाज़ काफ़ी इत़मीनान से पढ़ते, बारहा ऐसा होता कि तमाम त़लबा नमाज़ से फ़ारिग़ हो कर कमरे में चले जाते जब कि आप अभी नमाज़ पढ़ रहे होते, जब फ़ारिग़ होते तो ख़ुद से ही लम्बी चटाई जो मुसल्ले के लिए बनाई जाती है ख़ुद ही उठाने लग जाते, किसी त़ालिबे इल्म की निगाह पड़ती तो वोह भागता हुवा जाता और ह़ज़रत से चटाई ले लेता।

23 नवाज़िशें

मुफ़्ती साहब जब ददरी से जाने लगते तो दिलजूई के लिए कुछ न कुछ पैसे ज़रूर दे जाते।

24 मेज़बान से इजाज़त लेते

किसी के घर खाना होता तो खाने के बाद अगर दाल बच जाती, तो साह़िबे ख़ाना से इजाज़त लेते फिर पीते, और येह मस्अला भी इरशाद फ़रमाते कि दाल चूंकि दस्तरख़्वान पर चावल के साथ खाने के लिए आती है इस लिए बग़ैर इजाज़त के इसे पीना दुरुस्त नहीं।

25 आला ह़ज़रत के इल्म के समुन्दर से एक क़त़रा मांग लो

जब मैं इब्तेदाई दर्जे में था तो एक मरतबा मुफ़्ती साहब फ़रमाने लगे : बेटे ! आला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के इल्म के समुन्दर से एक क़त़रा मांग लो।

26 आ़जिज़ी ओ इन्केसारी

एक मरतबा नागपुर जामेअ़तुल मदीना के चन्द त़लबा मुफ़्ती साहब رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवे और त़ालिब होने की ख़्वाहिश ज़ाहिर की। आप ने उन

से पूछा कि किस से मुरीद हैं ?? तलबा ने बताया कि वोह अत्तारी हैं। आप ने उन्हें भी तालिब करने से माज़ेरत कर ली और फ़रमाया : आप के पीरो मुर्शिद तो ماشاءالله पावर फुल हैं।

27 बच्चों पर शफ़्क़तें और ख़ुश कलामी

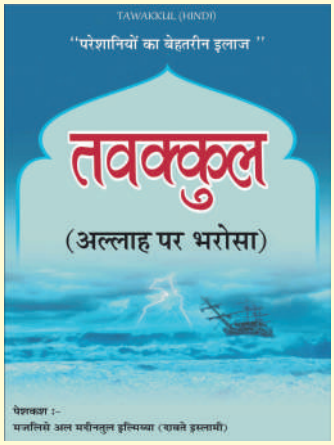
मुफ़्ती साहब رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه जिस तरह बूढ़ों, जवानों में अज़ीज़ थे उसी तरह आप से बच्चे भी बहुत महब्बत करते। बच्चों के साथ आप ख़ुश गवार माहोल बनाए रखते जिस की वज्ह से बच्चे भी बिला झिजक जो केहना होता केह लेते। मेरे भांजे अहमद बिन जावेद की उम्र तक़रीबन 5 पांच साल होगी, मुफ़्ती साहब رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के पास गए और केहने लगे : मैं बहुत ज़हीन हूं।

आप ने फ़रमाया : अच्छा ! आप बहुत ज़हीन हैं। भांजे केहने लगे : मैं क्यूं ज़हीन हूं पता है ? क्यूंकि मैं ने आप का जूठा खाया है। उस की बात पर हज़रत मुस्कुराने लगे।

छोटे बच्चे आप को पीरदादा या पीरनाना कहा करते थे।

हज़रत मुफ़्ती साहब رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से वाबस्ता येह चन्द वाक़ेआत व एहसासात थे जिन्हें मुख़्तलिफ़ नशिस्तों में लिखने की सआदत मिली। अरबाबे फ़िक्रो नज़र और साहिबाने इल्मो बसीरत के लिए इन सतरों में अख़ज़ व इस्तेफ़ादा और पन्दो मौइज़त (नसीहत) का बेहतरीन सामान मौजूद है।

अल्लाह तआला हज़रत का फ़ैज़ान आमो ताम फ़रमाए। आमीन





फ़क़ीहे एहले सुन्नत और दावते इस्लामी

मुहम्मद गुलरेज़ रज़ा मिस्बाही बरेल्वी

फ़क़ीहे एहले सुन्नत हज़रते मुफ़्ती अब्दुल हलीम अशरफ़ी रज़वी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه एक यादगारे अस्लाफ़ शख़्सिय्यत थे। आप ने पूरी ज़िन्दगी इस्लाम व सुन्नियत के लिए वक़्फ़ कर दी थी, दावतो तब्लीग़ की ख़ातिर दूर दराज़ के सफ़र किए, आप की ज़िन्दगी ख़िदमते दीने मतीन से लबरेज़ थी, आप की ज़िन्दगी के हर हर गोशे पर बात करना तो मौज़ूअ के हिसाब से एक मुश्किल अम्र है। अलबत्ता आप की ज़िन्दगी का दावते इस्लामी से तअल्लुक़ एक अटूट (न टूटने वाला) हिस्सा है। जिस के बग़ैर हिन्द में दावते इस्लामी की तारीख़ अधूरी मानी जाएगी। हम इस मुख़्तसर मज़मून में फ़क़ीहे एहले सुन्नत और दावते इस्लामी के मुतअल्लिक़ कुछ अहम बातें ज़िक्र कर रहे हैं :

तेहरीके दावते इस्लामी से वाबस्तगी

हिन्द में दावते इस्लामी के उ़रूज व इर्तेक़ा की तारीख़ मुबल्लिगे़ इस्लाम फ़क़ीहे एहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती अ़ब्दुल ह़लीम رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से होते हुवे आगे बढ़ती है। दावते इस्लामी की तरक़्क़ी और हिन्दुस्तान के गोशे गोशे में इस की इशाअ़त की ख़ातिर मुबल्लिगे़ इस्लाम मुफ़्ती अ़ब्दुल ह़लीम साह़ब ने जो क़ुरबानियां दीं हैं उन्हें फ़रामोश नहीं किया जा सकता। आप ने ख़ूने जिगर से इस की आबयारी की, तब जा कर आज हिन्दुस्तान में दावते इस्लामी की बहारें नज़र आती हैं इस की दास्तान त़वील और तकालीफ़ से भरपूर है।

हिन्द में दावते इस्लामी के आग़ाज़ के वक़्त मुख़ालिफ़ीन की त़रफ़ से जो हंगामी ह़ालात पेश हुवे उन्हें भला कौन भूल सकता है, एक बड़ी तादाद ने इस के साथ नारवा सुलूक किया। इसे किसी भी सूरत में पनाह देने पर आमादा न हुवे। और न इस की किसी त़रह़ की कोई मदद व ह़िमायत की। बल्कि उल्टा इस के ख़िलाफ़ ग़लत़ फ़ेहमियां फैलाई गईं।

ऐसे पुर आशोब ह़ालात में मुबल्लिगे़ इस्लाम मुफ़्ती अ़ब्दुल ह़लीम रज़वी अशरफ़ी साह़ब ने इसे सहारा दिया और एलान किया कि **"तेहरीके दावते इस्लामी एहले सुन्नत की पासबान, मस्लके आला ह़ज़रत की तर्जुमान और सवादे आज़म के अ़क़ाइदो नज़रियात की निगेहबान है। एहले सुन्नत के अ़वामो ख़वास को चाहिए कि वोह जानो माल से दावते इस्लामी की इमदाद और इआ़नत करें! इस के ख़िलाफ़ जो बातें हैं वोह ग़लत़ फ़ेहमी का नतीजा हैं। इन बातों की कोई ह़क़ीक़त नहीं। इन अक़्वाल की कोई परवाह न करें। बे तअम्मुल दावते इस्लामी को अपनाएं और इसे घर घर पहुंचाएं। कल क़ियामत में दावते इस्लामी की ह़िमायत और शुमूलियत से मुतअ़ल्लिक़ अगर पुरसिश हुई तो रब की बारगाह में अ़ब्दुल ह़लीम इस का जवाब देह और ज़िम्मेदार होगा।"**

आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के दावते इस्लामी की ह़िमायत के मुआ़मले में कई लोगों ने मुख़ालफ़त भी की, कई त़रह़ की आज़माइशों का सामना भी हुवा लेकिन आप ने फ़रोगे़ सुन्नियत की ख़ातिर दावते इस्लामी की इशाअ़त में क़त़अ़न क़दम पीछे न हटाया और बसद ख़ुलूस इस की ताईद और ह़िमायत की। आप ने सूबा दर सूबा सफ़र किया, उ़लमा से मुलाक़ातें कीं, उन्हें दावते इस्लामी की ज़रूरत व अहमियत बतला कर उन के माबैन शाएअ़ ग़लत़ फ़ेहमियों को दूर किया। जगह जगह उ़लमा से मीटिंग की और दावते इस्लामी से मुतअ़ल्लिक़ उन्हें मुस्बत (Positive) ज़ेहन दिया।

धीरे धीरे हिन्द के मुस्तनद मुफ़्तियाने किराम और मर्कज़ी इदारों ने भी फ़क़ीहे एहले सुन्नत मुफ़्ती अ़ब्दुल ह़लीम رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की ह़िमायत की और अपनी अपनी ह़िमायत का एलान जारी किया। फिर आप की करम नवाज़ियों का नतीजा येह हुवा कि तेहरीके दावते इस्लामी की ख़ुश्बूदार हवा हिन्दुस्तान के गोशे गोशे में फैल गई।

الحمدلله आज हिन्दुस्तान में दावते इस्लामी के 100 के क़रीब सिर्फ़ जामेअ़तुल मदीना (दारुल उ़लूम) क़ाइम हैं जिन में हज़ारों की तादाद में त़लबा इ़ल्म से मुस्तफ़ीज़ हो रहे हैं। क़ौमो मिल्लत की इस्लाह़ की ख़ातिर दीगर शोबाजात भी क़ाइम हैं। जिन के सबब एक बड़ी तादाद में नस्ले नौ के ईमानो अ़क़ाइद की ह़िफ़ाज़त हुई और अब भी इस्लाह़ जारी है। इस बाग़ो बहार की सब्ज़ा आवरी में मुबल्लिगे़ इस्लाम मुफ़्ती अ़ब्दुल ह़लीम साह़ब की बड़ी क़ुरबानियां शामिल हैं।

पूरी ज़िन्दगी क़ौमो मिल्लत की बेलोस ख़िदमत करने वाले इ़ल्मो फ़न के माहिर फ़क़ीहे एहले सुन्नत 12 रमज़ानुल मुबारक की शब इस दारे फ़ानी से कूच कर गए।

अल्लाह तआ़ला मुफ़्ती अ़ब्दुल ह़लीम साह़ब رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के दरजात बुलन्द फ़रमाए, करवट करवट चैनो सुकून अ़त़ा फ़रमाए और इन के फ़ुयूज़ो बरकात से हमें माला माल फ़रमाए।



मुफ़्ती अ़ब्दुल ह़लीम साह़ब रह़मतुल्लाहि अ़लैह के बारे में उ़लमा ओ मशाइख़ के तास्सुरात

येह दुन्या ए फ़ानी जब से बनी है इस में अरबो खरबों इन्सान आए और अपनी ज़िन्दगी गुज़ार कर चले गए। यक़ीनन मौत तो सब को आनी है लेकिन बाज़ ऐसे लोग भी होते हैं जिन की मौत पर अपने तो अपने पराए भी ग़मगीन हो जाते हैं। ख़लीफ़ए मुफ़्ती ए आज़मे हिन्द व कुत़्बे मदीना ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती अ़ब्दुल ह़लीम साह़ब رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की शख़्सिय्यत भी उन अ़ज़ीम हस्तियों में से एक है जिन के दुन्या से जाने का सदमा कसीर मुसलमानों को ग़मगीन कर गया।

मुफ़्ती साह़ब के विसाले बा कमाल पर मुफ़्तियाने किराम और दीगर शख़्सिय्यात के तास्सुरात मुलाह़ज़ा फ़रमाइए :

ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सुब्ह़ान रज़ा ख़ान साह़ब دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ

सज्जादा नशीन ख़ानक़ाहे रज़विया दरगाहे आला ह़ज़रत बरेली शरीफ़

जमाअ़ते एहले सुन्नत का एक बड़ा ख़सारा

मुफ़्ती अ़ब्दुल ह़लीम रज़वी के सानेह़ए इर्तेह़ाल की ख़बर से वाक़ेई दिली सदमा पहुंचा, जमाअ़ते एहले सुन्नत की सफ़े अव्वल के ह़ामिल उ़लमा ओ मशाइख़ का यके बाद दीगरे दुन्या से रुख़्सत होते जाना हमारे लिए निहायत ग़म व अफ़्सोस और तशवीश का बाइ़स है।

अभी हम लोग अपनी जमाअ़त के कई जलीलुल क़द्र उ़लमा ओ मशाइख़ के दुन्या से रुख़्सत हो जाने वाले जांकाह ह़ादसात से संभल भी न पाए थे कि अब येह दिल ख़राश ख़बर सुनने को मिल गई कि मुअर्रख़ा 11 रमज़ानुल मुबारक 1442 हिजरी को हमारी जमाअ़त के बुज़ुर्ग और सफ़े अव्वल में शुमार किए जाने वाले मारूफ़ आ़लिमो मुफ़्ती ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती अ़ब्दुल ह़लीम साह़ब अशरफ़ी रज़वी इस दारे फ़ानी को छोड़ कर अपने मालिके ह़क़ीक़ी से जा मिले اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّآ اِلَیْہِ رٰجِعُوْنَ Allah रब्बुल इ़ज़्ज़त मौसूफ़ की मग़फ़ेरत फ़रमाए।

ह़ज़रत मुफ़्ती साह़ब का सानेह़ए इर्तेह़ाल वाक़ेई जमाअ़ते एहले सुन्नत का एक बड़ा ख़सारा है। मुफ़्ती साह़ब मर्ह़ूम मेरे जद्दे करीम ताजदारे एहले सुन्नत सैयदी सरकार मुफ़्ती ए आज़मे हिन्द رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के ख़लीफ़ा, मेरे दादा जान सैयदी सरकार मुफ़स्सिरे आज़मे हिन्द ह़ज़रत अ़ल्लामा मुह़म्मद इब्राहीम रज़ा ख़ां जीलानी मियां और फ़क़ीर के वालिदे बुज़ुर्गवार रैह़ाने मिल्लत ह़ज़रते अ़ल्लामा रैह़ान रज़ा ख़ान रह़मानी मियां رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के ख़ुसूसी शागिर्दों में से एक थे। यादगारे आला ह़ज़रत जामेआ़ रज़विया मन्ज़रे इस्लाम बरेली शरीफ़ में कई बरस रेह कर निहायत इन्हेमाक से तालीम ह़ासिल की। फिर कुछ अ़र्सा यहां तदरीसी फ़राइज़ भी अन्जाम दिए।

फ़क़ीर से निहायत मह़ब्बत रखते। ज़ियारते ह़रमैने तैयिबैन के मौक़ेअ़ पर बारहा मुलाक़ातें हुईं। मौसूफ़ से मेरी आख़री मुलाक़ात ग़ालिबन ह़ज़रत शेरे बिहार رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के चेहलुम के मौक़ेअ़ पर मक़्सूदपुर ज़िल्अ़ मुज़फ़्फ़रपुर बिहार

में हुई थी। मौसूफ़ एक ह़लीमुत्त़ब्अ़ और सूफ़ी सिफ़त आ़लिमो मुफ़्ती थे। मस्लके आला ह़ज़रत के मुख़्लिस नाशिर व मुबल्लिग़ थे। इन के यूं दुन्या से चले जाने का फ़क़ीर क़ादरी को निहायत ग़म व अफ़्सोस है। अल्लाह तआ़ला इन के पसमांदगान व एहले ख़ाना और वाबस्तगान को सब्रे जमील अ़त़ा फ़रमाए। اٰمین بجاہِ سیّدِ المُرسلین صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद निज़ामुद्दीन रज़वी साह़ब دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ

मोह़क़्क़िक़े मसाइले जदीदा व सद्र मुफ़्ती दारुल इफ़्ता जामेआ़ अशरफ़िया मुबारक पुर ज़िल्अ़ आज़मगढ़, यू पी, हिन्द

अस्लाफ़ का नमूना और अशरफ़ियत व रज़वियत का ह़सीन संगम

मुह़िब्बे मोह़तरम, जनाब मौलाना यह़या रज़ा मिस्बाह़ी زِیْدَ مَجْدُکُم : اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ وَرَحْمَۃُ اللہِ وَبَرَکَاتُہٗ

अल्लाह आप को सब्रे जमील अ़त़ा फ़रमाए। ह़ज़रते मौलाना मुफ़्ती अ़ब्दुल ह़लीम अशरफ़ी रज़वी जमाअ़ते एहले सुन्नत के अकाबिर उ़लमा ए किराम से थे। अस्लाफ़ का नमूना और अशरफ़ियत व रज़वियत के ह़सीन संगम थे फ़िक़्ही व फ़ुरुई इख़्तेलाफ़ात से कोसों दूर और दावतो तब्लीग़ की दुन्या में मसरूफ़े अ़मल थे। मुतअ़द्दद औसाफ़ो कमालात और ख़ूबियों के जामेअ़ थे। मुत्तक़ी, परहेज़गार, कम गो और اُدْعُ اِلٰی سَبِیْلِ رَبِّکَ بِالْحِکْمَۃِ وَالْمَوْعِظَۃِ الْحَسَنَۃِ की अ़मली तफ़्सीर थे, पूरी ज़िन्दगी दर्सो तदरीस, फ़तावा नवेसी और रुश्दो हिदायत में गुज़ारी।

मुफ़्ती साह़ब رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ एक बेहतरीन उस्ताद और मुफ़्ती भी थे। जामेआ़ मन्ज़रे इस्लाम बरेली शरीफ़ और जामेआ़ अ़रबिया नागपुर में तदरीस व इफ़्ता की ख़िदमत अन्जाम दी, सेंकड़ों तलामिज़ा के साथ इन के फ़तावा का मजमूआ़ फ़तावा ह़लीमिया इन की दर्सी व फ़तवा नवेसी की ज़िन्दगी की अहम यादगार हैं।

मुफ़्ती साह़ब رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ एक कामयाब दाई ओ मुबल्लिग़ थे। एक दाई को जिन औसाफ़ का ह़ामिल होना चाहिए इस की बेहतरीन मिसाल थे, पूरी ज़िन्दगी तेह़रीके दावते इस्लामी के प्लेटफ़ॉर्म से तब्लीग़ी ख़िदमात अन्जाम देते रहे। आप मुल्के हिन्दुस्तान में इस दावती तेह़रीक के सरपरस्त थे। हिन्दुस्तान में येह तेह़रीक आप की मसाइए जमीला से ख़ूब ख़ूब परवान चढ़ी। तेह़रीके दावते इस्लामी के फ़रोग़ व इशाअ़त में इन की ख़िदमात को फ़रामोश नहीं किया जा सकता। इस सिलसिले में कई एक यादें इस बे माया से भी वाबस्ता हैं। एक बार ह़ज़रत मुफ़्ती साह़ब मुबारकपुर तशरीफ़ लाए तो इन्हों ने मुझ से मदनी चैनल के क़ियाम के बारे में ज़िक्र किया, आप ने फ़रमाया कि चैनल के क़ियाम की शरअ़न जाइज़ सूरत क्या हो सकती है ? मैं ने अ़र्ज़ किया कि इन बातों का लेहाज़ हो तो जाइज़ वरना नाजाइज़, फ़रमाने लगे कि इस बारे में इस्तिफ़्ता आप के पास जाएगा, तेह़रीरी जवाब दे दें तो बेहतर होगा, मैं ने अ़र्ज़ किया कि फ़िलह़ाल इस की ह़ाजत नहीं अगर कभी ज़रूरत पेश आई तो انشاء اللہ تعالٰی तेह़रीरी फ़तवा भी जारी कर देंगे। उस मुलाक़ात के चन्द सालों बाद इन का फ़ोन आया कि आप ने मदनी चैनल के क़ियाम के सिलसिले में जो ह़ुक्म बयान किया था उसे तेह़रीर फ़रमा दें। आज इस की सख़्त ज़रूरत है। हर त़रफ़ मदनी चैनल के ख़िलाफ़ फ़ज़ा गर्म है आप के फ़तवे की ज़रूरत है। मुझे उम्मीद है कि आप जवाब से मुत़मइन फ़रमा देंगे। मैं ने इन के इस्तिफ़्सार पर फ़िक़्हे इस्लामी व फ़तावा रज़विया शरीफ़ के जुज़इयात व तस्रीह़ात की रौशनी में तीन सफ़ह़ात पर मुश्तमिल एक फ़तवा क़लमबन्द किया और चन्द शराइत़ के साथ मदनी चैनल के जवाज़ का ह़ुक्म सादिर किया, उसे पढ़ कर मुफ़्ती साह़ब बहुत मसरूर हुवे फिर मुफ़्ती साह़ब رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने हिन्दुस्तान भर में इस फ़तवे की इशाअ़त की। इस त़रह़ इन की कोशिशों से फ़ज़ा पुर सुकून हो गई। येह एक वाक़ेआ़ है जिसे ज़िम्नन बयान कर दिया वरना फ़िक़्ही उमूर में मुशावरत और बाहमी तबादलए ख़याल की बहुत कुछ यादें हैं, त़बीअ़त की नासाज़ी वग़ैरा की वज्ह से इन ही सुत़ूर पर इक्तेफ़ा करता हूं। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इन की ख़िदमात को क़बूल फ़रमाए और दारैन में इस का बेहतर सिला अ़त़ा करे।

मौलाना यह़या रज़ा मिस्बाह़ी زِیْدَ مَجْدُہٗ आप के वालिदे माजिद के विसाल से इन के एहले ख़ाना ओ क़राबत दार ही ग़मगीन नहीं बल्कि एक जहां ग़मगीन व सोगवार है, येह बे माया भी इन की रेह़लत के ग़म में आप ह़ज़रात के

साथ बराबर का शरीक है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुफ़्ती साहब رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को जन्नतुल फ़िरदौस में आला मक़ाम अ़ता फ़रमाए और आप को और इन के जुम्ला पसमांदगान को सब्रो शिकीब की इस घड़ी में ह़दीसे नबवी पर कारबन्द रेह कर साबिरो शाकिर रेहने की तौफ़ीक़ बख़्शे। اٰمین بجاہ النبی الرؤف الرحیم وعلیٰ اٰلہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم

मुह़म्मद अह़मद मिस्बाह़ी

नाज़िमे तालीमात अल जामेअ़तुल अशरफ़िया, मुबारकपुर, ज़िल्अ़ आज़मगढ़, यू पी

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم

حامداً ومصلّیاً ومسلّماً

ह़ज़रत मुफ़्ती अ़ब्दुल ह़लीम अर्ज़वी अशरफ़ी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने ख़िदमात, कारनामों और मासाइ ए जमीला से लबरेज़ ज़िन्दगी, तदरीस, तक़रीर, मुनाज़िरा, इफ़्ता, दावतो तब्लीग़, बैअ़तो इरशाद, तामीरे मदारिसो मसाजिद हर जेहत से इन्हों ने तक़रीबन 65 साल तक दीने मतीन की नुमायां ख़िदमात अन्जाम दीं, इन सब को ज़ब्ते तेह़रीर में लाना, अ़वामो ख़वास को इन से रूशनास कराना इन के अख़्लाफ़ व मोतक़िदीन की ज़िम्मेदारी है।

चन्द सत़रों में इन का कोई बा ज़ाबेत़ा तआ़रुफ़ मुमकिन नहीं, मुझे बड़ी ख़ुशी है कि मौलाना यह़या रज़ा سَلَّمَه और इन के अह़बाब, ह़ज़रते ममदूह़ के ह़ालात व सवानेह़ क़द्रे तफ़्सील से जम्अ़ करने में मुन्हमिक हैं और **"माहनामा फ़ैज़ाने मदीना"** के ख़ुसूसी शुमारे या एक मुस्तक़िल किताब की शक्ल में एक मजमूआ़ मन्ज़रे आ़म पर लाना चाहते हैं। मौला तआ़ला इन्हें कामयाबी बख़्शे और ह़ज़रत के अह़वालो अफ़्कार से पूरी उम्मत को मुस्तफ़ीद होने का मौक़अ़ फ़राहम करे। وھوالموفق والمعین

अ़ज़ीज़े मिल्लत ह़ज़रत मौलाना अ़ब्दुल ह़फ़ीज़ अ़ज़ीज़ी साह़ब دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

सरबराहे आला जामेआ़ अशरफ़िया, मुबारकपुर

जय्यद आ़लिमे दीन व मुफ़्ती और बेहतरीन दाई व मुबल्लिग़

एहले सुन्नत व जमाअ़त के सफ़े अव्वल के आ़लिमे दीन ह़ज़रते मौलाना मुफ़्ती अ़ब्दुल ह़लीम रज़वी अशरफ़ी के वासिले इलल्लाह होने की ख़बर से हुज़्नो मलाल की कैफ़ियत त़ारी हो गई, اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّآ اِلَيْهِ رَاجِعُوْن

मुफ़्ती साह़ब رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه बहुत सारी ख़ूबियों और गूनागूं औसाफ़ो कमालात के जामेअ़ थे। जय्यद आ़लिम व मुफ़्ती होने के साथ बेहतरीन दाई व मुबल्लिग़, तेह़रीके दावते इस्लामी हिन्द के सरपरस्त व मुरब्बी थे। तक़्वा ओ त़हारत में अपनी मिसाल आप थे। इन का सानेह़ए इर्तेह़ाल **मौतुल आ़लिमे मौतुल आ़लम** के मिस्दाक़ है। जामेआ़ अशरफ़िया की ख़िदमात के बड़े मद्दाह़ व मोतरिफ़ थे। आप की मुबारकपुर तशरीफ़ आवरी होती तो जामेआ़ तशरीफ़ लाते और दुआ़ओं से नवाज़ते और इस के कारनामों की ख़ूब सताइश करते।

मुफ़्ती ए आज़म बिहार ह़ज़रते मुफ़्ती मुह़म्मद सनाउल्लाह ख़ान सनाउल क़ादरी साह़ब دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

गद्दी नशीन, ख़ानक़ाहे क़ादरिया सनाइया मेमरिया, मेहसूल चौक सीतामढ़ी बिहार

फ़रोगे़ रज़वियात आप की तरजीह़ात

मुझ फ़क़ीर क़ादरी को ह़ज़रत मुफ़्ती मौसूफ़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से कभी मुलाक़ात का शरफ़ तो नहीं हुवा लेकिन इन के वसीअ़ तर दीनी, दावती व तब्लीग़ी कामों के बारे में अपने मआ़सिर (ज़माने के) उ़लमा से हमेशा सुनता रहा कि मौसूफ़ मतानत व सन्जीदगी और बड़ी ख़ामोशी के साथ इस्लाम व सुन्नियत को पूरी दुन्या में फैलाने का काम कर रहे हैं, फ़ुरुई इख़्तेलाफ़ में अपने अइम्मा और अपने अकाबिर की रविश को इख़्तियार फ़रमाते हैं, फ़रोगे़ रज़वियात आप की तरजीह़ात में शामिल थीं, आप उन कामयाब शख़्सियतों में से एक हैं जिन्हों ने वत़न से दूर रेहते हुवे भी वत़ने अ़ज़ीज़ सीतामढ़ी का ज़ैली गाऊं, ददरी में इल्मो आगही का वोह क़ल्आ़ क़ाइम कर दिया जिसे दुन्या सुब्हे क़ियामत तक याद रखेगी।

हज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती ग़ुलाम रसूल बल्यावी साहब دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

सद्रे इदारा शरइ़य्या पटना बिहार

अ़हद साज़ शख़्सिय्यत का ख़ातिमा

इस साल अपने बुज़ुर्गों की रेह़लत पर ताज़ियती कलेमात केहते केहते अपने को बोझल मेह़सूस करने लगा हूं समझ नहीं आता है इन बुज़ुर्गों के सानेह़ए इर्तेह़ाल को कैसे बरदाश्त करूं। आप की शख़्सिय्यत अ़हद साज़ के मानिन्द थी। आप ने अपनी जूलान फ़िक्र और शाने तेह़रीक की अलग कसोटी अपनाई थी। आप की बारगाह में बयक वक़्त रूह़ानियत, तसव्वुफ़, फ़िक्रियात व सियासियात और बसीरत के दरवा होते हुवे नज़र आते थे। इन्हों ने दावते तेह़रीक व तब्लीग़ को अपना ख़ास मैदान बनाया जहां हर त़ालिब मश्अ़ले राह ढूंढ लिया करता था। आज इन की रेह़लत से एक साथ अ़हदे ज़र्रीं, अ़हदे आफ़रीं, अ़हदे बसीरत, अ़हदे फ़िक्रो तदब्बुर, अ़हदे उस्लूब साज़, अ़हदे शख़्सिय्यत साज़ का ख़ातिमा हो गया।

मुफ़्ती अशरफ़ रज़ा क़ादरी नूरी साह़ब دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

मुफ़्ती ओ क़ाज़ी इदारा शरइ़य्या महाराष्ट्र मुम्बई

ह़िक्मतो दानाई, सब्रो तह़म्मुल का मम्बअ़

आप जामेआ़ रज़विय्या मन्ज़रे इस्लाम बरेली शरीफ़ के क़दीम फ़ारिग़ीन से थे। सरकार मुफ़्ती ए आज़मे हिन्द व अकाबिर उ़लमा ए बरेली से तदरीसो इफ़्ता की तरबियत पाई। और फिर ता ह़यात ह़िक्मतो दानाई और सब्रो तह़म्मुल के साथ मस्लके आला ह़ज़रत की तब्लीग़ो इशाअ़त फ़रमाते रहे। जमाअ़त में उलझे उमूर और नागुफ़्ता बेह ह़ालात को सुल्झाने और इख़्तेलाफ़ात को ख़त्म कराने व फ़ज़ा को हमवार करने में आप को दरको कमाल ह़ासिल था। आप ने बद मज़हबों से कई मुनाज़िरे तेह़रीरी व तक़रीरी फ़रमाए ब फ़ज़्लेही तआ़ला एहले सुन्नत को फ़त्हे मुबीन ह़ासिल हुई।

क़ाज़ी ए नेपाल मुफ़्ती मुह़म्मद उ़स्मान रज़वी साह़ब دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

मर्कज़ी दारुल इफ़्ता वल कज़ा इदारा शरइ़य्या नेपाल जनकपुर

ख़ुदा की रेह़मतें हों ऐ अमीरे कारवां तुझ पर

यादगारे अस्लाफ़, उ़म्दतुल ख़लफ़ ह़ज़रते अ़ल्लामा अलह़ाज अश्शाह अल मुफ़्ती अ़ब्दुल ह़लीम साह़ब क़िब्ला رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه बानी ए जामेआ़ फ़ैज़ुर्रज़ा ददरी के सानेह़ए इर्तेह़ाल पर दिल को बड़ा सदमा पहुंचा। اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّآ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ हुज़ूर मुफ़्ती साह़ब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه गूनागूं सिफ़ात के मालिक थे जब भी फ़क़ीर रज़वी से मुलाक़ात होती ख़न्दा पेशानी से मिलते ख़ुर्दा नवाज़ी इन की शान थी। मौला ए करीम इन की क़ब्रे अनवर को रेह़मतो नूर से भर दे और पसमांदगां को सब्रे जमील और इस पर अज्रे जज़ील अ़त़ा फ़रमाए। आमीन

ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती अ़ब्दुल क़दीर साह़ब دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

क़ाज़ी मुफ़्ती जामेआ़ अ़रबिया इस्लामिया, नागपुर

एक बहुत बड़ा ख़सारा व इल्मी नुक़्सान

इस में कोई मुबालग़ा नहीं कि ह़ज़रत मुफ़्ती साह़ब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه एहले सुन्नत वल जमाअ़त में इम्तियाज़ी शान के ह़ामिल थे। मुफ़्ती साह़ब का हमारे दरमियान से अचानक चले जाना एक बहुत बड़ा ख़सारा व इल्मी नुक़्सान है इन के साथ इल्म का एक बड़ा ह़िस्सा इस दुन्या से चला गया। मुफ़्ती साह़ब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के लिए बेहतरीन ख़िराजे अ़क़ीदत येह है कि हम भी इन ही की त़रह़ अपने क़ीमती अवक़ात की ह़िफ़ाज़त करें और कसरते मुत़ालआ़ के ज़रीए अपने इल्म में गेहराई व गीराई पैदा करें।

हज़रते मौलाना मुहम्मद रज़ा क़ादरी ﴿ बारगाहे आलिया पोखरेरा शरीफ़ सीतामढ़ी ﴾

ख़ुदा तरस बुज़ुर्ग

हज़रत मुफ़्ती ए आज़म नागपुर अ़ज़ीमुल मर्तबत ख़ुदा तरस बुज़ुर्ग थे मस्लके आला हज़रत के सच्चे ख़ादिम और सिपेह सालार की हैसिय्यत रखते थे। हज़रत की ख़िदमात का दाइरा मीलों और सरहदों से भी बहुत आगे है।

दोस्तो ! ख़िराजे अ़क़ीदत के लिए बेहतर से बेहतर येह है कि हुज़ूर मुफ़्ती ए आज़म नागपुर के इरशादात पर अ़मल करें और इन के लगाए हुवे चमने शरइय्या की हिफ़ाज़त करें।

मुहम्मद क़ासिम उ़मर मिस्बाही पोखरेरवी साहब ﴿ मुक़ीम साऊथ अफ़्रीक़ा ﴾

जाने वाले नहीं आने वाले

मौत एक ऐसी हक़ीक़त है जिस से किसी को इन्कार नहीं। हां, इतना ज़रूर है कि हर एक की मुद्दत यक्सां नहीं होती, जाने वाले दुन्या से जाते हैं मगर अपने पीछे कुछ न कुछ अपनी यादें अपने आमालो किरदार की रौशनी में छोड़ जाते हैं बर गुज़ीदा पाक बाज़, पाक तीनत, साहिबे इल्मो फ़िरासत, आ़लिमे बा अ़मल, मुबल्लिगे़ इस्लाम, फ़क़ीहे वक़्त, ख़तीबे बा कमाल, शफ़ीक़े ला जवाब, करीमे बे मिसाल, शीरीं ज़बान व शीरीं मक़ाल शख़्सिय्यात में से एक अ़ज़ीमुश्शान शख़्सिय्यत मुफ़्ती अ़ब्दुल हलीम अशरफ़ी रज़वी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की ज़ाते मुक़द्दस थी इन का इस त़रह़ अचानक से इस दारे फ़ानी से कूच कर जाना यक़ीनन एहले सुन्नत का एक अ़ज़ीम ख़सारा है।

मुहम्मद आ़मिर हुसैन हलीमी मिस्बाही साहब ﴿ रसूल गंज उ़र्फ़ कोइली ﴾

मुद्दतों रोया करेंगे जामो पैमाने तुझे !

आह ! वोह पीरो मुर्शिद जिन के हुस्ने अख़्लाक़, हुस्ने अ़मल और ज़ोहदो तक़्वा का एक जहां मोतरिफ़ है वोह भी अल्लाह को प्यारे हो गए। आप की मजलिस में बैठने वाला चाहे जितनी देर रहे बिल्कुल उक्ताहट का शिकार नहीं होता था। इल्मी गुफ़्तगू और पन्दो नसाएह़ का ख़ूब सूरत अन्दाज़ दिल मोह लेने वाला होता था, ख़ूब सूरत और पुरनूर चेहरे पर तबस्सुम होता और कलाम फ़रमाते तो सामेईन और ह़ाज़िरीन खो जाते और एक वज्द की कैफ़िय्यत मेह़फ़िल पर त़ारी हो जाती। आज आप की वफ़ात के बाद एक अ़ज़ीम इल्मी ख़ला (गेप) पैदा हो गया, शम्ए़ इल्म बुझ गया, अमीरे कारवां चला गया।

मौलाना मुहम्मद अरशद रज़वी साहब

﴿ मोहतमिमे जामेआ़ क़ादरिया मक़्सूदपुर औराई, मुज़फ़्फ़रपुर, बिहार ﴾

बानी फ़ैज़ुर्रज़ा का सानेह़ए इर्तेह़ाल

यादगारे सलफ़, फ़क़ीहे इस्लाम ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती अलह़ाज अ़ब्दुल ह़लीम रज़वी अशरफ़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने पूरी ज़िन्दगी ख़ुलूसो लिल्लाहियत के साथ ख़िदमते दीन अन्जाम दी ऐसी शख़्सियत का इन्तेक़ाले पुर मलाल पूरी मिल्लत के लिए एक अ़ज़ीम ख़सारा है जिस की तलाफ़ी मुश्किल है, इन के सदमए रेह़लत पर पूरी मिल्लत सोगवार है।

मौलाना फ़ैज़ान अह़मद रज़वी पोखरेरवी व असातेज़ा व अरकाने मद्रसा

﴿ जामेउ़ल उ़लूम शरीफ़ जलालपुर, सीवान ﴾

दुन्या ए इस्लाम व सुन्नियत का अ़ज़ीम नुक़्सान

दुन्या ए इस्लाम व सुन्नियत की अ़ज़ीम शख़्सिय्यत, पीरे त़रीक़त, फ़क़ीहे मिल्लत ह़ज़रते मुफ़्ती अ़ब्दुल ह़लीम क़िब्ला अशरफ़ी रज़वी नागपुरी अमीरे (सरपरस्ते) दावते इस्लामी हिन्द की रेह़लत दुन्या ए इस्लाम व सुन्नियत का अ़ज़ीम नुक़्सान है, मुल्के हिन्द ही नहीं बैरूने ममालिक के लिए भी आप की ज़ाते करीमा बड़ी मुग़्तनम थी। आप एक आ़लिमे रब्बानी और अ़ज़ीम फ़क़ीह थे, आप की शख़्सिय्यत गूनागूं सिफ़ात का मजमूआ़ थी, दावते इस्लामी (हिन्द) के अमीर (सरपरस्त) रेह कर मस्लके आला हज़रत की ख़ूब तरवीज़ो इशाअ़त की, ह़ज़रत मुफ़्ती साहब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का एक अ़ज़ीम कारनामा जामेआ़ ज़ियाइया फ़ैज़ुर्रज़ा ददरी सीतामढ़ी का क़ियाम भी है।

मौलाना अ़ब्दुल मुक़्तदिर ख़ान जालवी साहब

बानी ओ मोहतमिम दारुल उ़लूम ज़िया ए मुस्त़फ़ा, अशरफ़ नगर जाले दरभंगा, बिहार

दागे़ मुफ़ारक़त

वोह जो शेहरिस्ताने शरीअ़त का शाहकार और अकलीम रूह़ानियत का ताजदार था जिस ने जज़्बातो एह़सासात पर पेहरे बिठा रखे थे और बात़िल की दिल फ़रैबियों का पर्दा भी चाक कर दिया था वोह यानी मुफ़्ती अ़ब्दुल ह़लीम अशरफ़ी रज़वी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इन के दरजात बुलन्द फ़रमाए, आप बेहतरीन मुबल्लिग़ व दाई और तेह़रीके दावते इस्लामी हिन्द के सरपरस्ते आला थे, आ़बिदे शब ज़िन्दादार और मामूलात के पाबन्द थे, क़ुरआनो ह़दीस के मुत़ाबिक़ ख़ित़ाब फ़रमाते और अ़क़ीदा ओ अ़मल दोनों की दावत देते थे, बहुत ज़हीन व ह़ाज़िर जवाब थे।

मौलाना मुह़म्मद शफ़ीकुर्रह़मान अ़ज़ीज़ी मिस्बाह़ी साहब

दारुल उ़लूम, जम्दाशाही, ज़िल्अ़ बस्ती यूपी

ऐसा कहां से लाऊं कि तुझ सा कहूं जिसे

ह़ज़रते अ़ल्लामा ओ मौलाना मुफ़्ती अ़ब्दुल ह़लीम साह़ब क़िब्ला मिस्बाह़ी अशरफ़ी की ज़िन्दगी का हर लम्ह़ा इ़श्क़े मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में गुज़रा, आप बेशुमार ख़ूबियों के मालिक थे, आप का इन्तेक़ाल जमाअ़ते एहले सुन्नत का एक अ़ज़ीम ख़सारा है, आप एक अच्छे आ़लिमे दीन के साथ मिल्लत के अ़ज़ीम फ़क़ीह भी थे, आप की ज़िन्दगी मस्लके आला ह़ज़रत की तरवीजो इशाअ़त ही में सर्फ़ हुई, आप ने हमेशा अपनी तह़रीरों और तक़रीरों के ज़रीए दुश्मनाने मस्लके आला ह़ज़रत को दन्दां शिकन जवाब दिया।

मौलाना क़ारी मुह़म्मद अमानत रसूल क़ादरी बरकाती रज़वी पीलीभीती

चरागे़ सुन्नियत

बरादरे त़रीक़त, नाशिरे सुन्नियत ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती अ़ब्दुल ह़लीम साह़ब क़ादरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का सानेह़ए इर्तेह़ाल क़ौमो मिल्लत का ना क़ाबिले तलाफ़ी नुक़्सान है, बिलाशुबा हुज़ूर मुफ़्ती ए आ़ज़मे हिन्द का ही येह फ़ैज़ान है कि मुफ़्ती अ़ब्दुल ह़लीम साह़ब क़ादरी रज़वी अशरफ़ी ज़माने में चरागे़ सुन्नियत बन कर रौशन हुवे।

मौलाना मुज्तबा शरीफ़ ख़ान अशहरी मिस्बाह़ी साहब

मोहतमिमे अल जामेअ़तुर्रज़विया दारुल उ़लूम अमजदिया नागपुर

इल्मो आगही, सब्रो क़नाअ़त वाले

इल्मो आगही, ज़ोहदो तक़्वा, सब्रो क़नाअ़त, तवक्कुल अ़लल्लाह, इस्तेक़ामत अ़लद्दीन जैसी पाकीज़ा सिफ़ात की ह़ामिल मज़लूम इल्मी शख़्सिय्यत, मुनाज़िरे एहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अश्शाह मुफ़्ती अ़ब्दुल ह़लीम साह़ब क़िब्ला رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه गुज़श्ता रात रमज़ान शरीफ़ की बारहवीं शब में 9 बज कर 40 मिनट पर لِكُلِّ اَجَلٍ مُّسَمًّى के तह़त दुन्या ए फ़ानी से रेह़लत कर गए, اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّآ اِلَيْهِ رَاجِعُوْن अल्लाह तआ़ला इन की ख़िदमाते दीनिया को शरफ़ो क़बूल अ़त़ा फ़रमा कर अपने जवारे रेह़मत में जगह अ़त़ा फ़रमाए।

मौलाना मुह़म्मद कलीम क़ादरी तैग़ी साहब

बानी ओ सरबराहे आला जामेआ़ क़ादरिया कलीमुल उ़लूम वसई, महाराष्ट्र

मौलाना मुफ़्ती सिराज अह़मद क़ादरी मिस्बाह़ी साहब सदरुल मुदर्रिसीन व सदरुल इफ़्ता जामेआ़ ह़ाज़ा

फ़िक़्ही फ़ेहमो फ़िरासत वाले

आप की दीनी, मिल्ली, ह़दीसी, फ़िक़्ही, तदरीसी, समाजी और इस्लाह़ी ख़िदमात बड़े पैमाने पर फैली हुई हैं, जहां आप ने क़ौम की तरबिय्यत व इस्लाह़ की है वहीं सेंकड़ों मुसलमानों को अपनी फ़िक़्ही फ़ेहमो फ़िरासत के ज़रीए ह़लाल को अपनाने और ह़राम से बचने का हुक्म फ़रमाते रहे मुफ़्ती मौसूफ़ दीनो मिल्लत के बारे में काफ़ी फ़िक्र मन्द रेहते थे।

मौलाना मुहम्मद सईदुर्रहमान रज़वी साहब ﴿ जामेआ गुलशने फ़ातिमा, विशाखापटनम, आंध्र प्रदेश ﴾

एहले सुन्नत व जमाअ़त के सफ़े अव्वल के आ़लिमे दीन, अ़ज़ीम दानिश्वर, मुफ़क्किर, मुदब्बिर ह़ज़रते मुफ़्ती अ़ब्दुल ह़लीम रज़वी अशरफ़ी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه बहुत सारी ख़ूबियों और गूनागूं औसाफ़ो कमालात के जामेअ़ थे, बेहतरीन दाई ओ मुबल्लिग़ और तेह़रीके दावते इस्लामी हिन्द के सरपरस्त व मुरब्बी थे, तक़वा ओ त़हारत में अपनी मिसाल आप थे।

ह़ज़रते मौलाना सैयद मह़मूद अशरफ़ जीलानी साहब دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

﴿ सज्जादा नशीन, किछौछा शरीफ़ ﴾

एहले सुन्नत व जमाअ़त में एक अ़ज़ीम ख़ला (गेप)

यक़ीनन अ़ल्लामा मौसूफ़ के विसाल से एहले सुन्नत व जमाअ़त में एक अ़ज़ीम ख़ला पैदा हो गया है लेकिन मरज़ी ए मौला अज़ हमह औला। येह फ़क़ीर और तमाम असातेज़ा ए जामेआ़ अशरफ़ दुआ़ गो हैं कि मौला तआ़ला अ़ल्लामा मौसूफ़ की इ़ल्मी ख़िदमात को क़बूल फ़रमा कर इन की मग़फ़ेरत फ़रमाए और जन्नतुल फ़िरदौस में आला मक़ाम अ़त़ा फ़रमाए।

मौलाना अ़त़ाउन्नबी हुसैनी मिस्बाही अबुल उ़लाई साहब

﴿ मुदर्रिस जामेअ़तुल मदीना फ़ैज़ाने रज़ा, बरेली शरीफ़ ﴾

अपनी ज़ात में अन्जुमन

ह़ज़रत मुफ़्ती अ़ब्दुल ह़लीम तालीमी निस्बत के एतेबार से मन्ज़री थे, बैअ़तो ख़िलाफ़त के लेह़ाज़ से अशरफ़ी भी थे, रज़वी नूरी भी थे, ज़ियाई भी थे, ह़बीबी भी थे और एह़सानी भी थे। ख़िदमात के पेशे नज़र फ़क़ीहे एहले सुन्नत थे, मुनाज़िरे एहले सुन्नत भी थे, नाशिरे मस्लके आला ह़ज़रत भी थे, ख़त़ीबे एहले सुन्नत भी थे, मस्लहे क़ौमो मिल्लत भी थे, सरमायए एहले सुन्नत भी थे, फ़ख़्रे एहले सुन्नत भी थे, आ़लिमे शरीअ़त भी थे और शैख़े त़रीक़त भी थे, त़बीअ़त, ख़स्लत, आ़दत और ज़ोहदो तक़्वा के एतेबार से यादगारे अस्लाफ़ थे, पैकरे ज़ोहदो तक़्वा भी थे, शरीफ़ुन्नफ़्स, ख़लीक़ भी थे, ह़लीमुत्तब्अ़ भी थे, सलीमुत्तब्अ़ भी थे, सूफ़ी मन्श भी थे, दरवेश सिफ़त भी थे, मुन्कसिरुल मिज़ाज भी थे और रक़ीकुल क़ल्ब भी थे और ख़ुदा मालूम क्या क्या थे। हम तो बस यहां उन बातों का ही ज़िक्र कर रहे हैं जो कुछ आप के बारे में आप की वफ़ात के मौक़ेअ़ पर ख़ानक़ाह के सज्जादा नशीं, दारुल इफ़्ता के मुफ़्ती, मदारिसे एहले सुन्नत के उ़लमा और दीगर एहले इ़ल्मो दानिश के दिलों से अपने दर्दो अलम का इज़हार करते हुवे निकलीं।

ह़ज़रत मौलाना सैयद मुईनुद्दीन अशरफ़ अशरफ़ी जीलानी

﴿ सज्जादा नशीन आस्तानए आ़लिया किछौछा शरीफ़, यू पी ﴾

दर्सो तदरीस के ताजदार

ख़लीफ़ए मुफ़्ती ए आज़मे हिन्द, मोहसिन व सरपरस्ते दावते इस्लामी, आबरू ए इ़ल्मो उ़लमा, पासबाने मस्लके आला ह़ज़रत, आ़लिमे रब्बानी, मुफ़्ती ए दौरां, नज्मुल फ़ुक़हा, मिस्बाहुल अतक़िया, दुन्या ए सुन्नियत की अ़बक़री शख़्सियत, आ़मिले शरीअ़त, ह़ामिले त़रीक़त, पैकरे अख़्लाक़ो इख़्लास ह़ज़रते अ़ल्लामा ओ मौलाना मुफ़्ती अ़ब्दुल ह़लीम साह़ब की रेह़लत की ख़बर से सदमए अ़ज़ीम हुवा। आप दर्सो तदरीस के ताजदार, आ़लिमे बा अ़मल और अस्लाफ़ के यादगार थे, निस्फ़ सदी से ज़ाइद पर मुह़ीत़ आप की दर्सी, तब्लीग़ी, तक़रीरी, तेह़रीरी ख़िदमात से हज़ारों बन्दगाने ख़ुदा फ़ैज़याब हुवे। आप शरीअ़त के कोहे मोह़कम और नख़्लिस्ताने मारेफ़त के शजरे तनावर थे। आप का शेवा अह़क़ाक़े ह़क़्क़ो इब्त़ाले बात़िल था, आप के आमाले ह़सना और ख़साइले ह़मीदा के नुक़ूश को फ़रामोश नहीं किया जा सकता, आप अपनी दीनी ख़िदमात और इ़ल्मी कारनामों की वज्ह से बादे वफ़ात भी ज़िन्दा हैं और اِنْ شَآءَاللهعَزَّوَجَلَّ ज़िन्दा रहेंगे।



नए लिखारी (जुनियर कॉलम निगार)

नए लिखने वालों के इन्आ़म याफ़्ता मज़ामीन

(New Writers)

क़ुरबानी के पांच दुन्यावी फ़वाइद

(गुलरेज़ रज़ा मिस्बाही जामेअ़तुल मदीना नागपुर, हिन्द)

इस्लामी साल का आग़ाज़ मुहर्रमुल हराम से होता है, जिस की 10वीं तारीख़ इमामुल अम्बिया हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लख़्ते जिगर, इमाम हुसैन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه की क़ुरबानी है। जबकि इस्लामी साल का इख़्तेताम ज़ुल हिज्जा पर होता है जिस की 10 वीं तारीख़ को हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام के लख़्ते जिगर हज़रते इस्माईल عَلَيْهِ السَّلَام ने ख़ुद को क़ुरबानी के लिए पेश किया था। पता चला कि इस्लाम इब्तेदा से इन्तेहा तक क़ुरबानियों का नाम है। पूरी दुन्या में हर साल 10 ज़ुल हिज्जा को इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام की सुन्नत ताज़ा की जाती है।

क़ुरबानी के जहां कसीर दीनी फ़वाइद हैं, वहीं इस के दुन्यावी फ़वाइद भी हैं। यहां उन में से पांच का तज़केरा किया जा रहा है :

1 क़ुरबानी के ज़रीए फ़ज़ाई आलूदगी और पोल्यूशन में कमी वाक़ेअ़ होती है, अगर क़ुरबानी में जानवर ज़ब्ह न हों और तमाम जानवर मौजूद हों तो लीद और गोबर में इज़ाफ़ा होगा, जिस से फ़ज़ाई माहौल मुतास्सिर होगा और सांस लेने में दिक़्क़त भी आएगी। बूढ़े व कमज़ोर जानवर सड़ गल कर माहौल को तअ़फ़्फ़ुन ज़दा और बदबूदार बना देंगे 2 क़ुरबानी रिश्तेदार, दोस्त अह़बाब से मुलाक़ात, मेहमान नवाज़ी और सिलए रेह़मी का सबब बनती है जिस से आपस में महब्बतें बढ़ती और नफ़रतें ख़त्म होती हैं 3 इन्सान की जिस्मानी नश्वो नुमा के लिए गोश्त एक ज़रूरी अ़नसर है, बहुत से लोग ग़रीबी की वज्ह से गोश्त सेर हो कर नहीं खा पाते, क़ुरबानी के अय्याम (दिनों) में उन की येह ज़रूरत पूरी हो जाती है 4 जानवरों को ज़ब्ह करने के बाद उन की खालों को आ़लमी मन्डी में फ़रोख़्त किया जाता है, जो कि माली तिजारत में इज़ाफ़े का बाइ़स होता है और चमड़े से इन्सानी ज़रूरियात की बे शुमार अश्या तैयार की जाती हैं। जिन से मुस्लिम व ग़ैर मुस्लिम सब ही फ़ाइदा उठाते हैं, यहां तक कि क़ुरबानी को फ़ुज़ूल और बे फ़ाइदा केहने वाले भी फ़ाइदा उठाते हैं 5 दीगर जानवरों को देखा जाए तो उन की नस्ल रोज़ ब रोज़ कम होती जा रही है, लेकिन क़ुरबानी पर लगने वाले जानवरों में कमी नहीं हो रही, इस की बुन्यादी वज्ह येही है कि उन के पालने पर पालने वालों को कोई ख़ास माली फ़ाइदा नहीं होता, जबकि क़ुरबानी के जानवरों के पालने से जहां दूध, दही से फ़ाइदा उठाया जाता है वहीं उन को फ़रोख़्त कर के भी माली फ़ाइदा उठाया जाता है जिस में उन जानवरों की नस्ल के तह़फ़्फ़ुज़ का सामान भी है।

अल्लाह तआ़ला हमें हर साल क़ुरबानी करने और सुन्नते इब्राहीमी को ज़िन्दा करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए, आमीन।

क़ौमे समूद की नाफ़रमानियां

(मुह़म्मद आज़ाद रज़ा मिस्बाही जामेअ़तुल मदीना फ़ैज़ाने सदरुश्शरीआ़, बनारस, हिन्द)

क़ौमे समूद बुत परस्त थी, वोह बुतों की इबादत करती थी उन के अ़क़ाइद और आमाल की इस्लाह़ के लिए अल्लाह तआ़ला ने हज़रते सालेह़ عَلَيْهِ السَّلَام को मबऊ़स

फ़रमाया कि आप उन्हें **अल्लाह** पाक की इबादत का हुक्म फ़रमाएं और बुतों की इबादत से मन्अ़ फ़रमाएं। इरशादे बारी तआ़ला है : ﴿وَ اِلٰى ثَمُوْدَ اَخَاهُمْ صٰلِحًا﴾ **तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान :** और क़ौमे समूद की त़रफ़ उन के हम क़ौम सालेह़ को भेजा।[1]

एक और मक़ाम पर इरशादे बारी है : ﴿قَالَ یٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَیْرُهٗ﴾ **तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान :** सालेह़ ने फ़रमाया : ऐ मेरी क़ौम ! **अल्लाह** की इबादत करो उस के सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं।[2]

1 अल्लाह के साथ कुफ़्र करना : क़ौमे समूद के बुरे अन्जाम का अस्ली सबब **अल्लाह** तआ़ला ने येह बयान फ़रमाया कि उन्हों ने अपने रब के साथ कुफ़्र किया, इरशादे बारी तआ़ला है : ﴿اَلَاۤ اِنَّ ثَمُوْدَا كَفَرُوْا رَبَّهُمْ اَلَا بُعْدًا لِّثَمُوْدَ﴾ **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** सुन लो बेशक आ़द अपने रब से मुन्किर हुवे अरे दूर हों समूद।[3]

2 क़ौमे समूद का ह़ज़रते सालेह़ عَلَیْهِ السَّلَام और आप के अस्ह़ाब को बद शुगून केहना : क़ौमे समूद ने ह़ज़रते सालेह़ عَلَیْهِ السَّلَام से कहा : हम आप को और आप के अस्ह़ाब को बद शुगून ख़याल करते हैं, कुरआने पाक में है : ﴿قَالُوا اطَّیَّرْنَا بِكَ وَ بِمَنْ مَّعَكَ﴾ **तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान :** उन्हों ने कहा : हम ने तुम से और तुम्हारे साथियों से बुरा शुगून लिया।[4]

3 दीन के मुतअ़ल्लिक़ शक में पड़ना : क़ौमे समूद ने ह़ज़रते सालेह़ عَلَیْهِ السَّلَام से कहा : आप हमें जिस दीन की दावत दे रहे हैं उस ने हमें ज़बरदस्त शक में डाल दिया है, कुरआने पाक में है : ﴿وَ اِنَّنَا لَفِیْ شَكٍّ مِّمَّا تَدْعُوْنَنَاۤ اِلَیْهِ مُرِیْبٍ﴾ **तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान :** और बेशक जिस की त़रफ़ तुम हमें बुला रहे हो उस की त़रफ़ से तो हम बड़े धोके में डालने वाले शक में हैं।[5]

4 क़ौम का आप को सह़र ज़दा केहना : क़ौम ने ह़ज़रते सालेह़ عَلَیْهِ السَّلَام को कहा कि आप उन लोगों में से हैं जिन पर जादू किया हुवा है। कुरआने मजीद में है : ﴿قَالُوْۤا اِنَّمَاۤ اَنْتَ مِنَ الْمُسَحَّرِیْنَ﴾ **तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान :** क़ौम ने कहा : तुम उन में से हो जिन पर जादू हुवा है।[6]

5 क़ौमे समूद का आप की इत्तेबाअ़ को गुमराही बताना : क़ौमे समूद ने कहा कि क्या हम अपनी जिन्स में से एक बशर की पैरवी करें, तो फिर हम ज़रूर गुमराही और दीवानगी में होंगे, कुरआने मजीद में है : ﴿فَقَالُوْۤا اَبَشَرًا مِّنَّا وَاحِدًا نَّتَّبِعُهٗۤ اِنَّاۤ اِذًا لَّفِیْ ضَلٰلٍ وَّ سُعُرٍ﴾ **तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान :** तो उन्हों ने कहा : क्या हम अपने में से ही एक आदमी की ताबेदारी करें जब तो हम ज़रूर गुमराही और दीवानगी में हैं।[7]

6 वह़ी का इस्तेह़ज़ा : क़ौम ने कहा कि हम में से सिर्फ़ उन पर वह़ी की गई है, कुरआने मजीद में है : ﴿ءَاُلْقِیَ الذِّكْرُ عَلَیْهِ مِنْۢ بَیْنِنَا﴾ **तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान :** क्या हम में से (सिर्फ़) इस पर वह़ी डाली गई।[8]

7 क़ौम का आप को (نَعُوْذُ بِاللّٰه) झूटा मुतकब्बिर केहना : क़ौमे समूद इतनी बद बख़्त थी कि उस ने ह़ज़रते सालेह़ عَلَیْهِ السَّلَام पर ईमान लाने की बजाए येह कहा कि आप बहुत बड़े झूटे मुतकब्बिर हैं, कुरआन में है : ﴿بَلْ هُوَ كَذَّابٌ اَشِرٌ﴾ **तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान :** बल्कि येह बड़ा झूटा, मुतकब्बिर है।[9]

8 क़ौमे समूद के मुतकब्बिरीन का कमज़ोर ईमान वालों का मज़ाक़ उड़ाना : क़ौमे समूद के मुतकब्बिर सरदारों ने उन कमज़ोर लोगों से कहा जो उन में से ईमान ला चुके थे क्या तुम लोगों को येह यक़ीन है कि ह़ज़रते सालेह़ عَلَیْهِ السَّلَام अपने रब तआ़ला की त़रफ़ से मबऊ़स किए गए हैं, कुरआने मजीद में है : ﴿قَالَ الْمَلَاُ الَّذِیْنَ اسْتَكْبَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ لِلَّذِیْنَ اسْتُضْعِفُوْا لِمَنْ اٰمَنَ مِنْهُمْ اَتَعْلَمُوْنَ اَنَّ صٰلِحًا مُّرْسَلٌ مِّنْ رَّبِّهٖ﴾ **तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान :** इस की क़ौम के मुतकब्बिर सरदार कमज़ोर मुसलमानों से केहने लगे : क्या तुम जानते हो कि सालेह़ अपने रब का रसूल है।[10]

रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने किस किस जानवर का गोश्त तनावुल फ़रमाया

(मेमन सद्दाम ह़ुसैन अ़त्तारी मदनी पांधरो, कच्छ, गुजरात, हिन्द)

इन्सान की सब से बड़ी ज़रूरत ख़ाना है क्यूंकि इस से इन्सान के बदन को तक़्वियत और ह़िफ़ाज़त ह़ासिल होती है। **अल्लाह** तआ़ला ने इन्सान की इस ज़रूरत को पूरा करने के लिए ज़मीन से मुख़्तलिफ़ क़िस्म की सबज़ियां और फल उगाए, और कुछ जानवरों के गोश्त को ह़लाल फ़रमाया। इन तमाम अश्या से इन्सान अपने ख़ाने

की ज़रूरत को पूरा करता है । अल्लाह तआ़ला सूरए नह़्ल की आयत नम्बर पांच में इरशाद फ़रमाता है :

﴿وَالْاَنْعَامَ خَلَقَهَا ۚ لَكُمْ فِيْهَا دِفْءٌ وَّ مَنَافِعُ وَ مِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ۝﴾

तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और उस ने जानवर पैदा किए, उन में तुम्हारे लिए गर्म लिबास और बहुत से फ़ाइदे हैं और इन से तुम (ग़िज़ा भी) खाते हो ।(11)

रसूले पाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने भी मुख़्तलिफ़ अवक़ात में मुख़्तलिफ़ जानवरों और परिन्दों का गोश्त तनावुल फ़रमाया । यहां उन में से चन्द का ज़िक्र किया जाता है ।

अ़ल्लामा अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आज़मी साह़ब رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه तेह़रीर फ़रमाते हैं : आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बकरी दुम्बा भेड़, गोरख़र, ख़रगोश, मुर्ग़, बटेर, मछली का गोश्त तनावुल फ़रमाया है ।(12)

इस ह़वाले से कुछ अह़ादीस मुलाह़ज़ा हों :

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से मरवी है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बकरी के बाज़ू का गोश्त तनावुल फ़रमाया ।(13)

ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه केहते हैं : मैं ख़रगोश पकड़ कर अबू त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के पास लाया, उन्हों ने ज़ब्ह़ किया और इस का गोश्त नबी ए करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में भेजा, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे क़बूल फ़रमाया ।(14)

ह़ज़रते अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं : मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को मुर्ग़ी का गोश्त तनावुल करते देखा है ।(15)

सह़ीह़ मुस्लिम में ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से एक वाक़िआ़ मरवी है फ़रमाते हैं : रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हम को ह़ज़रते अबू उ़बैदा बिन अल जर्राह़ के ज़ेरे कमान कुफ़्फ़ारे क़ुरैश के क़ाफ़िले के ख़िलाफ़ भेजा । जिस में साह़िले समन्दर पर उन्हें एक बहुत बड़ी मछली मिली जिस को वोह एक माह तक खाते रहे और कुछ गोश्त वापस ले लिया और हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में भेजा जिस को आप ने तनावुल फ़रमाया ।(16)

ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से मरवी है : ह़ज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم यमन से सौ ऊंट आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की क़ुरबानी के लिए लाए बादे ज़ब्ह़ आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन में से तनावुल फ़रमाया ।(17)

ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से मरवी है कि मुझे उम्महातुल मोमिनीन भेजा करती थीं, मैं उन के लिए टिड्डियां लाया करता, वोह उन्हें तेल में भुनती थीं, फिर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में पेश करती थीं और आप उन्हें तनावुल फ़रमाते थे ।(18)

ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से मरवी है कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में भूना हुवा चकोर पेश किया गया आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم के साथ उसे तनावुल फ़रमाया ।(19)

---

(1) پ8، الاعراف:73 (8) پ27، القمر:25 (15) ترمذی، 3/325، حدیث:1833

(2) پ8، الاعراف:73 (9) پ27، القمر:25 (16) مسلم، ص824، حدیث:4998

(3) پ12، ھود:68 (10) پ8، الاعراف:75 (17) سبل الہدیٰ والرشاد، 7/188

(4) پ19، النمل 47 (11) پ14، النحل:5 (18) سبل الہدیٰ والرشاد، 7/189

(5) پ12، ھود:62 (12) سیرت مصطفیٰ، ص586 (19) سبل الہدیٰ والرشاد، 7/191۔

(6) پ19، الشعراء:153 (13) مسند امام احمد، 3/339، حدیث:9059

(7) پ27، القمر:24 (14) ترمذی، 3/307، حدیث:1796 ملخصاً

दावते इस्लामी हिन्द के मदरसों के छात्र अब कर सकते है एम.ए. मौलाना शारिक मदनी

हिमांशु एक्सपोज

कोटा/फरहीन खान। दावते इस्लामी हिन्द के मदरसे जामिअतुल मदीना से आलिम की सनद प्राप्त करने वाले छात्र अब मौलना आजाद नेशनल उर्दू विश्वविद्यालय से एम.ए में प्रवेश प्राप्त कर उच्चतर शिक्षा भी प्राप्त कर सकते हैं। दावते इस्लामी हिन्द के मौलाना शारिक मदनी ने बताया कि मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनीवर्सिटी ने दावते इस्लामी हिन्द के मदरसे जामिअतुल मदीना की फज़ीलत की सनद को स्नातक के समकक्ष मानते हुए एम.ए. में प्रवेश के योग्य माना है। प्रारम्भिक स्तर पर जामिअतुल मदीना के सैकड़ों विद्यार्थी उच्चतर शिक्षा से लाभान्वित होंगे। इसके तहत दावते इस्लामी हिन्द के मदरसों में स्थापित प्रवेश विभाग में उच्चतर शिक्षा सेल का संचालन किया जाएगा, जहों आलिम की सनद प्राप्त करने वाले युवाओं को मौलाना आजाद नेशनल उर्दू यूनीवर्सिटी से एम.ए. में प्रवेश के लिए सम्पूर्ण मार्गदर्शन प्रदान किया जाएगा।

शारिक मदनी ने बताया कि हर वर्ष सैंकड़ों मुस्लिम नौजवान दावते इस्लामी हिन्द के मदरसों से फारिग होते हैं उनके लिए हर्ष का विषय है कि कि अब इस माध्यम से समकालीन शिक्षा या मुख्यधारा की उच्चतर शिक्षा भी प्राप्त कर सकेंगे।

देश भर में इस समय दावते इस्लामी हिन्द के सेकड़ों मदरसे स्थापित हैं जिनमें छात्रों को दीनी तालीम के साथ-साथ समानान्तर दुन्यावी शिक्षा भी प्रदान की जाती है।

दावते इस्लामी हिन्द के मदरसों के छात्रों को माध्यमिक स्तर की शिक्षा प्रदान करने के लिए भी जामिअतुल मदीना में अध्ययनरत छात्रों को राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान के माध्यम से 10वीं और 12वीं की परीक्षा दिलवायी जाती है। शारिक मदनी ने युवाओं से दावते इस्लामी हिन्द के मदरसे जामिअतुल मदीना में प्रवेश लेकर दीनी और दुन्यावी दोनों शिक्षा ग्रहण कर देश व समाज की सेवा करने की अपील की है।



इस्लाम और औ़रत

औ़रत और क़ुरबानी

उम्मे मीलाद अ़त्तारिया

दीने इस्लाम के कई अह़काम ऐसे हैं जिन में मर्द व औ़रत दोनों को एक ही त़रह़ मुकल्लफ़ (पाबन्द) किया गया है उन अह़कामे शरइ़या में क़ुरबानी भी शामिल है । जिन शराइ़त के पाए जाने पर क़ुरबानी वाजिब होती है वोह शराइ़त मर्द में पाई जाएं या औ़रत में दोनों के लिए बिला तख़्सीस क़ुरबानी का वुजूब हो जाता है । याद रखिए ! ख़ास दिनों में, मख़्सूस जानवरों को ब निय्यते तक़र्रुब (यानी सवाब की निय्यत से) ज़ब्ह़ करना क़ुरबानी केहलाता है ।[1]

आइए तरग़ीब के लिए क़ुरबानी की फ़ज़ीलत व अहमियत मुलाह़ज़ा कीजिए, फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : दस (10) ज़ुल ह़िज्जा में इब्ने आदम का कोई अ़मल ख़ुदा के नज़दीक ख़ून बहाने (यानी क़ुरबानी करने) से ज़्यादा प्यारा नहीं और वोह जानवर बरोज़े क़ियामत अपने सींगों, बालों और खुरों के साथ आएगा और क़ुरबानी का ख़ून ज़मीन पर गिरने से क़ब्ल (पेहले) **अल्लाह** पाक के यहां क़बूल हो जाता है लेहाज़ा उसे ख़ुश दिली से करो ।[2]

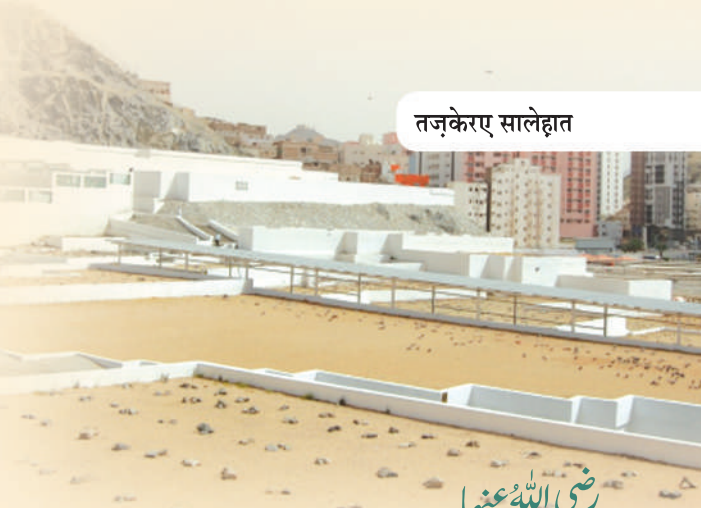
मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : और आमाल तो करने के बाद क़बूल होते हैं और क़ुरबानी करने से पेहले ही, लेहाज़ा क़ुरबानी को बेकार जान कर या तंग दिली से न करो हर जगह अ़क़्ली घोड़े न दौड़ाओ ।[3]

क़ुरबानी किस पर वाजिब है ? क़ुरबानी का निसाब येह है कि साढ़े सात तोला सोना या साढ़े बावन तोला चांदी हो या साढ़े बावन तोला चांदी के बराबर रक़म हो या तिजारत का इतना सामान हो जो साढ़े बावन तोला चांदी की रक़म को पहुंच जाए या घर में ज़रूरत के इलावा इतना सामान रखा है जो साढ़े बावन तोला चांदी की रक़म को पहुंच जाता है या येह सब मिला कर साढ़े बावन तोला चांदी की रक़म को पहुंच जाएं तो इस सूरत में क़ुरबानी वाजिब हो जाएगी ।[4] क़ुरबानी के निसाब के लिए माले नामी यानी बढ़ने वाला माल, माले तिजारत होना शर्त़ नहीं है ।[5] बाज़ अवक़ात घर में ऐसी किताबों का ढेर होता है जो काम में नहीं आतीं और वैसे ही रखी होती हैं, इसी त़रह़ ज़रूरत से ज़्यादा कपड़ों के जोड़े, जूते, घड़ियां और चश्मे रखे होते हैं जो इस्तेमाल में नहीं आते तो अगर उन सब को मिला कर उन की रक़म बनाई जाए और वोह साढ़े बावन तोला चांदी की रक़म के बराबर हो या उस से ज़्यादा हो जाए और क़र्ज़ से भी फ़ारिग़ हो फिर क़ुरबानी का वक़्त भी पाया गया तो क़ुरबानी वाजिब हो जाएगी ।

बहुत सी औ़रतें क़ुरबानी वाजिब होने के बावुजूद क़ुरबानी करने के मुआ़मले में सुस्ती का मुज़ाहरा करती हैं या टाल मटोल से काम लेती हैं और यूं बातें करती हैं कि हम कमाती थोड़ी हैं, हमारा कोई ज़रीआ़ए आमदनी नहीं है, हम कैसे क़ुरबानी करेंगी ? कहां से पैसे लाएंगी ? ऐसी औ़रतों को **अल्लाह** पाक का ख़ौफ़ दिल में रखना चाहिए, जहन्नम के अ़ज़ाब से डरना चाहिए नीज़ इस वाजिब को सआ़दत समझ कर अदा करना चाहिए । जब **अल्लाह** पाक ने आप को ज़ेवरात की सूरत में क़ुरबानी की इस्तेत़ाअ़त दी है तो फिर क़ुरबानी करनी ही होगी वैसे भी हमारा माल मेहंगे कपड़ों और त़रह़ त़रह़ की अश्या की ख़रीदारी में ख़र्च होता रेहता है तो सिर्फ़ **अल्लाह** की राह में ख़र्च करने में ही हमें क्यूं इस त़रह़ के ख़यालात आते हैं ? याद रखिए ! शैत़ान आप को रोकने की ख़ूब कोशिश करेगा लेकिन इस के मक्रो फ़रेब में नहीं आना है اِن شَآءَ الله क़ुरबानी करने से माल में कमी नहीं होगी बल्कि **अल्लाह** पाक आप के माल को मज़ीद बढ़ा देगा । इसी त़रह़ कभी कभी कई अफ़राद पर क़ुरबानी होने के बा वुजूद घर का एक फ़र्द सिर्फ़ बकरा क़ुरबान कर देता है और दीगर ह़ज़रात क़ुरबानी का वाजिब अदा नहीं करते या फिर सिर्फ़ घर के मर्दों की त़रफ़ से क़ुरबानी कर दी जाती है, ऐसा करना भी काफ़ी नहीं है, बल्कि जिस जिस फ़र्द पर क़ुरबानी वाजिब हो वोह सब अपनी अलग अलग क़ुरबानी करेंगे नीज़ ज़रूरी नहीं कि हर शख़्स अलग से पूरा जानवर क़ुरबान करे अगर ज़्यादा इस्तेत़ाअ़त नहीं तो क़ुरबानी के बड़े जानवर में ह़िस्सा डालने से भी क़ुरबानी का वाजिब अदा हो जाएगा ।

---

(1) بہارِ شریعت، 3/327 (2) ترمذی، 3/162، حدیث: 1498 (3) مراٰۃ المناجیح، 2/375 (4) فتاویٰ ہندیہ، 5/292 ملخصاً (5) فتاویٰ رضویہ، 10/294۔



رضی اللہ عنہا

हज़रते सैयदतुना हिन्द बिन्ते उ़त्बा

मौलाना मुह़म्मद बिलाल सईद अ़त्तारी मदनी

एक मरतबा एक ख़ातून ने अपनी ख़ादिमा के हाथ नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में बकरी के दो भुने हुवे बच्चे ब तौ़रे हदिया भेजे, ख़ादिमा आप के ख़ैमे के क़रीब पहुंची सलाम अ़र्ज़ किया और ख़ेमे में दाख़िल होने की इजाज़त त़लब की, इजाज़त मिलने पर ख़ादिमा ने अ़र्ज़ किया : मेरी मालिका ने कुछ हदिया आप की बारगाह में भेजा है और उन्हों ने आप से माज़ेरत चाहते हुवे अ़र्ज़ की है कि इन दिनों हमारी बकरियों ने कम बच्चे जने हैं (वरना आप की शान के लाइक़ हदिया भेजा जाता) हुज़ूर रेह़मते आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन ख़ातून को दुआ़ से नवाज़ा : अल्लाह पाक तुम्हारी मालिका की बकरियों में बरकत फ़रमाए और उन में इज़ाफ़ा फ़रमाए, इस के बाद वोह ख़ादिमा अपनी मालिका के पास वापस आई और बारगाहे रिसालत से मिलने वाली दुआ़ की ख़बर सुनाई, दुआ़इया कलेमात सुन कर वोह ख़ातून निहायत ख़ुश हुईं, इन की ख़ादिमा केहती हैं कि इस के बाद हमारी बकरियों की तादाद में ऐसी कसरत और ज़्यादती हुई जो इस से क़ब्ल हम ने न देखी थी, वोह ख़ातून फ़रमाती थीं कि येह नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दुआ़ ए बरकत का नतीजा है और फ़रमातीं (है) कि अल्लाह पाक का शुक्र है कि उस ने हमें इस्लाम की त़रफ़ हिदायत फ़रमाई, उस ख़ातून ने इस मौक़ेअ़ पर भी फ़रमाया कि इस्लाम लाने से पेहले मैं ने ख़्वाब में देखा कि मैं धूप में खड़ी हूं और एक साया मेरे क़रीब है, लेकिन मैं उस साए को पाने पर क़ादिर नहीं हूं, इसी दौरान रेह़मते आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मेरे क़रीब तशरीफ़ लाए जिन की बरकत से मैं उस साए को पाने में कामयाब हो गई ।[1] बिल आख़िर फ़त्ह़े मक्का के दिन आप ने इस्लाम क़बूल कर लिया । क्या आप को मालूम है येह ख़ातून कौन थीं ? येह ख़ातून सह़ाबी ए रसूल ह़ज़रते हिन्द बिन्ते उ़त्बा क़रशिया हाशमिया थीं जो कि ह़ज़रते अबू सुफ़्यान की ज़ौजा और सैयदना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا की वालिदा हैं । **इस्लाम से मह़ब्बत :** इस्लाम से मह़ब्बत का येह आ़लम था कि आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने घर में पड़े बुत को तोड़ दिया और कहा कि तेरी वज्ह से हम धोके में थे ।[2] **अवसाफ़े ह़मीदा :** आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا फ़साह़तो बलाग़त में माहिर और निहायत समझ दार ख़ातून थीं ।[3] **नबिय्ये करीम से इज़्हारे मह़ब्बत :** ह़ज़रते हिन्द बिन्ते उ़त्बा एक बार केहने लगीं : या रसूलल्लाह ! रूए ज़मीन पर कोई एहले ख़ैमा मेरी निगाह में आप के एहले ख़ैमा से ज़्यादा मबग़ूज़ न थे लेकिन आज मेरी निगाह में रूए ज़मीन पर कोई एहले ख़ैमा आप के एहले ख़ैमा से ज़्यादा मेह़बूब नहीं ।[4] आप ग़ज़वए क़ादिसिया व यरमूक में बड़ी मुजाहिदाना शान से शरीक रहीं और इस्लाम की बड़ी ख़िदमत की ।[5] जंगे यरमूक में जब लड़ाई उ़रूज पर थी तो आप ने ख़ूब ग़ैरते ईमानी का मुज़ाहरा किया और कुफ़्फ़ार से मुक़ाबले पर मुसलमानों का जोश बढ़ाया और यूं कहा कि अल्लाह की राह में लड़ो और अपनी जान को क़ुरबान कर दो ।[6] इसी त़रह़ जब ख़वातीन आक़ा ए करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से बैअ़त कर रही थीं तो आप ने भी उन में शामिल हो कर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से बैअ़त की ।[7] **विसाले पुर मलाल :** ख़िलाफ़ते उ़मर में जिस दिन अमीरुल मोमिनीन सैयदना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ के वालिदे माजिद ह़ज़रते सैयदना अबू क़ुह़ाफ़ा उ़स्मान ने इन्तेक़ाल फ़रमाया ऐ़न उसी दिन आप की भी वफ़ात हुई । आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا से कई अह़ादीस भी मरवी हैं ।[8]

---

(1) تاریخ ابن عساکر، 70/184 (2) طبقات ابن سعد، 8/188 (3) اسد الغابہ، 7/316 (4) بخاری، 2/567، حدیث: 3825 (5) مراٰۃ المناجیح، 6/174 (6) فتوح الشام، 1/196 ماخوذاً (7) طبقات ابن سعد، 8/189 ماخوذاً (8) مرقاۃ المفاتیح، 8/243، تحت الحدیث: 4466 ماخوذاً۔



ख़्वाजा ओ रज़ा के हिन्द की इस्लामी बहनों के नाम अ़त्तार का पैग़ाम

نَحْمَدُہٗ وَنُصَلِّیْ وَنُسَلِّمُ عَلٰی خَاتَمِ النَّبِیّٖن

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : "जिस ने किसी मैयत को ग़ुस्ल दिया वोह अपने गुनाहों से ऐसा पाक व साफ़ हो जाएगा जैसा उस दिन था जिस दिन उस की मां ने उसे जना था।" (المعجم الاوسط، 6/429، حدیث:9292)

ख़्वाजा ओ रज़ा के हिन्द की मेरी मदनी बेटियों की ख़िदमतों में :

اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ وَرَحْمَۃُ اللّٰہِ وَبَرَکَاتُہٗ

उम्मे शीज़ान (ज़िम्मेदार शोबए कफ़न दफ़्न, हिन्द) का येह पैग़ाम मौसूल हुवा कि ख़्वाजा ओ रज़ा के हिन्द में कोरोना वायरस की वज्ह से इन्तेक़ाल करने वाली औ़रतों को कई इस्लामी बहनें ग़ुस्ल देने में ख़ूब बढ़ चढ़ कर हिस्सा ले रही हैं, यहां तक कि बाज़ इस्लामी बहनें रोज़ाना छे-छे, सात-सात मैयतों को भी नेहला रही हैं। अल्लाहु अक्बर ! अल्लाहु अक्बर ! मेरी मदनी बेटियों की भी कैसी हिम्मत है ! مَاشَآءَ اللّٰہ ! بارک اللّٰہ تعالٰی

अल्लाह पाक आप सब की कोशिशों को क़बूल फ़रमाए और इस्तेक़ामत भी दे, इस काम में दिल भी लगे, वाक़ेई येह बड़े सवाब का काम है। इस वक़्त प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दुख्यारी उम्मत काफ़ी आज़माइश में है, कोरोना वायरस ने कोहराम मचा रखा है, **अल्लाह** करीम आप सब की और मेरी कोरोना वाइरस से हिफ़ाज़त करे बल्कि **अल्लाह** पाक सब को कोरोना वायरस से मेहफ़ूज़ रखे और दुन्या से कोरोना वायरस का नामो निशान मिट जाए !

मेरी मदनी बेटियां ! हिम्मत रखें और दिल लगा कर येह नेक काम जारी रखें और निय्यत सवाब की रखें अगर आप **अल्लाह** पाक की रिज़ा के लिए येह नेक काम करती रहेंगी तो اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ आप का बेड़ा पार होगा, **अल्लाह** पाक आप सब को ह़ज की सआ़दत नसीब फ़रमाए और बार बार मीठा मीठा मदीना दिखाए। मेरा दिल बहुत ख़ुश हुवा येह जान कर कि مَاشَآءَ اللّٰہ आप इतनी कोशिश कर रही हैं और ऐसे नाज़ुक दौर में इतनी भाग दौड़ कर रही हैं, मैयतों को नेहला रही हैं। वोह इस्लामी बहनें जो किसी वज्ह से इस नेक काम में हिस्सा लेने से मेहरूम हो जाती हैं उन की ख़िदमतों में भी गुज़ारिश है कि हिम्मत करें, हिम्मत करें, हिम्मत करें और दुआ ए अ़त्तार में अपना हिस्सा लें :

ऐ **अल्लाह** पाक ! जो जो मेरी मदनी बेटी मैयतों को ग़ुस्ल दे रही है उस को इस से पेहले मौत न देना जब तक ख़्वाब में ह़ज़रते बीबी फ़ातिमा का जल्वा न देख ले, जब तक ह़ज न कर ले, जब तक मदीना न चूम ले। मेरी सब मदनी बेटियां हिम्मत करें और ख़ूब शोबए कफ़न दफ़्न (हिन्द) की इस्लामी बहनों के साथ मिल कर येह काम करें बल्कि दुन्या में जहां कहीं भी मेरी मदनी बेटियां मेरा येह पैग़ाम सुनें और शोबए कफ़न दफ़्न के साथ मिल

कर येह काम करें या अल्लाह पाक उन सब के हक़ में भी मेरी सारी दुआएं क़बूल फ़रमा।

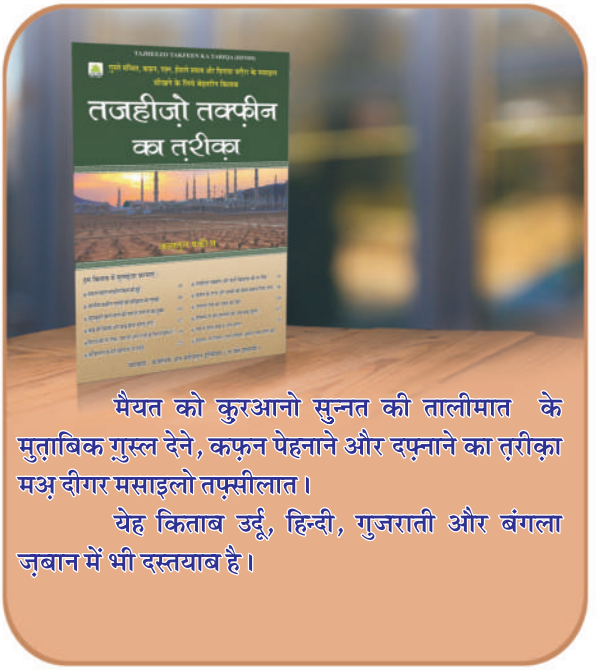
اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

घर के तमाम अफ़राद की ख़िदमतों में अ़र्ज़ है कि नमाज़, रोज़ों की पाबन्दी करते रहें, गुनाहों से पाक सुन्नतों भरी ज़िन्दगी गुज़ारें, दावते इस्लामी के दीनी माहौल से हर दम वाबस्ता रहें, ख़ानदान के तमाम इस्लामी भाई अपने चेहरे पर ठोड़ी के नीचे एक मुठ्ठी दाढ़ी सजाएं कि दाढ़ी मुंडाना या एक मुठ्ठी से घटाना हराम व जहन्नम में ले जाने वाला काम है। مَعَاذَاللّٰہ अब तक जिस ने दाढ़ी मुंडाई या एक मुठ्ठी से घटाई हो उस पर वाजिब है कि फ़ौरन तौबा करे और पक्का अ़हद करे कि न दाढ़ी कटे न एक मुठ्ठी से घटे। मर्दों के लिए ज़ुल्फ़ें रखना सुन्नत है, अल्लाह पाक के प्यारे प्यारे आख़री नबी मक्की मदनी मुहम्मदे अ़रबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने कभी आधे कान मुबारक तक, कभी पूरे कान शरीफ़ तक और कभी मुबारक कंधों तक बाल शरीफ़ बढ़ाए। ज़हे नसीब ! इस सुन्नत पर भी अ़मल की सआ़दत नसीब हो जाए। याद रहे ! मर्द के लिए बालों को इतना बढ़ाना कि कंधों से नीचे पहुंच जाएं हराम व गुनाह है जबकि औ़रत के लिए बालों को काट कर कंधों से ऊपर कर लेना हराम व गुनाह। (मज़ीद तफ़्सीलात के लिए देखिए : फ़तावा रज़विया शरीफ़, जिल्द 21, पेज नम्बर : 600) इस्लामी भाई हर जुमेरात को अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ दावते इस्लामी के सुन्नतों भरे इजतेमाअ़ में शुरूअ़ से आख़िर तक शरीक हों, वहां रात भी गुज़ारें, वहीं सोएं, तहज्जुद की सआ़दत भी हासिल करें, रिक़्क़त अंगेज़ दुआ ए तहज्जुद की भी बरकतें लूटें, सुन्नतें सीखने सिखाने के लिए हर माह कम अज़ कम तीन दिन मदनी क़ाफ़िले में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र इख़्तियार करें।

घर की तमाम इस्लामी बहनें हर बुध को दोपहर के वक़्त होने वाले दावते इस्लामी के अ़लाक़ाई सुन्नतों भरे इज्तेमाअ़ में शुरूअ़ से आख़िर तक शरीक हों, घर के तमाम अफ़राद अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ रोज़ाना अपने आमाल का जाइज़ा ले कर मक्तबतुल मदीना के **"नेक आमाल"** नामी रिसाले में दिए हुवे ख़ाने पुर करें और हर माह पेहली तारीख़ को अपने यहां के शोबए **"इस्लाहे आमाल"** के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाएं اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ तक़्वा का अनमोल ख़ज़ाना हाथ आएगा और इ़श्क़े रसूल के छलकते जाम नसीब होंगे।

हफ़्तावार दीनी रिसाला ज़रूर पढ़ा या सुना करें, अगर पढ़ नहीं सकते तो ऑडियो में सुना भी जा सकता है। दावते इस्लामी के इकलौते **"माहनामा फ़ैज़ाने मदीना"** की अगर बुकिंग न करवाई हो तो 12 माह के लिए करवा लीजिए और उ़म्र भर येह सिलसिला जारी रखिए और पढ़ते भी रहिए, اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ मालूमात का ढेरों ढेर ख़ज़ाना हाथ आएगा। और मज़ीद कम अज़ कम एक फ़र्द को 12 माह के लिए **"माहनामा फ़ैज़ाने मदीना"** की बुकिंग करवाने के लिए तैयार कीजिए और सवाब के हक़दार बनिए। नमाज़ रोज़ों की पाबन्दी करते और करवाते रहिए, मदनी चैनल देखते रहिए।

अपनी अच्छी अच्छी निय्यतें ज़रूर भिजवाइएगा, बे हिसाब मग़फ़िरत की दुआ का मुल्तजी हूं।



मैयत को क़ुरआनो सुन्नत की तालीमात के मुत़ाबिक ग़ुस्ल देने, कफ़न पेहनाने और दफ़्नाने का त़रीक़ा मअ़ दीगर मसाइ़लो तफ़्सीलात।

येह किताब उर्दू, हिन्दी, गुजराती और बंगला ज़बान में भी दस्तयाब है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط اَمَّا بَعْدُ ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब लिखने की एहतियातें

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे एहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

तस्नीफ़ व तालीफ़ के ज़रीए दीन का पैग़ाम लोगों तक पहुंचाना येह एक पुराना त़रीक़ा है, येह जिस क़दर अहम है इसी क़दर मुश्किल भी है। तेह़रीरी काम में कई त़रह़ की एहतियातों की अशद ज़रूरत है इस ह़वाले से चन्द बातें अ़र्ज़ करता हूं :

दीनी किताब, रिसाला या मज़मून लिखने में हमेशा **अल्लाह पाक की रिज़ा** को पेशे नज़र रखना चाहिए, नामो नमूद और शोहरत की तमन्ना न रखी जाए। हुब्बे जाह से बचते हुवे किताब पर अपना नाम लिखना अगर्चे जाइज़ है लेकिन अस्ल मक़्सूद अल्लाह पाक की रिज़ा का ह़ुसूल होना चाहिए। लिखते हुवे येह ख़ौफ़ होना चाहिए कि मैं ने जो कुछ लिखा है कहीं इस के सबब आख़ेरत में फंस न जाऊं। तेह़रीर (लिखने) के मुआ़मले में इख़्लास का मुआ़मला भी निहायत नाज़ुक है, नफ़्सो शैत़ान इन्सान को मुख़्तलिफ़ त़रीक़ों से रियाकारी और अपनी वाह वाह के शौक़ में मुब्तेला करने की कोशिश में लगे रेहते हैं। ❁ याद रखिए ! आयात और अह़ादीसे मुबारका की अपनी मर्ज़ी से तफ़्सीर व शर्ह़ करना ह़राम है, सिर्फ़ मुफ़स्सिरीन व शारेह़ीन की राए नक़्ल की जाए। यूंही शरई मसाइल लिखने में भी निहायत एहतियात़ की ज़रूरत है कि कहीं कोई गुनाहे जारिया की सूरत न बन जाए। ❁ बाज़ मुसन्निफ़ीन की तेह़रीरों में शरई अग़्लात़ (ग़लत़ियां) पाई जाती हैं, कमोबेश 20 साल पेहले इन्ही बातों को देखते हुवे ग़ालिबन सिने 2000 ईसवी में हम ने **मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल** बनाई थी ताकि मुसन्निफ़ीन अपनी कुतुब की शरई तफ़्तीश करवा सकें। ❁ अपनी तेह़रीर में ग़ैर मोह़तात़ अल्फ़ाज़ का इन्तेख़ाब, दिली जज़्बात की ताईद न होने के बा वुजूद आ़जिज़ी पर मुश्तमिल फ़िक़रात लिखना और झूटी मुबालग़ा आराई से काम लेना आख़ेरत में गिरफ़्त का सबब बन सकता है। हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى अल्फ़ाज़ के इस्तेमाल में बहुत मोह़तात़ होते थे, इह़याउल उ़लूम की तीसरी जिल्द में है : ह़ज़रते सैयदना मैमून बिन अबू शबीब رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं बैठा ख़त़ लिख रहा था कि एक ह़र्फ़ पर आ कर रुक गया कि अगर येह लफ़्ज़ लिख देता हूं तो ख़त़ **ख़ूब सूरत** हो जाएगा लेकिन **झूट** से दामन नहीं बचा सकूंगा। फिर मैं ने वोह लफ़्ज़ छोड़ने का अ़ज़्म कर लिया कि भले मेरा ख़त़ ख़ूब सूरत न हो मगर **मैं येह लफ़्ज़ नहीं लिखूंगा**। (इह़याउल उ़लूम, 3/169) येह तो हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى की तेह़रीर में एहतियातें थीं लेकिन आज कल के बाज़ मज़ामीन और आर्टीकल्ज़ में सच और झूट की परवाह नहीं की जाती, ऐसा लिखने से बेहतर है इन्सान क़लम रख दे। ❁ नात शरीफ़, मन्क़बत और नज़्म वग़ैरा लिखने में मज़ीद एहतियात़ की ह़ाजत है क्यूंकि इस में कलाम का वज़्न बराबर रखने, रदीफ़ व क़ाफ़िया निभाने के लिए कई दफ़्आ़ ग़ैर शरई या ग़ैर मोह़तात़ अश्आ़र भी मुरत्तब हो जाते हैं, लेहाज़ा सलामती व आ़फ़ियत इसी में है कि जो मज़बूत़ आ़लिमे दीन, फ़न्ने शाइरी में माहिर और ज़ख़ीरए अल्फ़ाज़ का ह़ामिल न हो वोह ह़म्दो नात वग़ैरा मन्ज़ूम कलाम मुरत्तब करने की कोशिश न करे। इस मैदान में बड़े बड़े शोअ़रा जिन में नात गो शाइर भी शामिल हैं उन्हों ने ठोकरें खाई हैं और ऐसी ऐसी शरई ग़लत़ियां छोड़ कर दुन्या से रुख़्सत हुवे हैं कि اَلْاَمَانُ وَالْحَفِيْظ लिखने वालों ने इन की मिसालें तक लिखी हैं कि फ़ुलां इतना बड़ा शाइर था, इतने इतने कलाम लिखे, नातें भी कहीं मगर येह येह ग़लत़ बात लिख गया। ❁ اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मेरी तमाम तेह़रीरों की शरई तफ़्तीश होती है यहां तक कि मैं एक पेम्फ़लेट भी लिखता हूं तो उस की भी शरई तफ़्तीश करवाता हूं, अश्आ़र लिखूं तो उन की शरई और फ़न्नी दोनों क़िस्म की तफ़्तीश (तेह़क़ीक़ –Research) करवाता हूं।

अल्लाह करीम हमें तेह़रीर में हुब्बे जाह व रियाकारी और शरई व अख़्लाक़ी ग़लत़ियों की आफ़तों से बचाए और सिर्फ़ वोही बात लिखने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए जो उस को राज़ी करने का सबब बने। آمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صلى الله تعالى عليه وسلم

दीने इस्लाम की ख़िदमत में आप भी दावते इस्लामी इन्डिया का साथ दीजिए और अपनी ज़कात, सदक़ाते वाजिबा व नाफ़िला और दीगर मदनी अ़त़ियात (Donation) के ज़रीए माली तआ़वुन कीजिए !

आप के चन्दे को किसी भी जाइज़, दीनी, इस्लाही (Reformatory), फ़लाही (Welfare) ख़ैर ख़्वाही और भलाई के काम में ख़र्च किया जा सकता है